पिछोला झील तंत्र

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	पिछोला झील तंत्र	9–11
2.	पिछोला का नामकरण एवं बेस्ट नेचुरल अट्रेक्शन अवार्ड	12
3.	इतिहास के पृष्ठों से	13
4.	पिछोला – सिंचाई	14–15
5.	पानी, पेड़, पहाड़ व स्वच्छ हवा – उदयपुर की पहचान	16
6.	उदयपुर इंडिया की टॉप टेन डेस्टिनेशंस	17–18
7.	पिछोला एवं इसका भौगोलिक स्वरूप	19
8.	पिछोला झील में स्थित द्वीप	20
	– Jagriti - The Glory of Jag-mandir	21–25
	– जग–निवास	26–28
	– पिछोला – पूर्णतया रिक्त अवस्था के विविध स्वरूप	29
	– मोहन मन्दिर	30
	– अरसी विलास एवं चन्द्रप्रकाश महल	31
	– खास ओदी, आश्रम अष्टभुजा देवी मन्दिर एवं सीतामाता मन्दिर	32
	– कालकामाता मन्दिर	33
	– माता श्री अन्नपूर्णा जी मन्दिर एवं अम्बामाता मन्दिर	34
	– प्रताप पार्क	35
	– जंगल सफारी पार्क	36
	– गोल्डन पार्क	37
	– बैद्यनाथ महादेव मन्दिर	38
	– हरिदास जी की मगरी	39
	– होटल लीला पैलेस (सोनी जी की बाड़ी)	40
	– होटल ट्राइडेन्ट	41
	– होटल ऑबेरॉय उदय विलास	42
9.	पिछोला के ऐतिहासिक घाट	43–44
	– माँझीराज एवं अमराई घाट	45
	– उदयश्याम जी का मन्दिर, पंचदेवरिया घाट एवं मन्दिर, रोवनिया घाट, श्री भीम परमेश्वर महोदव, श्री जाड़ा गणेश मन्दिर	46
	– हनुमान घाट	47–48
	– गणगौर घाट	49–50
	– बागोर की हवेली	51
	– पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र	52
	– जगदीश मन्दिर	53–55
	– बोरसली घाट, रोवणिया घाट, खुर्रा घाट, लाल घाट	56
	– नाव घाट, पीपली घाट (रूप घाट), जनाना घाट, बंसी घाट	57
	– धोबी घाट (ब्रह्मपोल तालाब)	58
	– बड़ी पाल	59
10.	सिटी पैलेस (राजमहल)	60
	– महाराणा उदयसिंह	61
	– मेवाड़ एवं उदयपुर का संक्षिप्त इतिहास	62–65
	– बड़ी पोल, त्रिपोलिया गेट, माणक चौक, हस्तीशाला, गणेश ड्योढ़ी, राय आंगन, धुनीमाता का तीर्थ, अमर महल (बड़ी महल), दिलखुश महल, कृष्णा महल, मोती महल	66
	– बड़ी चित्रशाली, काँच की बुर्ज, शिव निवास, जनाना महल	67
	– भीम विलास, प्रीतम निवास, सूर्य चौपड़, छोटी चित्रशाला, मोर चौक, माणक महल, फतहप्रकाश	68
	– चीनी चित्रशाला, सिटी पैलेस संग्रहालय	69
	– महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन एवं श्री जी अरविन्द सिंह जी मेवाड़	70–71
11.	उदयपुर शहरकोट एवं प्रवेश द्वार	
	– प्रथम पंक्ति सुरक्षा व्यवस्था चिरवा द्वार, देबारी द्वार, मन्दिर श्री राजराजेश्वर महादेव, बावड़ी व छतरियाँ	72
	– केवड़ा की नाल द्वार, दूसरी पंक्ति सुरक्षा व्यवस्था – शहरकोट एवं द्वार एवं शहरकोट का निर्माण	73
	– शहरकोट एवं द्वारों की बनावट, शहरकोट के साथ खाई, शहरकोट का पतन	74
12.	शहरकोट व द्वार – पूर्व व वर्तमान स्थिति तथा रखरखाव	
	– झामरपोल, रामपोल एवं किशनपोल	75
13.	झामरपोल, रामपोल, एकलिंगगढ़, किशनपोल का एक दिवसीय जंगल सफारी इको ट्रिप, उदियापोल, सूरजपोल, देहलीगेट	76
14.	शांति–आनन्दी शहीद स्मारक एवं हाथीपोल	77
15.	चांदपोल, सतापोल, अम्बापोल, ब्रह्मपोल	78
16.	पिछोला झील एवं प्रदूषण	79–82
	– ब्रह्मपोल छोर–होटल लीला पैलेस,	
	– रिंग रोड–होटल ट्राईडेन्ट के पीछे का क्षेत्र,	
	– सीसारमा नदी का छोर,	
	– खास ओदी, दक्षिणी–पूर्वी भाग,	
	– बड़ी पाल–दूध तलाई–ताज लेक पैलेस,	
	– जग मन्दिर–जलदाय विभाग पम्पिंग स्टेशन मुख्य होटल्स की जेटियाँ	
	– चांदपोल पुलिया–अमरकुण्ड एवं दायजीराज पुलिया क्षेत्र	
17.	अमरकुण्ड	83
18.	कुम्हारिया तालाब	84–86
	– कुम्हारिया तालाब – प्रदूषक कारक	87
	– कुम्हारिया तालाब पर विशेषज्ञों के महत्वूपर्ण सुझाव	88
19.	रंग सागर	89–91
	– रंग सागर तालाब – प्रदूषक कारक	92–93
20.	स्वरूप सागर	94–99
	– स्वरूप सागर – झील का प्रदूषित स्वरूप	100–101
21.	पिछोला तंत्र – समीक्षा एवं सुझाव	102–104
22.	दूध तलाई	105–108
	– दीनदयाल उपाध्याय पार्क	109–110
	– करणीमाता मन्दिर	111
	– माणिक्यलाल वर्मा पार्क	112
	– दूध तलाई आधुनिक स्विमिंग पुल एवं नव संवत्सर	113
	– समीक्षा एवं सुझाव	114
	– रामपोल धरोहर दर्शन (रामपोल हेरिटेज ट्रेक)	115–116
	– माछला मगरा–उदयगढ़–एकलिंगगढ़	117
23.	गोवर्द्धन सागर	118
	– पिछोला–गोवर्द्धन सागर लिंक नहर, गोवर्द्धन सागर–गोवर्द्धन विलास इतिहास के पृष्ठों से	119
	– पन्नाधाय जीवन दीर्घा	120–121
	– श्री सुन्दर सिंह भण्डारी स्वर्ण जयन्ती पार्क	122
	– पन्नाधाय पार्क एवं स्मृति वन	123–124
	– गोवर्द्धन सागर के प्रदूषित क्षेत्र	125
	– गोवर्द्धन सागर पूर्ण शुष्क अवस्था में एवं ओवरफ्लो पॉइन्ट	126
	– सुझाव	127
	– श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान मुक्ताकाश समवशरण तीर्थ	128
	– मारवल वाटर पार्क	129
24.	नान्देश्वर तालाब	130–133
25	सीसारमा नदी	134–135

पिछोला झील तंत्र

प्रस्तावना : पिछोला झील : महाराणा लाखा के राज्यकाल में 1362–1418 ई. में एक व्यवसायी बंजारे ने पिछोली गाँव के पास एक छोटे तालाब को बड़ा करके इस झील का निर्माण करवाया। महाराणा उदयसिंह द्वितीय ने बाँध को पक्का व ऊँचा (15.25 मी.) बनाया जिसे बड़ी पाल कहते है। सन् 1795 में यह झील टूट गई जिसे महाराणा भीमसिंह ने पुनः बनवाया। झील में पानी की आवक का स्रोत कोटड़ा व अमरजोक नदियाँ हैं। ये नदियां पश्चिम में अरावली श्रेणियों से बहती हुई सीसारमा गाँव के पास सीसारमा नदी के माध्यम से पिछोला में पहुँचती हैं। पिछोला झील तंत्र में अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब, स्वरूपसागर, दूध तलाई व गोवर्द्धन सागर जैसी छोटी झीलें हैं। ये सभी झीले पिछोला से जुड़ी हुई हैं। फतहसागर भी पिछोला से एक लिंक नहर द्वारा जुड़ा हुआ है। पिछोला झील के किनारे अनेक घाट एवं मन्दिर हैं। घाटों में प्रसिद्ध गणगौर घाट है, जहाँ मेवाड़ी परम्परा के अनुसार तीज–त्यौहार, गणगौर पर्व, गणेश एवं दुर्गामाता की मूर्तियों का विसर्जन होता है। भारतीय नववर्ष समारोह भी इसी घाट पर मनाया जाता है। इस झील के पूर्वी तट पर उदयपुर के राजघराने का भव्य महल स्थित है। झील के अन्दर टापुओं पर जगनिवास, जगमन्दिर, मोहन मन्दिर, अरसी विलास, नटनी का चबूतरा बने हुए हैं। जगनिवास और जग मन्दिर आदि जल महल है जिनकी मध्यकालीन स्थापत्य कला दर्शनीय हैं। महाराणा जगत सिंह (द्वितीय) ने सन् 1748 में ग्रीष्मकालीन निवास के रूप में जगनिवास का निर्माण करवाया था। इसके पश्चात् समय–समय पर इन पर निर्माण और परिवर्तन होते रहे। आज जगनिवास महल विश्व की सुप्रसिद्ध पाँच सितारा होटल लेक पैलेस है। जगमन्दिर सन् 1622 में महाराणा कर्ण सिंह के शासनकाल में बना। यह प्रसिद्ध महल ताजमहल के निर्माता बादशाह शाहजहां के तत्कालीन शहजादा खुर्रम की शरणस्थली के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ। इसमें बारह पत्थरों का महल, सुन्दर पच्चीकारी से निर्मित विशाल गुम्बद, संत बाबा गफूर की मजार तथा प्रवेश द्वार पर बने सफेद पत्थर के हाथी देखने लायक है।

पिछोला झील	
स्थिति	उदयपुर से पश्चिम तरफ
निकटस्थ तहसील/शहर	उदयपुर, गिर्वा
देशान्तर	73°40′00″ पूर्वी देशान्तर
अक्षांश	24°34′00″ उत्तरी अक्षांश
नदी/नाला	बेड़च – सीसारमा
निर्माण समाप्ति वर्ष	1960
बाँध का प्रकार	चिनाई बाँध
शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र	142 वर्ग किलोमीटर
सकल जलग्रहण क्षेत्र	168 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक जल आवक	13.97 एमसीएम
सकल जल भराव क्षमता	13.67 एमसीएम
शुद्ध जल भराव क्षमता	9.00 एमसीएम
पूर्ण जलाशय स्तर	594.05 मीटर
अधिकतम् जल स्तर	595.55 मीटर
टैंक बंध स्तर	597.68 मीटर
सील स्तर	25.60 मीटर
पूर्ण टैंक गेज	3.35 मीटर/11 फीट
स्तर – जीटीएस/आर्बिटरी	जीटीएस
अधिकतम् लम्बाई	4.00 किलोमीटर
अधिकतम् चौड़ाई	3.00 किलोमीटर
सतही क्षेत्रफल	696 हेक्टयर
औसत गहराई	4.32 मीटर
अधिकतम् गहराई	8.50 मीटर
टापू	जगनिवास व जगमन्दिर
समुद्रतल से ऊँचाई	594.05 मीटर
अधिशेष जल निकास व्यवस्था :	
– डिजाइन अधिकतम् प्रवाह	564.15 क्यूमेक
– वीयर का प्रकार व लम्बाई	वेस्ट वीयर, 6858 मीटर
– मुख्य बहाव	आयड़ नदी – बेड़च

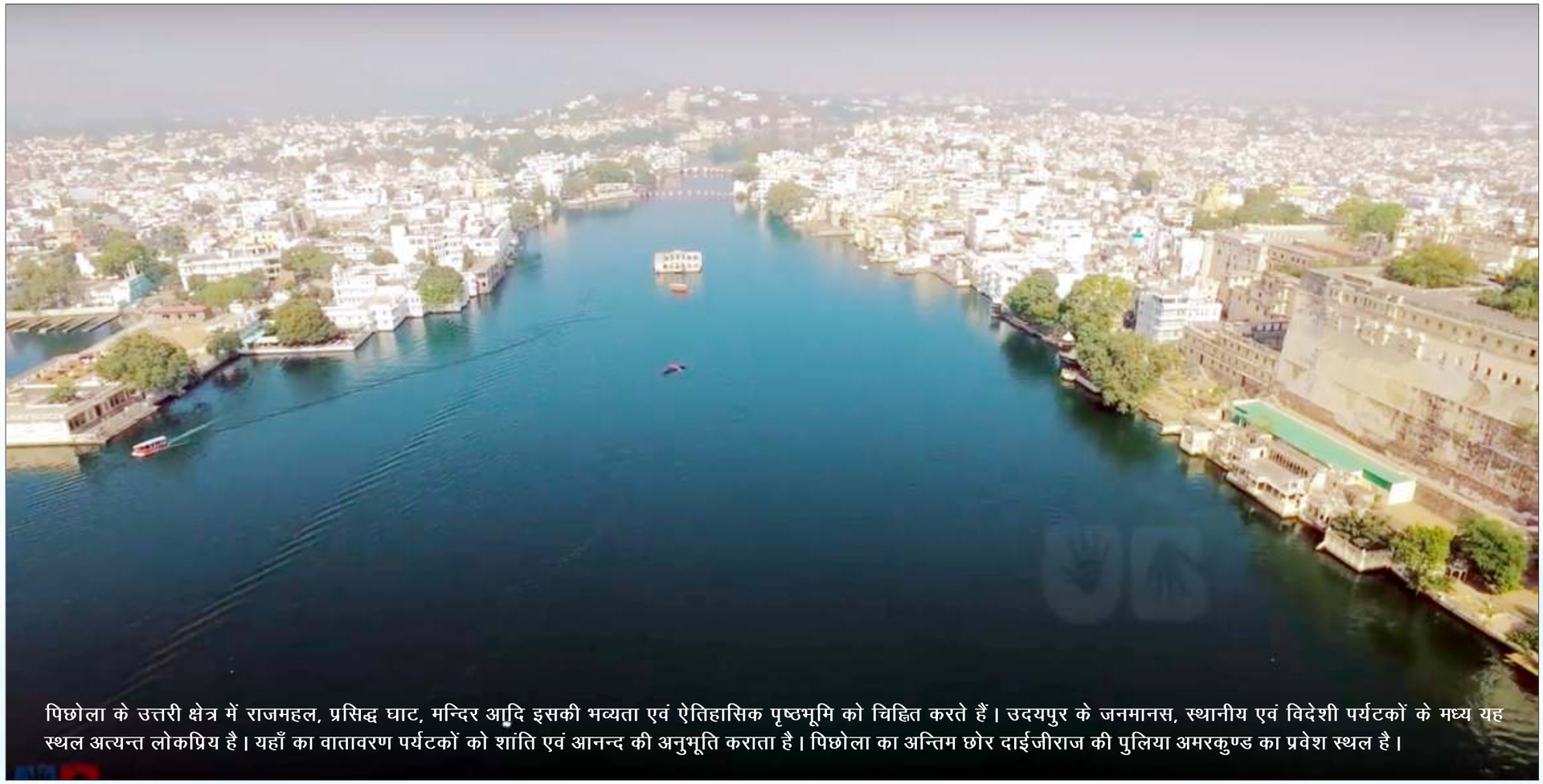

पिछोला के उत्तरी क्षेत्र में राजमहल, प्रसिद्ध घाट, मन्दिर आदि इसकी भव्यता एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को चिह्नित करते हैं। उदयपुर के जनमानस, स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों के मध्य यह स्थल अत्यन्त लोकप्रिय है। यहाँ का वातावरण पर्यटकों को शांति एवं आनन्द की अनुभूति कराता है। पिछोला का अन्तिम छोर दाईजीराज की पुलिया अमरकुण्ड का प्रवेश स्थल है।

पिछोला झील की विशेषताएँ

- पिछोला झील में अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब, स्वरूपसागर दूध तलाई व गोवर्द्धन सागर नामक छोटी झीलें समाहित हैं, जो मुख्य पिछोला से जुड़ी हुई हैं तथा फतहसागर भी इनसे एक लिंक नहर के माध्यम से जुड़ा हुआ है।
- पिछोला झील के पूर्वी एवं पश्चिमी किनारे पर कई ऐतिहासिक घाटों का निर्माण जन–कल्याण, जन–सुविधा, धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों विशेषकर गणगौर घाट, भीम परमेश्वर घाट, पंचदेवरिया घाट, हनुमान घाट एवं उन पर स्थित मंदिरों में हमारे समाज की परम्पराओं के अनुसार तीज–त्यौहार आदि भव्यता से सम्पन्न होते हैं।
- पिछोला झील पर्यटकों का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। यह झील एक तरफ भव्य राजमहल, स्नान घाट, मन्दिर एवं मध्य में लेक पैलेस, जगमन्दिर एवं दूसरी तरफ होटल लीला पैलेस, उदयविलास, ट्राईडेन्ट एवं आबादी क्षेत्र के साथ ऊँची पहाड़ियों से घिरी हुई है।
- सायंकाल एवं रात्रि समय में इस झील का दृश्य अत्यन्त मनमोहक एवं भव्य दिखलाई देता है। झील किनारे मंदिरों पर संध्याकाल में होने वाली आरती और उसमें बजने वाली घंटियों की पावन धुन मन को विशेष आनन्द प्रदान करती हैं, जो काशी, हरिद्वार जैसे घाटों का आभास कराते हैं।

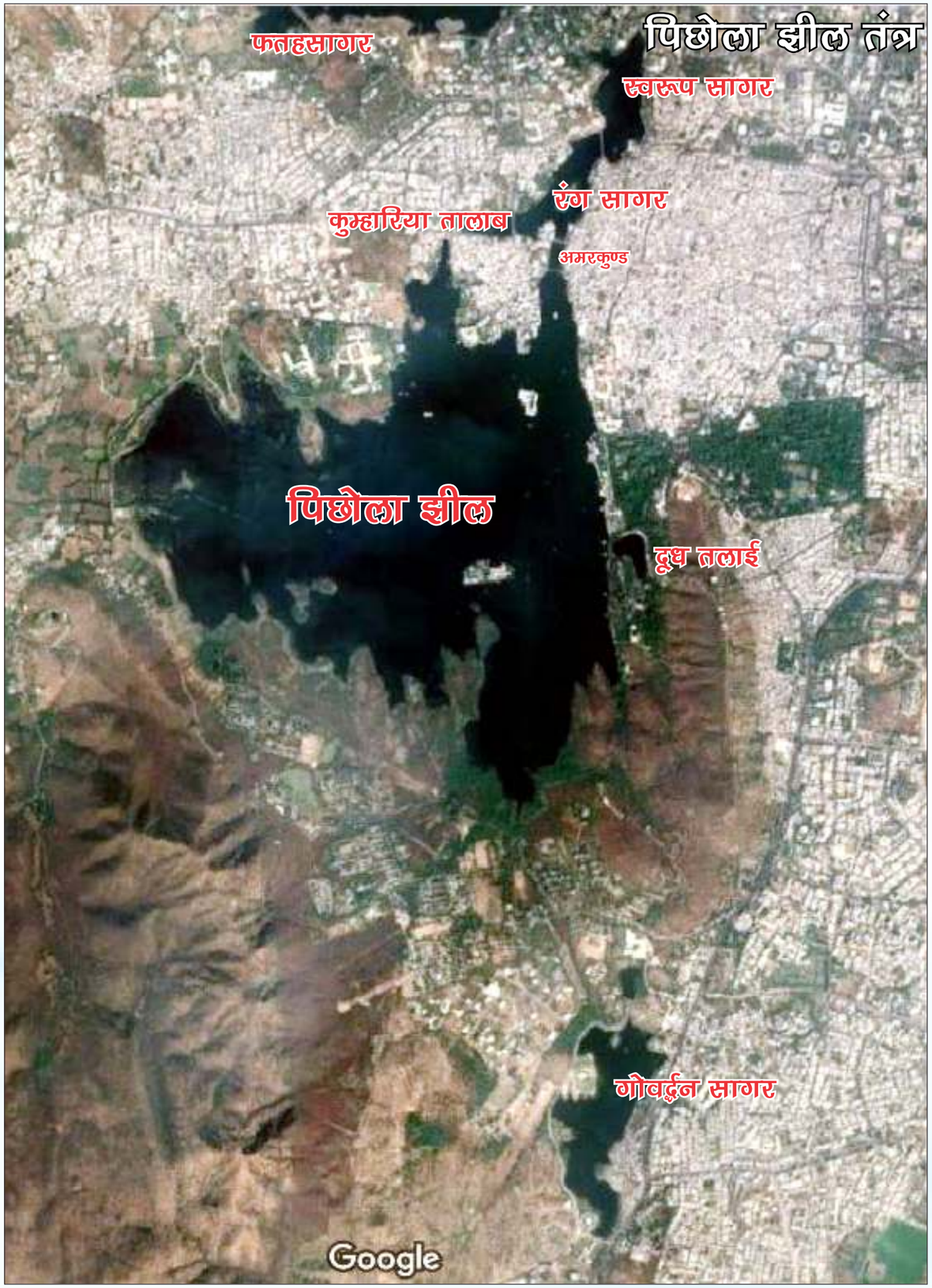
पिछोला झील तंत्र
फतहसागर
स्वरूप सागर
रंग सागर
कुम्हारिया तालाब
अमरकुण्ड
पिछोला झील
दूध तलाई
गोवर्द्धन सागर
Google

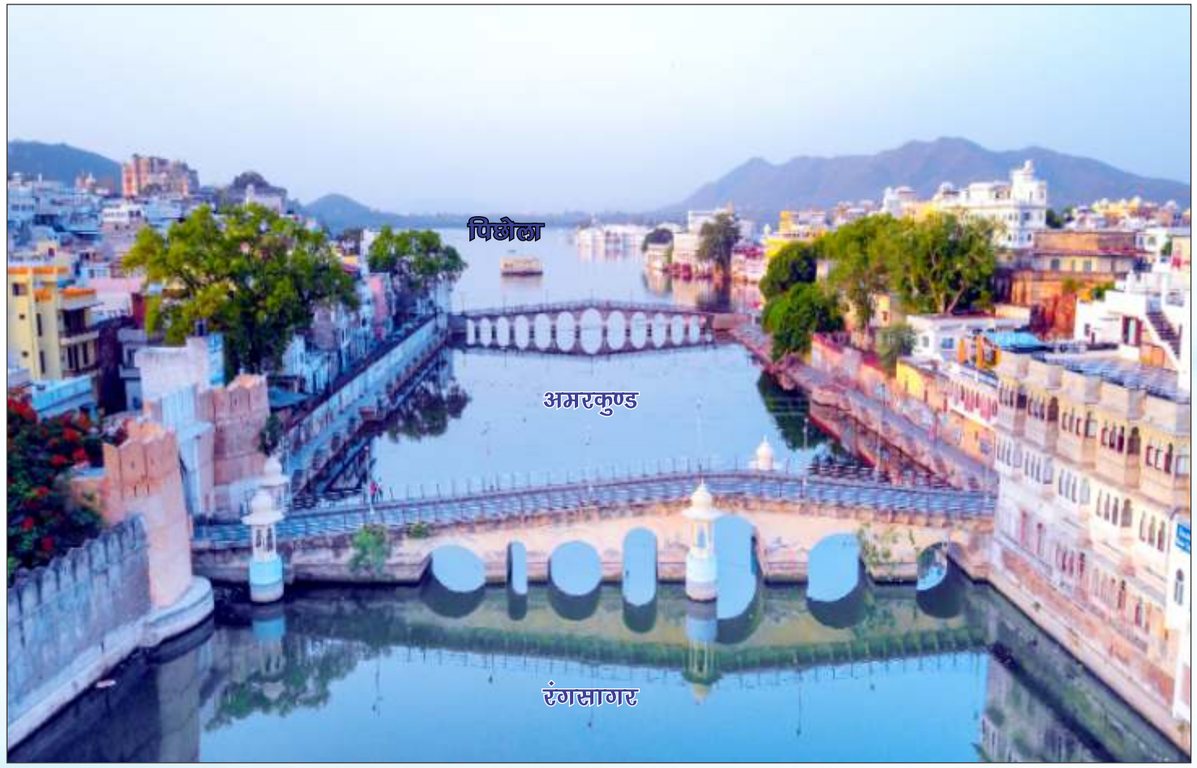
पिछोला
अमरकुण्ड
रंगसागर

पिछोला का नामकरण : इसके निर्माण तथा नामांकरण सम्बन्धी अनेक किंवदंतियाँ हैं :–

प्रथम – पिछोला ग्राम (इस समय उदयपुर का एक मोहल्ला था) की सीमा में होने से इसका नाम पिछोला प्रसिद्ध हुआ।

द्वितीय – जैनों में पिछोलिया गौत्र के नाम से इस तालाब का नाम पिछोला पड़ा था, आज भी जैनों में पिछोलिया एक गौत्र है।

तृतीय – ई.सं. 1387 में छीतर नामक एक धनाढ्य बन्जारे ने इसका निर्माण करवाया था। छीतर तथा बैल पीलियो के सम्मिलित अक्षरों से पिछोला का नामांकरण हुआ।

ऐसा कहा जाता है कि छीतर नामक बनजारे की बालद उदयपुर से निकल रही थी। उसके प्रिय बैल पीलियो पर उसका धन था। यहाँ बैल पीलियो पानी पीने खड्डे में उतरा और उसमें धँस गया। तीन दिन पश्चात् मरा हुआ बैल धन सहित मिला। छीतर ने उस धन का आधा हिस्सा बैल की यादगार में लगाकर एक तालाब बँधवाया। इसीलिए तालाब का नाम पिछोला कहलाया।

पिछोला : बेस्ट नेचुरल अट्रेक्शन अवार्ड : उदयपुर की विश्व प्रसिद्ध पिछोला झील को राष्ट्रीय स्तर पर हॉली डे आईक्यू संस्था की ओर से पिछोला झील को भारत का ''फेवरेट नेचुरल अट्रेक्शन हॉली डे आईक्यू अवार्ड'' पुरस्कार प्रदान किया गया है।

पिछोला झील को यह पुरस्कार इसकी अनेक विशिष्टताओं के कारण मिला है। पिछोला झील शहर की ही नहीं, देश की शान है। यह शहर की सबसे बड़ी झील है, वहीं पुराने आबादी क्षेत्र से घिरी होने के कारण उनके दैनिक जीवन से जुड़ी है। झील के किनारे राजप्रासाद एवं बरसों पुरानी कलात्मक हवेलियाँ पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। झील के अन्दर दो महल हैं, जो अपने आप में विलक्षण हैं और झील की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं। इसके किनारे स्थित घाट इसे छोटी काशी बनाते हैं। करीब 696 हेक्टयर में फैली यह झील हर कोने से खूबसूरत दिखती है। इसके आकर्षक नजारे से मोहित होकर यहाँ कई देशी–विदेशी फिल्मों की शूटिंग हुई हैं।

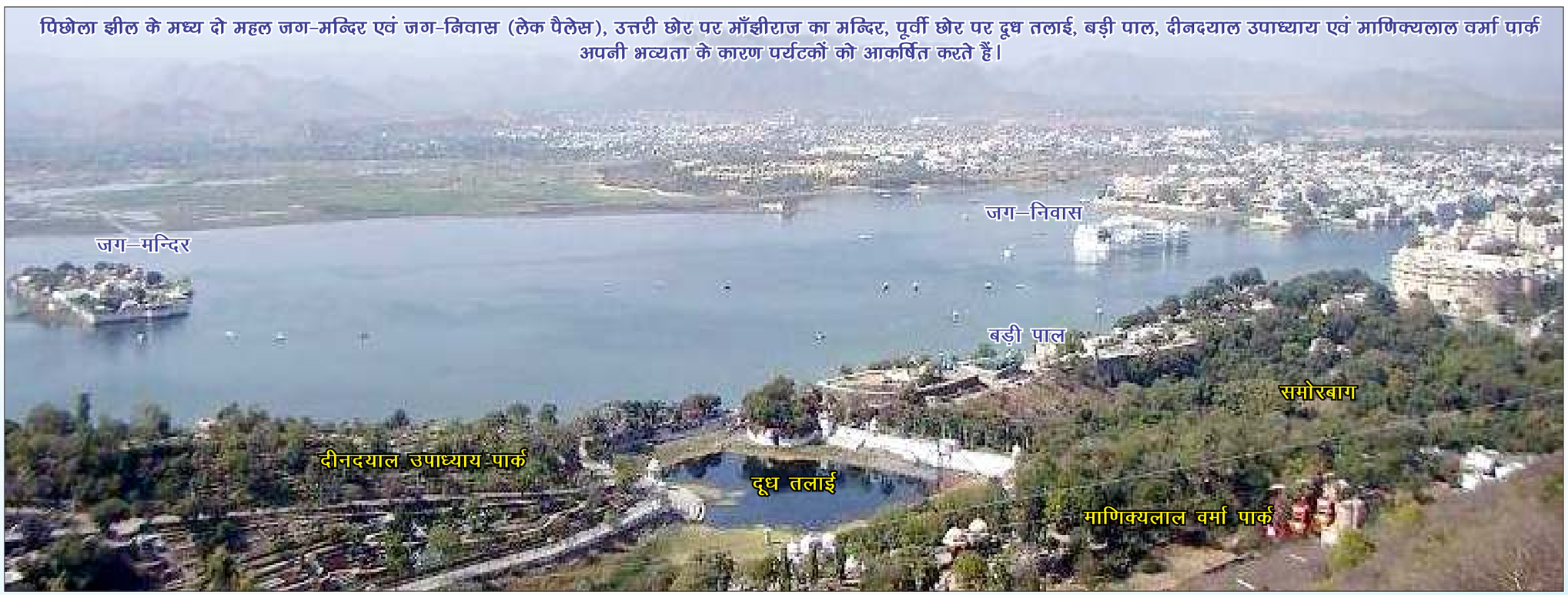

हनुमान घाट से दाईजीराज की पुलिया के दक्षिणी छोर पर पिछोला एवं उत्तरी छोर पर अमरकुण्ड एवं विविध घाट का दृश्य

परस्पर जुड़े हुए अम्बावगढ़ से पिछोला, अमरकुण्ड, रंग सागर एवं स्वरूप सागर

राजमहल से पिछोला झील के दक्षिणी छोर एवं फतहसागर के मध्य स्थानीय निवासियों के आवास, होटल्स, मन्दिर, घाट आदि

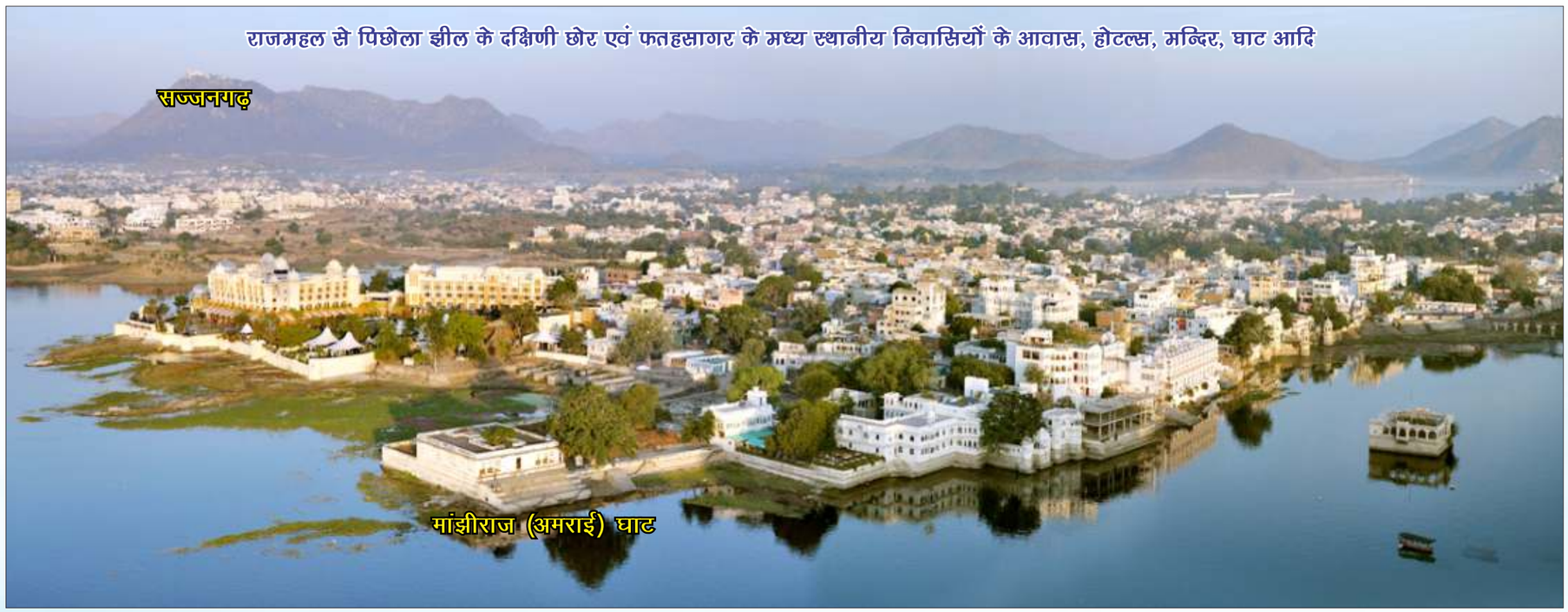

इतिहास के पृष्ठों से ...

पिछोला : पिछोला झील का निर्माण महाराणा लक्षसिंहजी (लाखा) के समय में 510 वर्ष पहले (वि.सं. 1439–75 ई.सं. 1382–1418) में छीतर नामक बन्जारे ने किया था तथा पिछोली ग्राम (उस समय उदयपुर में एक मौहल्ला) की सीमा में होने से पिछोला प्रसिद्ध हुआ। महाराणा सांगा ने 1525 ई.सं. में इसके फूट जाने पर पुनः बँधवाया। उदयपुर में मेवाड़ की राजधानी कायम होने पर महाराणा उदयसिंहजी ने इसके बाँध को जो इस समय बड़ी पाल के नाम से प्रसिद्ध है, पक्का, ऊँचा व सुदृढ़ बनवाकर झील के विस्तार में वृद्धि की और बाद में महाराणा जगतसिंहजी प्रथम, संग्रामसिंहजी द्वितीय, भीमसिंहजी और जवानसिंहजी ने समय–समय पर इस बाँध की दृढ़ता निश्चित की। वि.सं. 1852 ई.सं. 1795 में महाराणा भीमसिंहजी के समय अतिवृष्टि होने से यह बाँध टूट गया जिससे आधा शहर बह गया था। महाराणा जवानसिंहजी के समय में भी बाँध को खतरा हुआ तब एक बड़ी बुर्ज जिसको जवान बुर्ज कहते हैं, पानी की टक्कर को रोकने के लिए बनवाकर बाँध की कमजोरी दूर की गई और पीछे एक और दीवार बनाकर बीच में मिट्टी डालना शुरू किया, इसी समय महाराणा जवानसिंहजी का देहान्त हो गया, फिर वह मिट्टी महाराणा स्वरूपसिंहजी ने डलवा कर इसका खतरा दूर किया। इसी पाल पर महाराणा भीमसिंहजी के प्रधान सोमचन्द गाँधी की छतरी बनी हुई है।

यह बड़ी पाल नामक बाँध 203 मीटर लम्बा और 67 मीटर चौड़ा है, जो आधार की तरफ बढ़ता जाता है। पिछोला तालाब की लम्बाई 4 कि.मी., चौड़ाई 2.4 कि.मी. और गहराई 8.20 मीटर है। इसमें 418 मिलियन क्यूबिक फीट जल और 56 मील मुरब्बे की आय है। मौजूदा इस तालाब के विस्तार में दूध तलाई, अमर कुंड, रंगसागर, कुमारथा (कुम्हारिया तालाब) और स्वरूप सागर सम्मिलित हैं। पिछोला की असली हद सिताब पोल तक थी, इसके आगे अमरचंद बड़वा का बनवाया हुआ अमरकुंड था जिसके चारों तरफ पक्के घाट व उनमें फव्वारें लगे हुए थे। पूर्व और पश्चिम के घाट तो इस समय भी मौजूद हैं और दक्षिण व उत्तर की तरफ के घाट को तुड़वाकर महाराणा सज्जनसिंहजी ने पिछोला में शामिल कर दिया।

इसकी उत्तरी पाल पर बह्मपुरी और उदयपुर शहर का दर्मियानी पुल चांदपोल बाहर बना हुआ है। इसके नीचे होकर पिछोला का जल 335 वर्ष पहले का महाराज कुमार जयसिंहजी के बनवाये रंगसागर को जाता है। अम्बावगढ़ के नीचे अमर ओटे तक का हिस्सा रंग सागर है। अम्बापोल से पश्चिमी हिस्सा जिसे कुमारथा कहते है। वह भी इसी रंगसागर में शामिल है। इसके बाँध अमर ओटे से उत्तर में स्वरूप सागर है, जिसके अन्दर पानी में कलालो का शिव मंदिर होने से उसको कलाल्या शिवसागर भी कहते हैं। परन्तु महाराणा स्वरूपसिंहजी के समय में इसका पूर्वी बाँध टूट गया, तब वि.सं. 1904 में इसे नया बनवाकर इसका नाम स्वरूप सागर रखा। महाराणा सज्जनसिंह ने इन सबके बीचली पालों (बाँधों) को काटकर पिछोला की हद मौजूदा नाले तक बढ़ाकर पक्का नाला (ओटा) बनवा दिया, अब यह सब पिछोला ही कहलाता है।

इस झील को उदयपुर का प्राण कहना चाहिए। ऐसा विशाल जलाशय जिस पर भव्य छटादार राज–प्रासादों की शोभा, जगह–जगह बने पक्के घाट, शिवालय, सरदारों की हवेलियाँ और कहीं–कहीं बाग–बाड़ियों की बहार, समीपस्थ पर्वतमालाओं की तल से टकराती हुई जल तरंगों के दृश्य, वहां नाना प्रकार की वन–वृक्षावली और जंगली पुष्पों से निरापद वन, जहां सैंकडों शूकर, हिरण, जरख आदि वन्य पशुओं के वृन्दों का विचरना, जल में मगरमच्छ, मछलियां और कछुओं आदि जल–जन्तुओं के किलोल और बतख, हँस, बक, सारस, शुक, सारिका, कमाल आदि भाँति–भाँति के सुन्दर पक्षियों के मनोहारी कलरव के गुंजायमान होने से सब प्रकार से यह स्थल सुहावना बना रहता है।

चातुर्मास में अनेक साधु–संन्यासी ताल तट पर जलबुर्ज दरवाजे के बाहर पहाड़ी के ढ़लान पर पर्ण कुटियां बनाकर सुखपूर्वक वर्षाकाल बिताते हैं। सच पूछा जाए तो यह स्थल प्राचीन तपोवन का एक नमूना और उदयपुर बनारस का सुदर्शन है, परन्तु जो प्राकृतिक छटा उदयपुर में है, वह काशी में कहाँ? यही कारण है कि सैंकड़ों यूरोपियन व अमेरिकन यात्रीगण यहाँ की सैर करने आते हैं और यहाँ के दृश्यों से आनन्दित होकर अपने भ्रमण को सफल मानते हैं।

सिंचाई : दूध तलाई से एक नहर निकाली गयी थी। इससे नगर के आस–पास की बहुत सी भूमि सिंचित की जाती थी एवं बहुत लगान आता था। नहर समोर बाग में घूमती हुई सज्जन निवास बाग, कमल तलाई, कालाजी गोराजी मार्ग, शीतला मार्ग, कैलाश कॉलोनी, पॉवर हाउस के पीछे स्थित शर्मा कॉलोनी, छोटी ब्रह्मपुरी के बाहर से पुलिस थाना सूरजपोल के निकट राजस्थान महिला विद्यालय के आगे यह खटीकवाड़ा, सिंधी धर्मशाला, फतह स्कूल के दक्षिणी भाग से अन्त में चम्पाबाग में प्रवेश करती थी। इन सभी क्षेत्रों में जहाँ से यह नहर गुजरती थी, सिंचाई व पशुओं के लिए जल तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती हुई अन्त में आयड़ (बेड़च) नदी में मिल जाती थी। इसी प्रकार स्वरूप सागर के पूर्वी बाँध से एक और नहर निकाली गई। यह नहर पूर्व में स्थित शहरकोट के साथ–साथ खाई में होकर सलेटिया ग्राउण्ड के पास से खेतों एवं बाड़ियों (वर्तमान में राजस्थान कृषि महाविद्यालय, दुर्गानर्सरी आदि) को सिंचित करते हुए आयड़ नदी में समाहित हो जाती थी। वर्तमान में ये नहरें टूटी–फूटी हुई हैं एवं उदयपुर जनमानस की जल आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन नहरों से सिंचाई के लिए जल आपूर्ति पूर्णतया रोक दी गयी है।

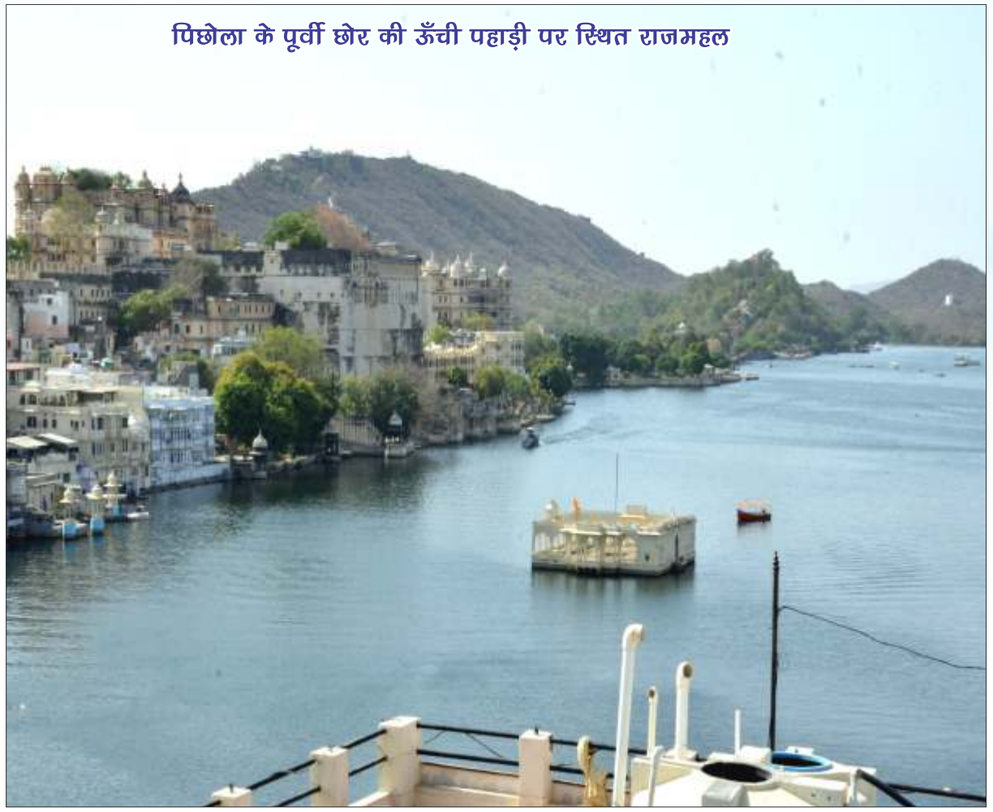

पिछोला के पूर्वी छोर की ऊँची पहाड़ी पर स्थित राजमहल

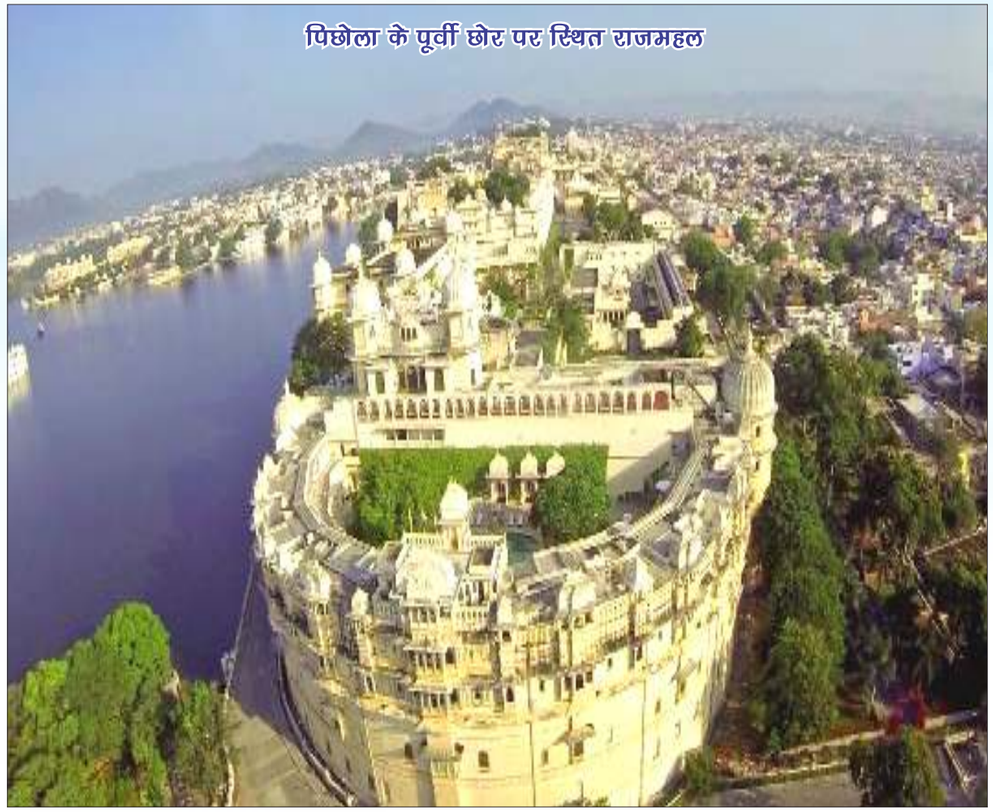

पिछोला के पूर्वी छोर पर स्थित राजमहल

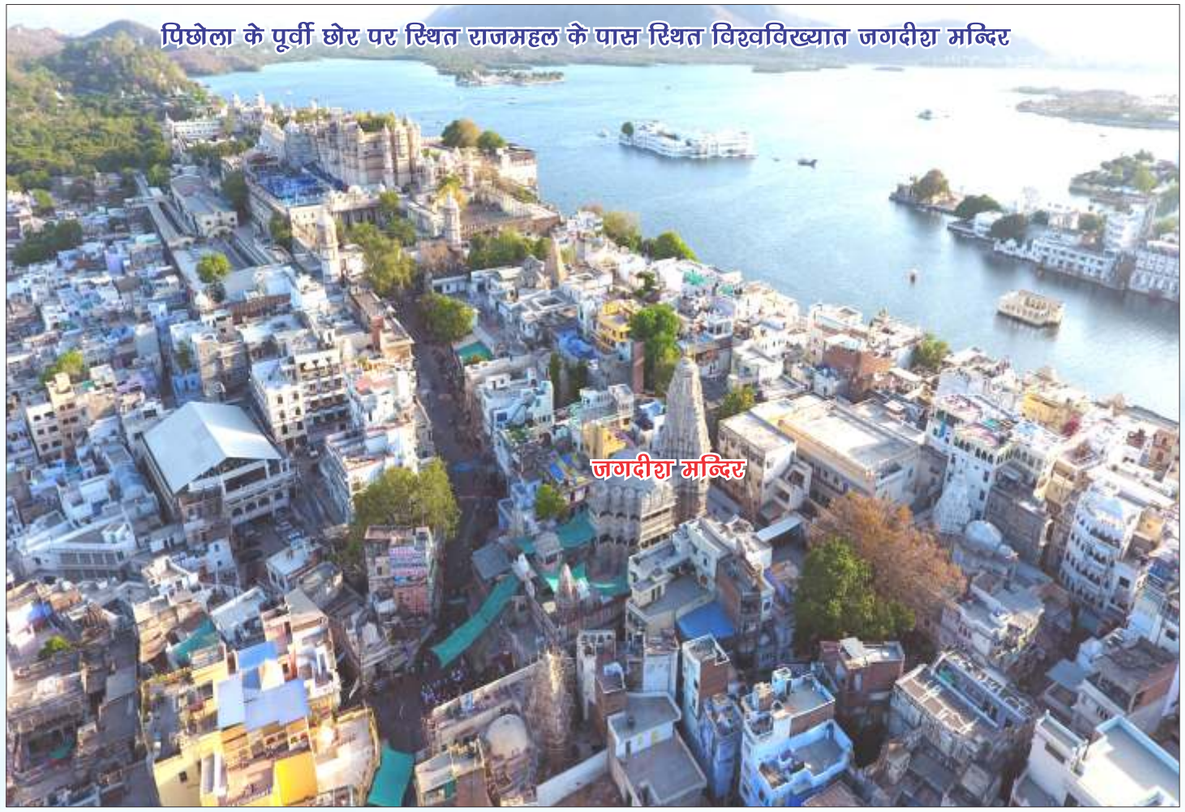

पिछोला के पूर्वी छोर पर स्थित राजमहल के पास स्थित विश्वविख्यात जगदीश मन्दिर

पिछोला के पूर्वी छोर पर स्थित
विश्वविख्यात गणगौर घाट

पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब से घिरा हुआ पुराना शहर, इसके साथ चार पुल – दाईजीराज पुलिया, चाँदपोल पुलिया, अम्बापोल पुलिया एवं ब्रह्मपोल पुलिया द्वारा इस क्षेत्र को शहर के अन्य भागों से जोड़ा गया है। इसके उत्तरी पश्चिमी छोर पर कब्रिस्तान एवं ब्रह्मपोल तालाब स्थित है। इन झीलों के पूर्ण भराव पर यह मनोहारी दृश्य पश्चिम के वेनिस का स्मरण कराता है।

पानी, पेड़, पहाड़ व स्वच्छ हवा – उदयपुर की पहचान : उदयपुर में प्रकृति ने अपने खजाने से अतुलनीय सम्पत्ति दी है। यहां जल, पेड़, पहाड़ और स्वच्छ हवा है एवं इन्हीं से इंसान का वजूद है। शहर की पिछोला, दूधतलाई, माछला मगरा एवं इस पहाड़ी के पार्श्व में बसा हिरण मगरी एवं गोवर्द्धन विलास क्षेत्र नजर आ रहा है। एक तरफ विपुल हरियाली, प्रकृति की समस्त सम्पत्तियाँ और दूसरी तरफ हरियाली विहीन आबाद बस्तियाँ। आवश्यकता है निर्माण के साथ हरियाली के विस्तार पर ध्यान देने और कुदरत के खजाने को संरक्षित रखने की, तभी हमारा पर्यावरण बच पायेगा, स्वच्छ हवा मिल पायेगी, भूमि का जल स्तर ऊँचा रहेगा। दूधतलाई के पास माणिक्यलाल वर्मा उद्यान एवं दीनदयाल उपाध्याय पार्क, बड़ी पाल, समोर बाग, गुलाब बाग आदि में वर्षभर हरे–भरे रहने वाले पेड़ों की बहुलता हैं, ऐसे ही माछला मगरा में वर्षभर हरे–भरे रहने वाले वृक्षों को रोपित करने के प्रयास किये जाने चाहिये।

आज शहर की आबाद बस्तियों में जिस प्रकार से पेड़ों को काटा व छांटा जा रहा है, वह किसी भी दृष्टि में उचित नहीं हैं। हम गर्मियों से बचने के लिए कूलर एवं एयर कन्डीशनर लगा रहे हैं लेकिन पेड़ लगाने से दूरी बना रहे हैं। लाखों रुपये घर बनाने एवं उसे सुसज्जित करने में खर्च कर रहे हैं लेकिन पेड़ लगाने के लिए ट्री–गार्ड एवं पेड़ के लिए नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास या किसी अन्य स्वयंसेवी संस्थान की प्रतीक्षा करते हैं। गर्मियों में अपना दो या चार पहिये वाहन को दिन में खड़ा रखने के लिए पेड़ की छाया की सबको आवश्यकता रहती है, परन्तु पेड़ लगाने से ड़रते हैं कि पतझड़ के मौसम में कचरा होगा या कोई हमारे घर के बाहर गाड़ी खड़ी कर देगा। सभी शहरवासियों से प्रार्थना है कि अपने–अपने घर के बाहर कम से कम दो पेड़ (नीम, अशोक, गुलमोहर, शीशम आदि) अवश्य लगावें। इनकी शुद्ध हवा हमें व हमारे परिवार को ही मिलेगी। साथ ही प्रकृति के साथ रहने से हमारी प्रवृत्ति में भी सुधार होगा। उदयपुर की प्रत्येक आवासीय कॉलोनी को पूर्णतः हरियाली युक्त बनायेंगे, तभी हमारी शान बढ़ेगी। अपना फर्ज निभाइये – शहर को स्वच्छ, सुन्दर एवं हरियाली युक्त बनाइये।

पिछोला एवं दूध तलाई के दक्षिण में उदयपुर का सुरक्षा कवच माछला मगरा एवं उस पर स्थित करणीमाता जी का मन्दिर, एकलिंगगढ़ किला एवं शहरकोट के साथ रामपोल – उदयपुर का स्वच्छ वातावरण एवं पर्यावरणप्रिय स्थल।

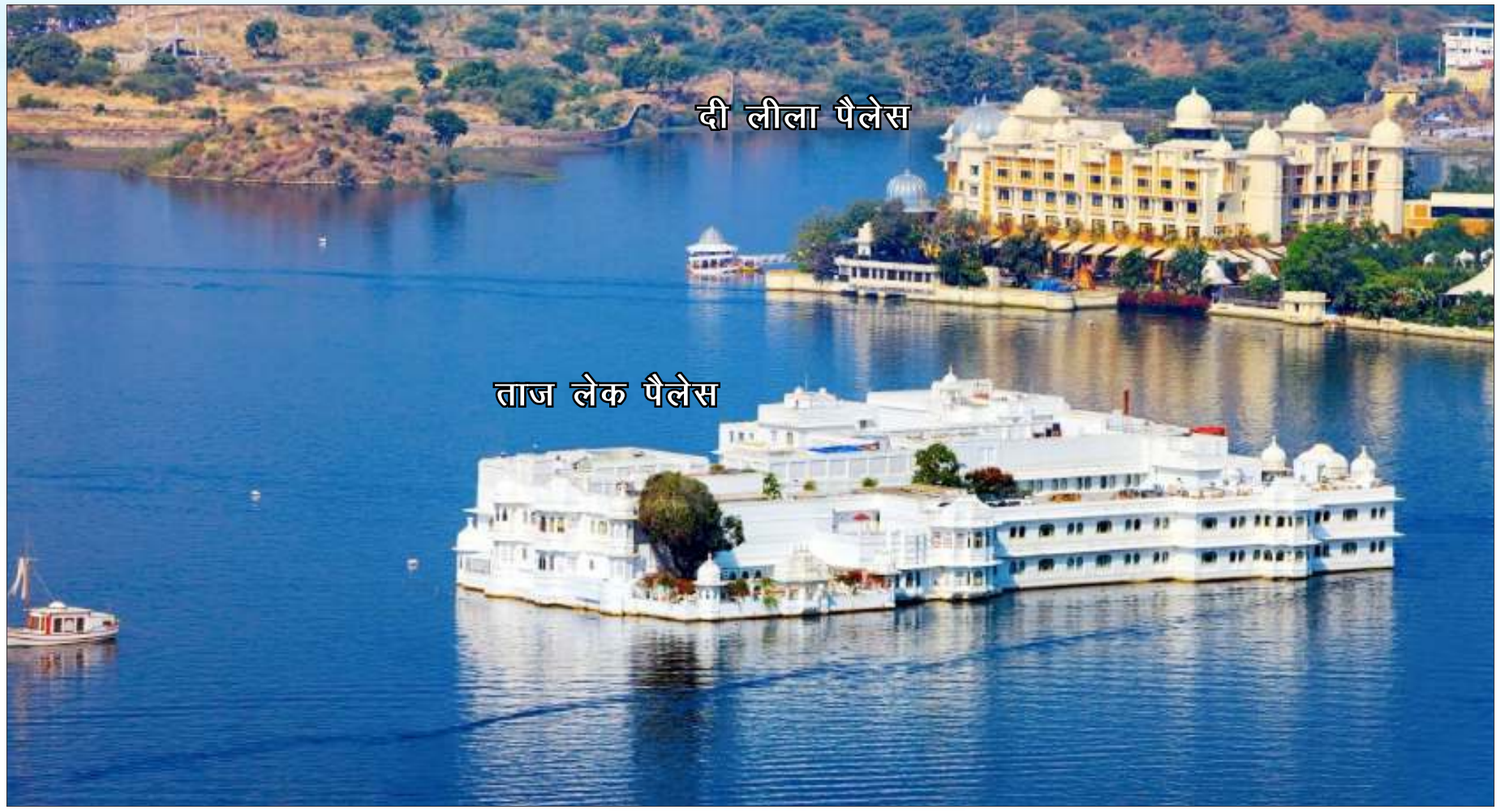

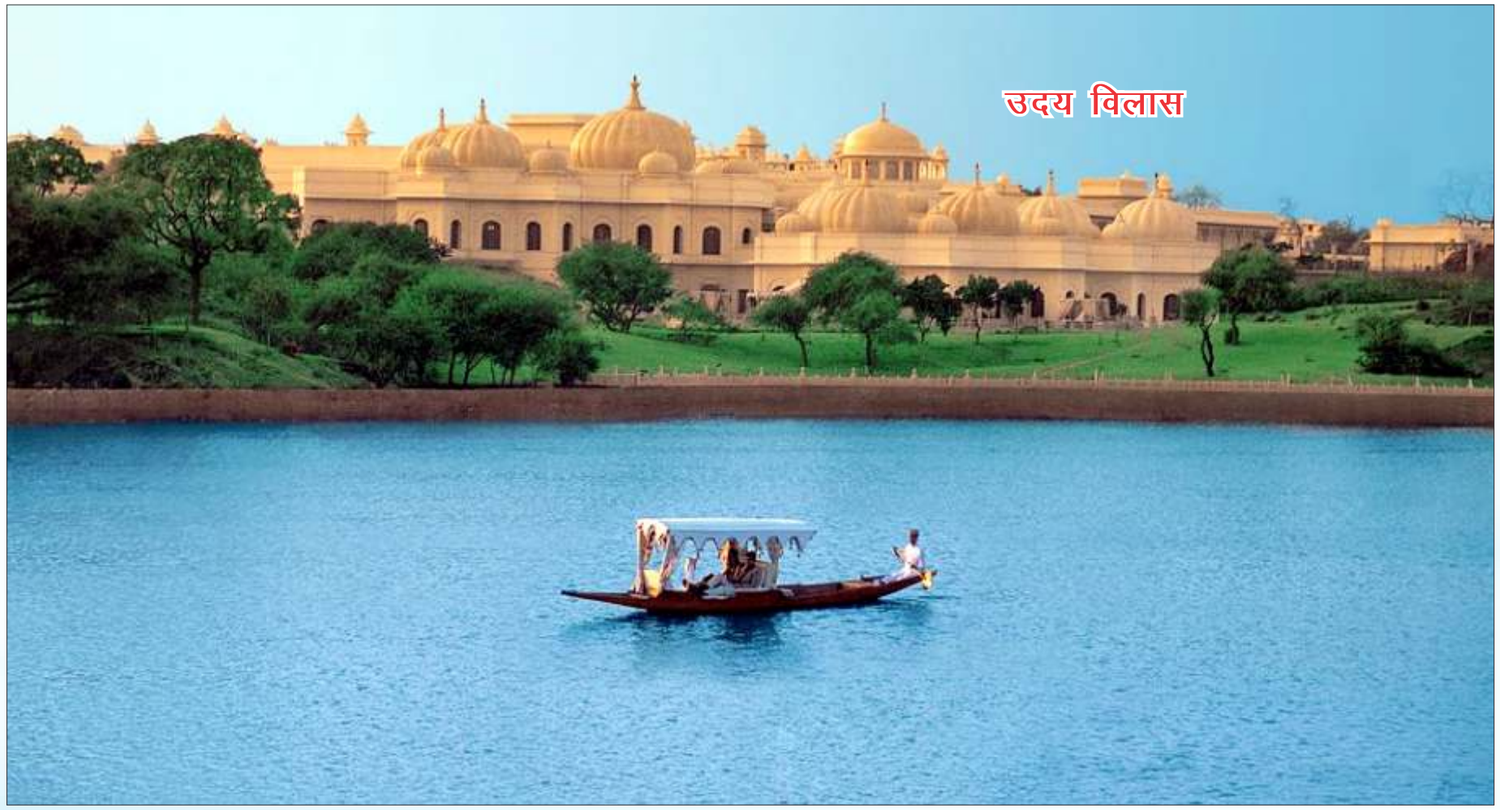

उदयपुर इंडिया की टॉप टेन डेस्टिनेशंस : ट्रिप एडवाइजन की वर्ष 2018 की ट्रेवल से चॉइस रैकिंग में भारत के टॉप 10 डेस्टिनेशंस में उदयपुर भी है। उदयपुर के अलावा राजस्थान के जयपुर व जैसलमेर भी शामिल हैं। इस लिस्ट में उदयपुर छठे स्थान पर है। वहीं नई दिल्ली को सर्वश्रेष्ठ डेस्टिनेशन चुना गया है – (1) नई दिल्ली (2) गोवा (3) जयपुर (4) मनाली (5) मुम्बई (6) उदयपुर (7) आगरा (8) जैसलमेर (9) बेंगलुरु (10) कोच्चि।

पहले भी चुना जा चुका है : कोन्डे नास्ट ट्रेवलर इण्डिया रीडर्स ट्रेवल अवार्ड की ओर से राजस्थान के उदयपुर को भारत के सर्वश्रेष्ठ अवकाश स्थल के रूप में चुना गया है। ट्रेवल एंड लैजर मैग्जीन ने वर्ष 2009 में झीलों की नगरी उदयपुर को विश्व की सबसे खूबसूरत सिटी का दर्जा दिया था।

उदयपुर के होटल्स भी टॉप में : ट्रिप एडवाइजर के ट्रेवलर्स चॉइस में वर्ष 2018 के दुनिया व भारत के सर्वश्रेष्ठ होटलों में उदयपुर के होटल्स को भी चुना गया है। देश के टॉप 25 होटल्स में उदयपुर का दी लीला पैलेस दूसरे स्थान पर रहा है। इस लिस्ट में ताज लेक पैलेस चौथे और ओबेरॉय उदय विलास 7वें स्थान पर एवं दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 25 होटलों में दी लीला पैलेस 13वें स्थान पर रहा।

वर्ष 2019 में भी लेकसिटी विश्व में दसवें, एशिया में छठे स्थान पर : विश्व मानचित्र पर अपने नैसर्गिक सौंदर्य, झीलों, ऐतिहासिक धरोहरों और अरावली उपत्यकाओं के बूते अलग स्थान रखने वाली इस पर्यटन नगरी को न्यूयॉर्क की ट्रेवल मेग्जीन ट्रेवल लेजर के द्वारा दुनियाभर में हुए ऑनलाइन सर्वे के आधार पर समूचे विश्व में दसवाँ और एशिया में छठा स्थान मिला है। इसके साथ ही उदयपुर की होटल "दी लीला पैलेस" को दुनिया की 100 सर्वश्रेष्ठ होटल्स तथा एशिया के श्रेष्ठ रिसोर्ट में पहला स्थान मिला। इतना ही नहीं, विश्व की 25 होटल ब्रांड्स में दी लीला पैलेस दसवें नम्बर पर है।

दुनिया का खूबसूरत शहर उदयपुर–2021 : दुनिया के तीसरे सबसे खूबसूरत शहर का दर्जा पाप्त कर चुके लेकसिटी उदयपुर के ताज में एक के बाद एक नगीने जुड़ते जा रहे हैं। वर्ष 2021 में उदयपुर शहर ने पाँच इन्टरनेशनल रेंकिंग में से तीन में टॉप–5 में स्थान प्राप्त किया है। ये तमगे कहते हैं कि उदयपुर के पंचतत्व में टूरिज्म ही बसा है। झीलें, मगरे, जंगल, शाही खातिरदारी, परदेशियों से आमजन का अपनत्व ही वे तत्व हैं जो यहाँ के पर्यटन में जान फूँकते हैं। मशहूर ट्रेवल मैग्जीन "**ट्रेवल एण्ड लेजर**" ने रीडरशिप सर्वे में दुनिया के 25 बेहतरीन शहरों में उदयपुर शहर को दूसरा स्थान दिया है। यह सर्वे मेजबानों के दोस्ताना व्यवहार, संस्कृति, खान–पान, खास पहचान और खरीददारी के विकल्पों के आधार पर हुआ था। इसके अतिरिक्त वर्ष 2021 में चार और रेंकिंग उदयपुर शहर को मिली है :–

1. **प्लेनेट–डी** की ट्रेवल लिस्ट में "दी 16 मोस्ट रोमांटिक सिटीज ऑन अर्थ" में देश का एकमात्र शहर उदयपुर है। इस लिस्ट में उदयपुर को चौथा स्थान दिया गया है। पेरिस (फ्रांस), वेनिस (इटली), हाग्झू (चीन) क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय शहर घोषित हुए।
2. **एम.एस.एन.** (माइक्रोसॉफ्ट पोर्टल) के सर्वे में दुनिया के 60 खूबसूरत डेस्टिनेशन में देश का एकमात्र शहर उदयपुर है। इस लिस्ट में उदयपुर को 12वाँ स्थान मिला है।
3. **इन्टरमाइल्स एतिहाद एविएशन ग्रुप** की सूची में दुनिया के 10 खूबसूरत शहरों में उदयपुर ने 5वाँ स्थान प्राप्त किया। प्राग (चैक रिपब्लिक), पेरिस (फ्रांस), सेन फ्रांसिस्को (यूएसए), रोम (इटली) को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान मिला।
4. **नेशनल जियोग्राफी एक्सपिडिशन** और **दी वॉल स्ट्रीट जर्नल** ने 21 दिन की यात्रा में दुनिया के आठ देशों में भारत से मात्र उदयपुर को चुना।

जी–20 शेरपाओं की बैठक–2022 : पहली बार भारत की अध्यक्षता एवं उदयपुर की मेजबानी में दिनांक 4 से 7 दिसम्बर, 2022 को हुई जी–20 की शेरपा मीटिंग अति भव्यता के साथ यादगारपूर्ण रही।

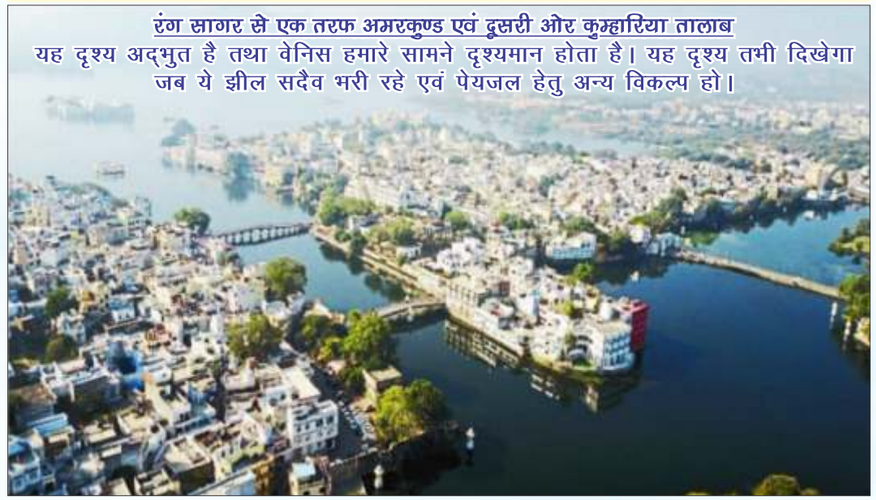

हनुमान घाट से – अनुपम दृश्य, बादलों से घिरी पिछोला झील एवं पूर्वी छोर पर भव्य राजमहल, अनेक प्रसिद्ध घाट, बड़ी पाल एवं ताज लेक पैलेस अपनी सुन्दरता बिखेरते हुए

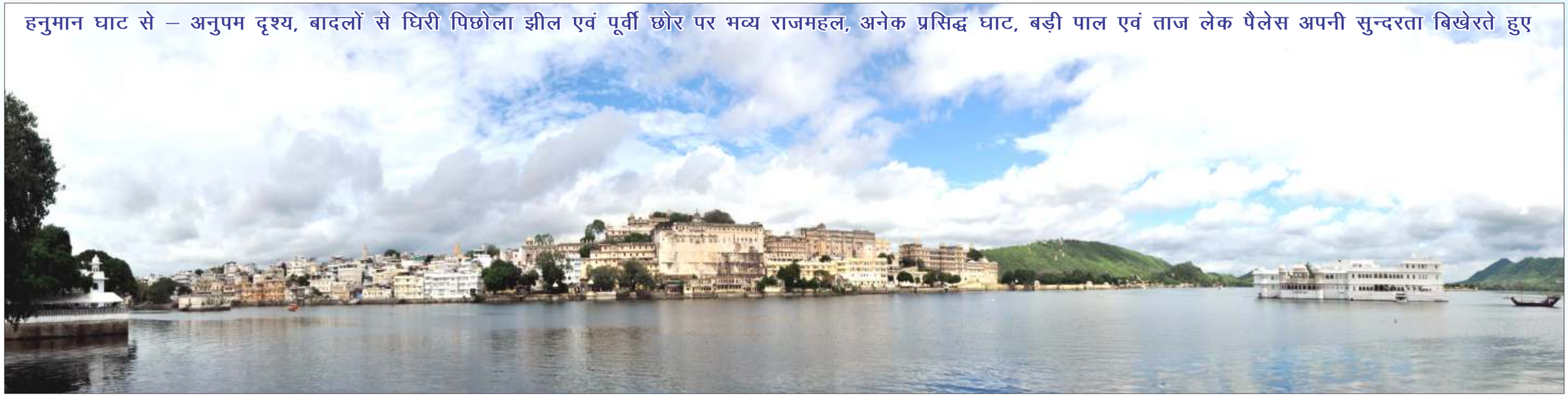

सूर्य देवता से प्रकाशित पिछोला झील के मध्य गणगौर नाव अपनी भव्यता बिखेरते हुए

रात्रिकाल में चन्द्रमा की झिलमिल रोशनी में पिछोला झील का अत्यन्त मनोहारी स्वरूप

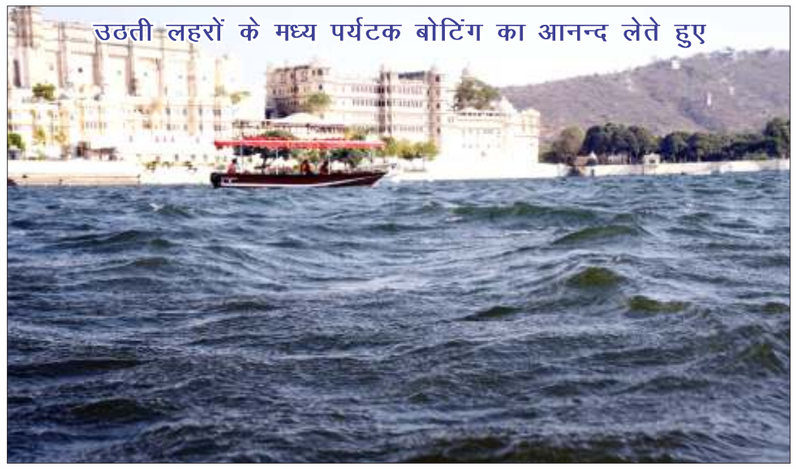

उठती लहरों के मध्य पर्यटक बोटिंग का आनन्द लेते हुए

पिछोला : धवल रोशनी से नहाई पिछोला झील : पूर्णिमा की सुरमयी शाम को चाँद की धवल रोशनी पिछोला झील की शांत लहरों पर पड़ी तो ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो चाँद व लहरों के बीच जुगलबंदी चल रही हो। पिछोला झील का यह दृश्य अति मनोहारी ही नहीं वरन् अनोखा भी होता है। गणगौर एवं अन्य घाट पर्यटकों एवं शहरवासियों के लिए आकर्षण के केन्द्र बन जाते हैं।

अतीत के अभिषेक को आतुर लहरें : झीलों की रानी पिछोला में तेज हवा के संग उछाल भरती लहरें। माँजीराज के मन्दिर व घाट से इन लहरों को देख कर ऐसा प्रतीत होता है, मानों वे सदियों से वीरता एवं गौरवशाली अतीत के साक्षी रहे राजमहल का अभिषेक करना चाहती हो। पूर्व तथा पश्चिम दिशाओं से जगमगाता राजमहल एवं पृष्ठभाग में चमकता हुआ सज्जनगढ़।

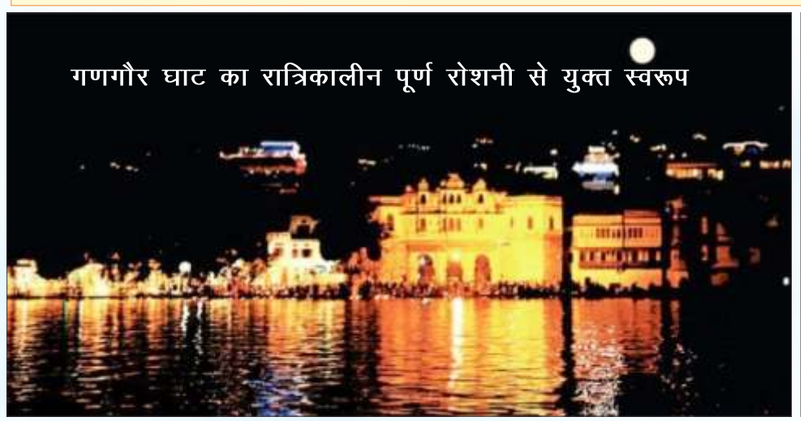

गणगौर घाट का रात्रिकालीन पूर्ण रोशनी से युक्त स्वरूप

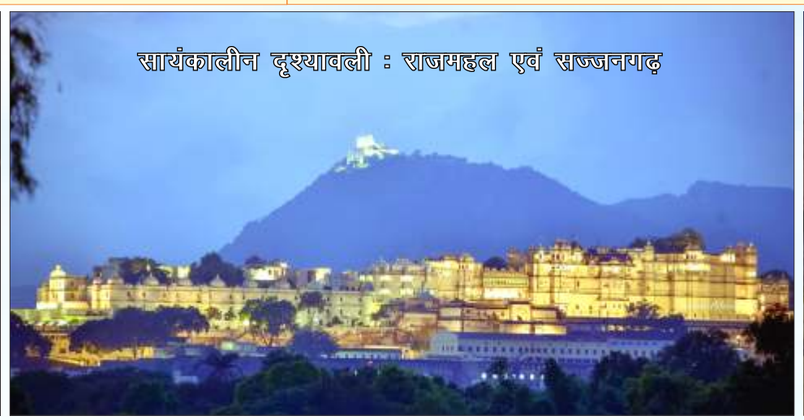

सायंकालीन दृश्यावली : राजमहल एवं सज्जनगढ़

जगमग रोशनी से दैदीप्यमान राजमहल

पिछोला एवं उसका भौगोलिक स्वरूप : पिछोला के भौगोलिक स्वरूप को देखें तो उत्तर–पूर्व में घनी बस्तियाँ, राजमहल, होटल्स, मन्दिर एवं दक्षिण–पश्चिम में ऊँची एवं हरीतिमा युक्त पहाड़ियों से इसका स्वरूप सुन्दरता से भरपूर एवं अद्वितीय हो जाता है। सीसारमा नदी दो छोटी नदियों कोठारी एवं अमरजोक से मिलकर बनती है। यह दृश्य इस उपग्रह मेप पर स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है। सीसारमा गाँव में इस नदी की चौड़ाई काफी कम हो जाती है। पिछोला में स्थित दो टापुओं पर जग–मन्दिर एवं जग–निवास बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त होटल उदय विलास एवं खासओदी के पास वर्तमान में तीन प्राकृतिक टापू और अवस्थित हैं। खासओदी के पास स्थित दो टापुओं को पक्षी विश्राम एवं प्रजनन स्थल के रूप में तथा होटल उदय विलास के पास स्थित टापू को फतहसागर के नेहरू गार्डन की तर्ज पर भव्यता से पिछोला के मध्य एक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। पिछोला रिंग रोड पर होटल ट्राईडेन्ट के पीछे की तरफ एक छोटा भू–भाग (प्राकृतिक टापू) झील के अन्दर तक स्थित है, इसे भी पिछोला में समाहित कर देना चाहिये, अन्यथा इस पर अतिक्रमण की पूरी संभावना बनी रहेगी।

प्राकृतिक टापू : पिछोला के पश्चिमी और दक्षिणी किनारों पर स्थित प्राकृतिक टापुओं को किनारों से पूरी तरह काटते हुए थोड़ा ऊँचा करने से वर्ष पर्यन्त उनके चारों ओर पानी भरा रहे, ताकि टापुओं पर पक्षी बिना किसी डर के निवास कर सके एवं मछलियाँ भी टापुओं के किनारों पर अण्डे दे सके। इससे किसी भी परिस्थिति में इस स्थान पर अतिक्रमण संभव नहीं होगा।

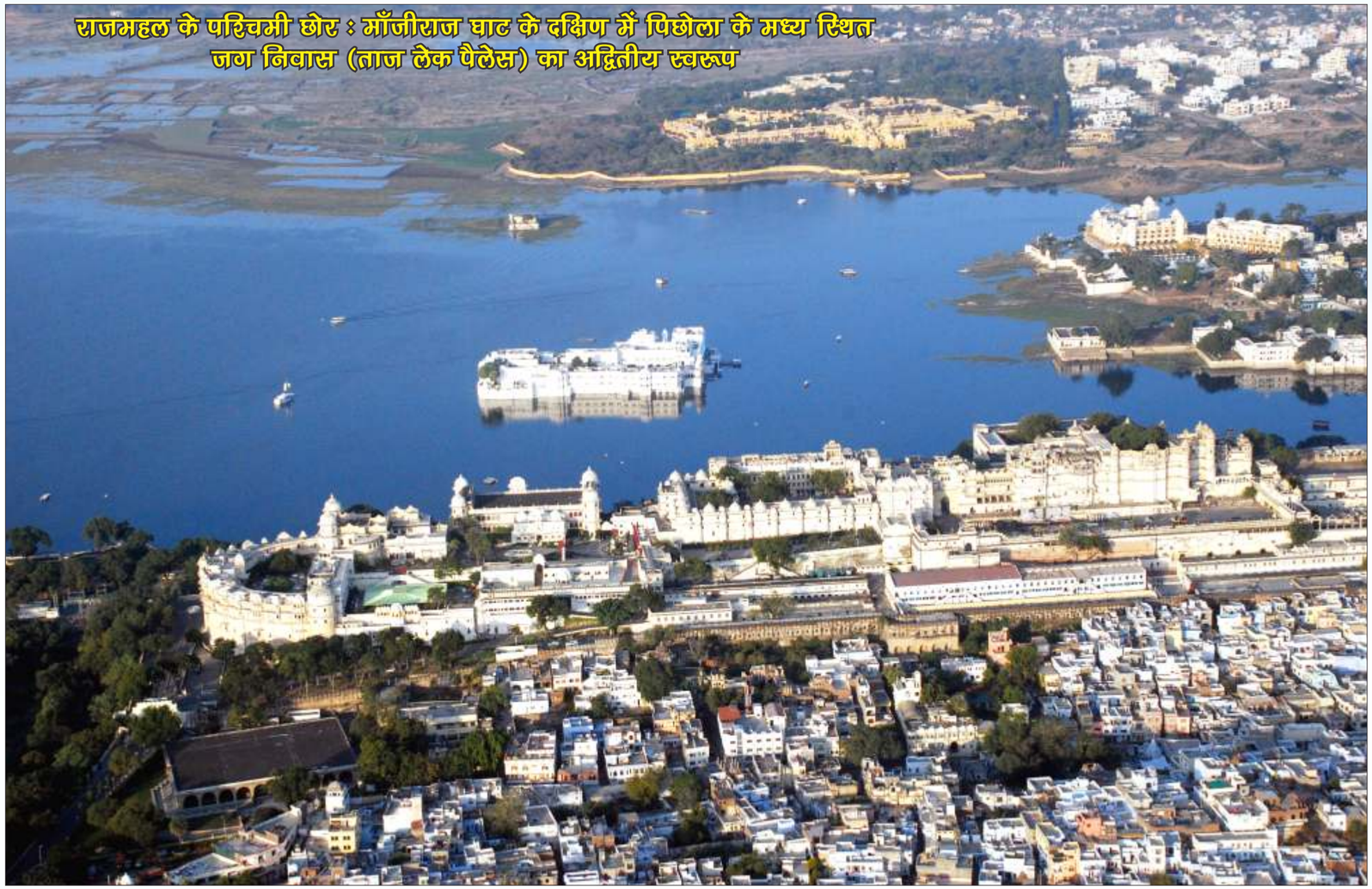
राजमहल के पश्चिमी छोर : माँजीराज घाट के दक्षिण में पिछोला के मध्य स्थित जग निवास (ताज लेक पैलेस) का अद्वितीय स्वरूप

पिछोला झील में स्थित द्वीप : गिर्वा घाटी का निर्माण हल्की कायान्तरित, खड़ी मुड़ी हुई अरावली की चट्टानों से हुआ है। इसका अधिकांश क्षेत्र फाइललाइट/ग्रीन शिस्ट, क्वार्ट्जाइट, ग्रेवेक, सिलिसियस लाइमस्टोन, कोंग्लोमेरेट आदि चट्टानों से बना हुआ हैं। लम्बी अवधि के ऋतु प्रभाव से भिन्न–भिन्न प्रकार के इन पत्थरों से छोटी लहरदार पहाड़ियों का निर्माण हुआ है, जिनमें सामान्यतः समतल क्षेत्र में भिन्न–भिन्न आकार की ऊँची–नीची पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। पिछोला झील के तल मे भी इस प्रकार की भिन्न–भिन्न आकार की ऊँची जगहें (उन्नत भूमि) हैं, जिनसे झील के बाहर निकली हुई कुछ टेकरियाँ (छोटे टापू) बन गई थीं। इनमें से पहाड़ियों को समतल करके (पूर्ण भराव स्तर से कुछ ऊपर) कुछ समतल 'द्वीप' बन गये, जिन्हें समय के साथ विकसित कर सुन्दर इमारतों और उद्यानों से युक्त बना दिया गया।

पिछोला झील में अनेक छोटे एवं बड़े द्वीप अवस्थित हैं। पूर्व महाराणाओं ने बड़े द्वीपों पर 'जग मन्दिर' एवं 'जग निवास' नामक महल विकसित किये गये। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पिछोला के किसी भी द्वीप को विकास हेतु चयनित नहीं किया गया। **होटल उदय विलास एवं होटल ट्राइडेन्ट के पास स्थित बड़े द्वीप को विकसित कर अत्यन्त मनोहारी स्वरूप देना चाहिये, जहाँ पर्यटक एवं शहरवासी भ्रमण के लिए जा सके।** वर्तमान में इस द्वीप पर मछली पकड़ने वाले ठेकेदारों की नावें एवं मछुआरे रहते हैं।

पिछोला झील के उत्तरी एवं पश्चिमी छोर पर स्थित छोटे व बड़े द्वीपों को देशी व विदेशी परिन्दों के आवास के रूप में विकसित करना चाहिये। इन प्राकृतिक टापुओं के अतिरिक्त इस क्षेत्र पर मिट्टी के टापू बनाये जाने चाहिये। यहां पर पक्षियों के आवास, विश्राम, एकान्त, प्रजनन की सभी सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिये।

इस झील के अन्दर दो जलमहल 'जग–मंदिर' और 'जग–निवास' के नाम से प्रसिद्ध हैं। फर्गुसन साहब भी इनकी सुन्दरता का मुकाबला यूरोप में स्थित बोरोमीन टापू लोगो मेगीर से करते हुए लिखते हैं कि जैसे मिलान का डमो, बंकिमघम पैलेस से बढ़कर है, उसी तरह यह भी उनसे बढ़कर है। गजेटियर में लिखा है कि – "of these two islands Fersggusson has written that the only objects in Europe to be compared with them "are the borromean islands in the Lago Maggiore, but I need scarcely say, their Indian Rivals lose nothing by comparison they are as superiors to them as the Dumo at Milan is to Bunkingham Palace, Indeed, I know of nothing that will bear comparison with them anywhere".

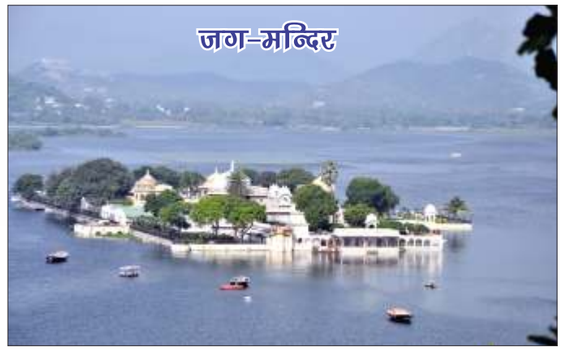
जग–मन्दिर

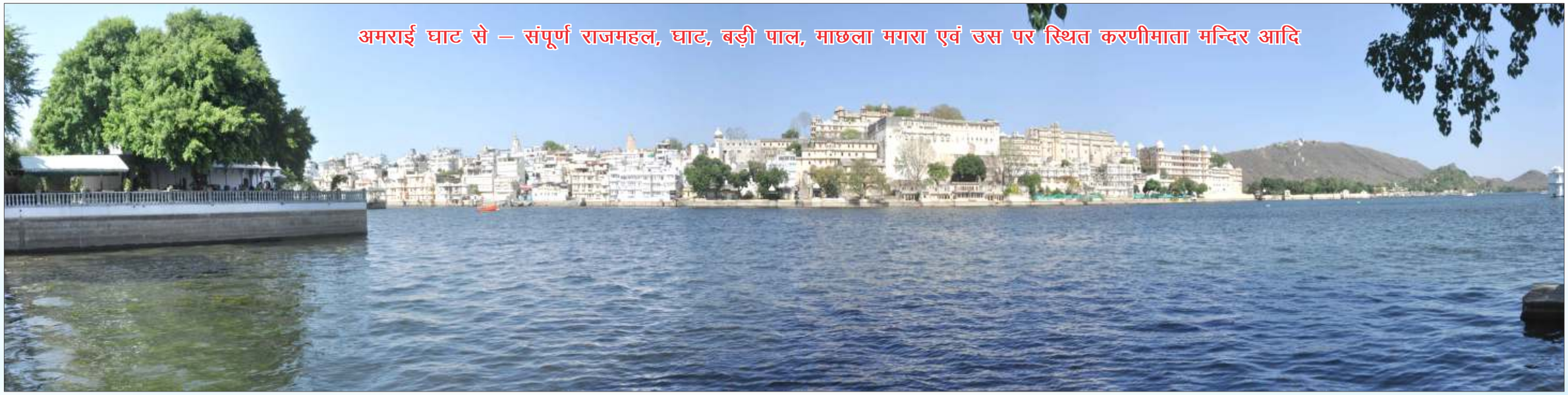
अमराई घाट से – संपूर्ण राजमहल, घाट, बड़ी पाल, माछला मगरा एवं उस पर स्थित करणीमाता मन्दिर आदि

Jagriti - The Glory of Jagmandir

Jagriti means "enlightenment". In this exhibition 'Jagriti' is recreating, in the 21st century, the glory of 'Jagmandir' : a vital chapter of the City Palace complex of Udaipur.

The city of Udaipur has the distinction of being entirely the creation of 'man', with continuous and sensitive thought being given towards all round development.' • Jagmandir' like Udaipur was not built in a day. • From the early 1600s onwards, successive Maharanas of Mewar contributed to the development of this delightful island or summer – palace on the serene waters of Lake Pichhola. • By the 1750s, Jagmandir has come to resemble a 'Swarg Ki Vatika' or the proverbial gardens of heaven. • The exquisite paintings in miniature of the Mewar school of those times stand testimony to the splendour of 'Jagmandir' in the 18th century. • Now, in the 21st century, the challenge to resurrect the glory of 'Jagmandir' has been by the 76th custodian of the House of Mewar, Shri Arvind Singh Mewar. • The need today is to demonstrat on equal measure of dedication and commitment which the Maharanas had, from the 17th century onwards shown in their quest for excellence. • What was built during their respective reigns has lasted for 350 eventful years. • What is being recreated and restored now has to last for as long. • The research, the documentation, the in depth study of Jagmandir is underway.

•The archival documents, maps, paintings and photographs are being catalogued by experts to provide the primary material for research in the future. • The architectural significance is being evaluated. • The spaces of 'Jagmandir' are being understood in terms of their form, meaning and spirit. • The finest miniature paintings depicting 'Jagmandir' are being studied and analysed for the architectural insights they provide. • The long road to recreating the glory of 'Jagmandir' is being charted out, with Jagriti being the first milestone in 2001. • Jagriti thus marks a fruition of efforts that has brought together expertise from different parts of the world to be showcased at 'Jagmandir' for the future of the island. • Jagmandir is an intrinsic part of 'The City within a City project which envisages the self-sufficient and self-reliant development in Udaipur of palace, hotels and resorts museums and libraries, education institutions, sports academies, medical and engineering colleges and centers for excellence in fine arts and performing arts. • 'The City within a City' is and ambitious project, designed to set an example for all the future generations to follow. • In the words of Shri Arvind Singh Mewar, "**It is a vision with a task and a hope for our world. Let's become a part of this vision to preserve a living heritage**". • The heritage of the House of Mewar in the 21st century.

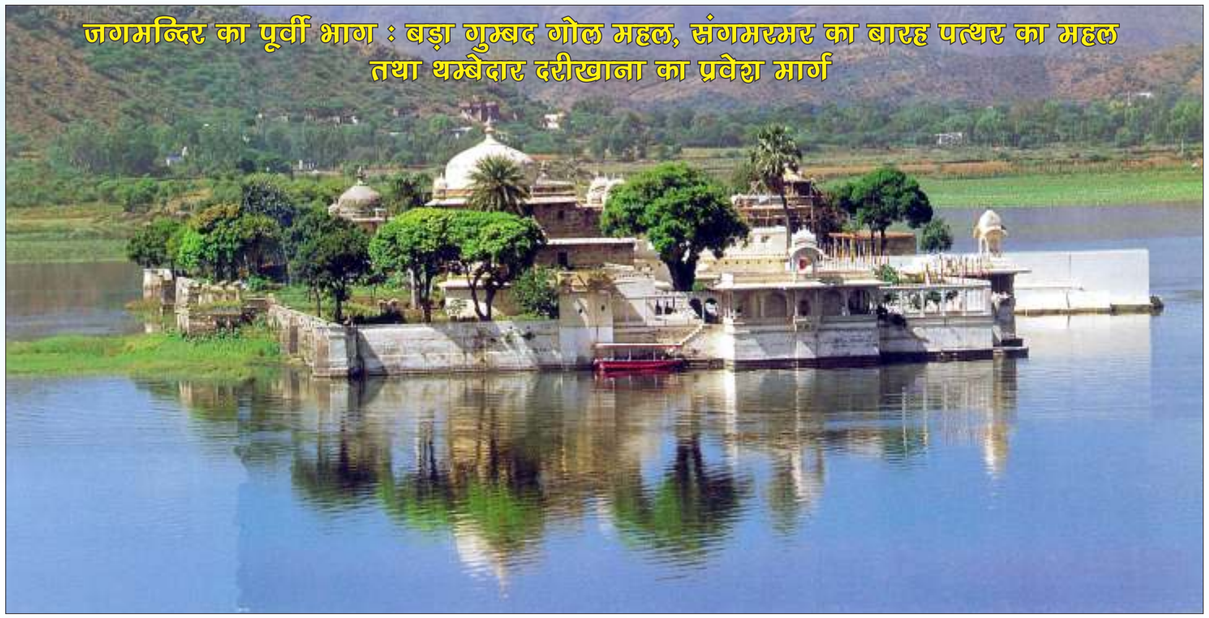
जगमन्दिर का पूर्वी भाग : बड़ा गुम्बद गोल महल, संगमरमर का बारह पत्थर का महल तथा थम्बेदार दरीखाना का प्रवेश मार्ग

गोल महल

जग-मन्दिर हरीतिमा से ओतप्रोत

जग-मन्दिर : पिछोला झील में दो टापू पर बने राजमहल जग–मंदिर और जग–निवास अपूर्व शोभा युक्त हैं। लबालब भरी हुई झील में यह दोनों टापू ऐसे दिखलाई देते हैं मानो किसी ने रजत भवन बनाकर जलराशि में तैरने को छोड़ दिए हैं। दक्षिण छोर के महल जग–मंदिर हैं, जिनमें जो बड़ा गुम्बद है, उसकी नींव महाराणा कर्ण सिंह (1620–1628 ई.सं.) ने वि.सं. 1678 (1622 ई. सं.) में नींव रखीं एवं वृत्ताकार तीन मंजिला गोल महल का निर्माण कराया।

शाहजादा खुर्रम अपने पिता जहांगीर बादशाह से बागी होकर पटना, हांसी, मथुरा रणथम्भौर और मांडू आदि स्थानों में फिरता और लूटमार करता हुआ, बादशाही सेना के पीछे पड़ने से भयभीत हुआ और उदयपुर की शरण में आया, तब महाराणा कर्णसिंहजी ने अपनी वंश परम्परागत उदारता के अनुसार उसको महलों के पास उस स्थान में बड़े आदर और आराम के साथ रखा, जो अब देलवाड़ा की हवेली के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ अरसे बाद महाराणा ने जग–मन्दिर में इस बड़े गुम्बद को दुरुस्त कराकर उसे वहां ठहराया। इस गुम्बद में जो पच्चीकारी का काम बना हुआ है, वह भारतवर्ष में इस कला का प्राचीन नमूना है। इन महलों में शहजादे ने गफूर नाम के फकीर की एक यादगार भी बनवाई जिस पर उनका पूरा विश्वास था। उदयपुर में रहने के समय शाहजादे खुर्रम ने महाराणा कर्णसिंहजी के साथ पगड़ी बदल भाई का नाता जोड़ा और वह खुर्रम की पगड़ी अब विक्टोरिया हॉल के अजायबघर में रखी हुई है।

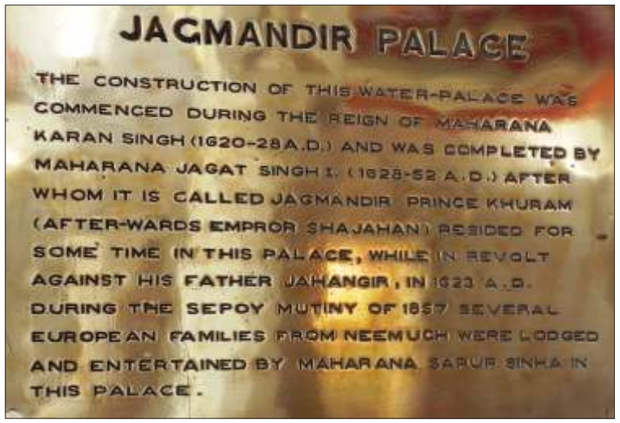

इस जल महल में महाराणा जगतसिंहजी प्रथम ने जनाने महल, बाग, चौक आदि बनवाकर महल का नाम अपने नाम पर जग–मन्दिर रखा। महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने पूर्व की तरफ वाला संगमरमर का बारह पत्थर का महल, दोनों थम्भेदार दरीखाने, पश्चिम में नहर, जनाने महल, कंवरपदों के महल और चारों हौज बनवाकर इसकी शोभा बढ़ा दी। नहर के चारों तरफ के गुम्बदों में चित्रकारी ऐसी उत्तम की गई है कि अभी तक यथावत है। इस महल

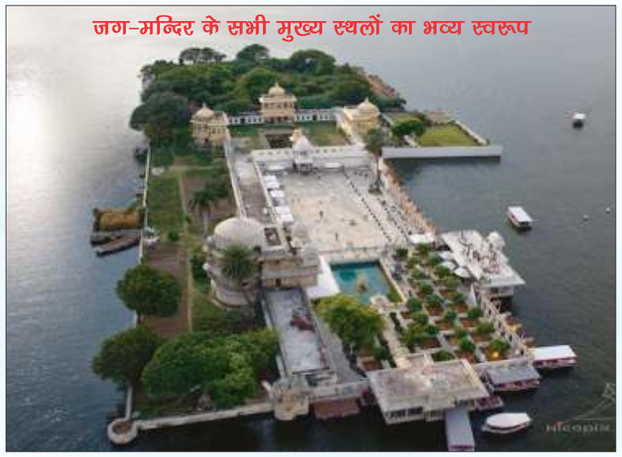
जग-मन्दिर के सभी मुख्य स्थलों का भव्य स्वरूप

महलों के मध्य स्थित
सुन्दर फव्वारें

गार्डन कोर्टयार्ड में मुख्य फव्वारा
स्थल एवं प्रसिद्ध छतरियाँ

के सदर दरवाजे पर सफेद पत्थर के हाथी, पहले पानी के भीतर बने हुए थे, उनको महाराज कुमार भोपालसिंहजी ने पानी के लेवल पर लगा दिए। सर्वप्रथम विकसित किया जाने वाला यह द्वीप सबसे बड़ा तथा झील के दक्षिणी ओर की पाल के निकट था। यह द्वीप महाराणा उदयसिंहजी का प्रिय था और इस प्रकार का एक उल्लेख है कि कुंवर प्रतापसिंहजी ने अपने पिता उदयसिंहजी को उस समय बचा कर निकाला, जब वे पड़ाव डाले हुए थे, और पहाड़ों से बाढ़ का पानी आने से झील का जलस्तर तेजी से बढ़ गया था तथा जगमंदिर में पानी भर गया। अभी के वर्षों में भी ऐसा देखा गया है कि उदयपुर के पश्चिम में अगर अच्छी वर्षा हो तो पिछोला झील कुछ ही समय में भर जाती है। साधु प्रेमगिरिजी, जिनकी धूणी उस स्थल पर थी, जहाँ बाद में राजमहल का निर्माण हुआ, ने महाराणा उदयसिंहजी से इस द्वीप को अपने गुरु–पितामह जगतसूरिजी की स्मृति में विकसित करने का आग्रह किया, जिसे महाराणा ने प्रसन्नता से स्वीकार किया और उनके नाम पर इस द्वीप को जगमंदिर नाम दिया। 'विलास', 'निवास', 'महल' आदि के स्थान पर 'मंदिर' उपसर्ग का चयन किया गया क्योंकि 'मंदिर' नाम के स्थल परिवार के साथ रात्रि विश्राम के लिए उपयोग नहीं किये जाते थे और सीमित उपयोग के लिए ही होते थे। यही कारण था कि महाराणा संग्रामसिंहजी द्वितीय अपने पुत्र कुंवर जगतसिंहजी द्वितीय को परिवार सहित एक उत्सव तथा रात्रि विश्राम के लिए इसके उपयोग की अनुमति नहीं दी थी और इस उद्देश्य के लिए मुख्य महल के सामने (समानान्तर) दूसरे द्वीप पर एक महल बनाने की सलाह दी, जिसका परिणाम 1746 ई. सं. में जगनिवास के निर्माण के रूप में सामने आया।

जगमन्दिर द्वीप महल जो महाराणा उदयसिंहजी के समय से ही लगातार विकसित होता रहा है और अभी भी यह प्रक्रिया जारी है। इसके एकदम पीछे सबसे छोटा द्वीप जो चन्द्रप्रकाश महल के रूप में निर्माण किया गया। इसके दूर पृष्ठभूमि में अरावली पर्वत श्रृंखला शुरू होती है। दायीं ओर बाँसद्रह पहाड़ी पर स्थित सज्जनगढ़ के रूप में विकसित किया गया। वर्तमान में पिछोला में अवस्थित कुछ अन्य द्वीप भी प्राकृतिक रूप से विकसित किये जाने चाहिये।

रात्रिकाल में प्रकाशमय जग–मन्दिर एवं उसका भव्य उत्तरी प्रवेश स्थल

गोल महल, दक्षिणी थम्बेदार दरीखाना एवं उसके दोनों तरफ शोभायमान संगमरमर के चार-चार हाथी

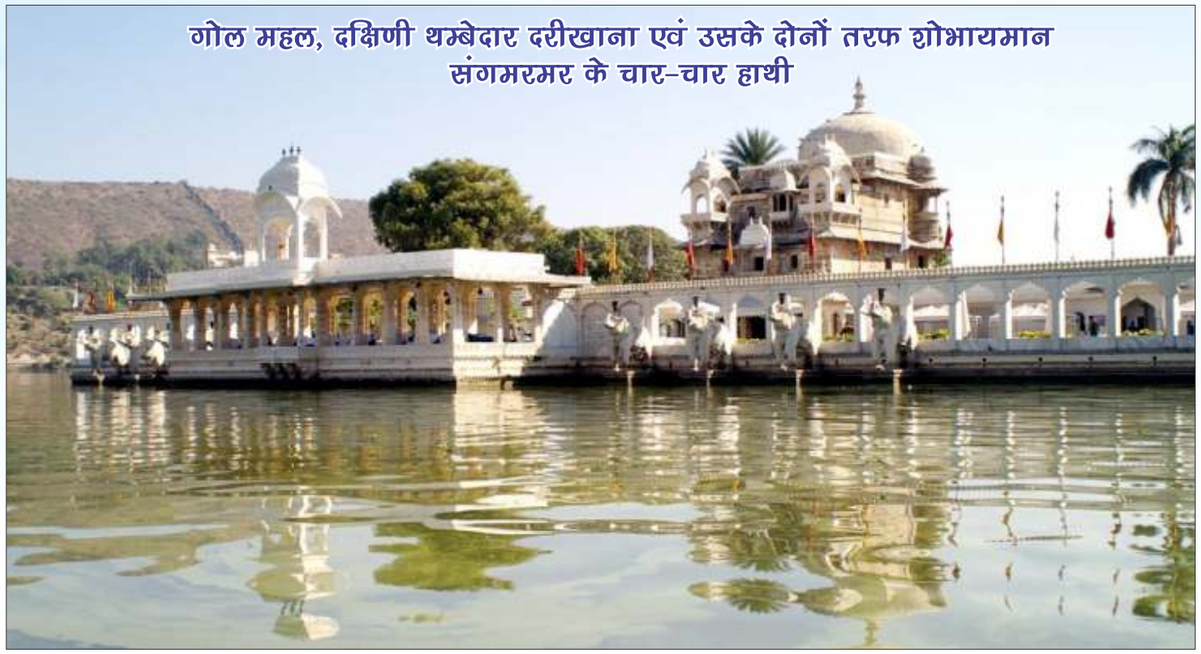

स्वागत के लिए आतुर हाथियों की प्रतिमाएँ

पूर्वी एवं दक्षिणी छोर के दोनों प्रवेश स्थल, दोनों थम्बेदार दरीखाने एवं आठ संगमरमर निर्मित हाथी

जग-मन्दिर का भव्य स्वरूप

जग-मन्दिर का ड्रोन फोटो

Gol Mahal

Gol Mahal : In an era of peace reigns Maharana Karan Singh (1620-1628). He completes the construction of the circular chambers we know as 'Gol Mahal' in 'Jagmandir'. The young Mugal prince Khurram forged a strong friendship with Karan Singh, who provided a safe haven at 'Jagmandir' for the prince in exile. The Suryavashi ideal of doing the right action at the right time and helping in distress without taking into account any other implications is upheld by the Maharana. In 1627 when Mugal Emperor Jahangir dies, Prince Khurram succeeds him as Emperor Shah Jehan. On his departure, the Mugal Emperor and the Maharana exchange turbans as a taken of bonding and friendship.

Garden Courtyard & Zenana Chambers

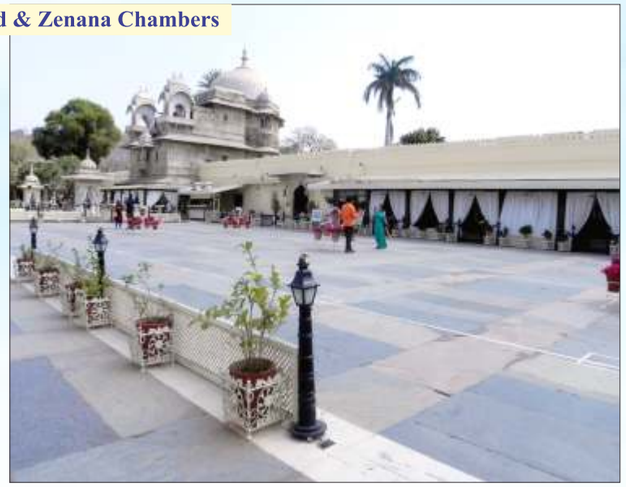

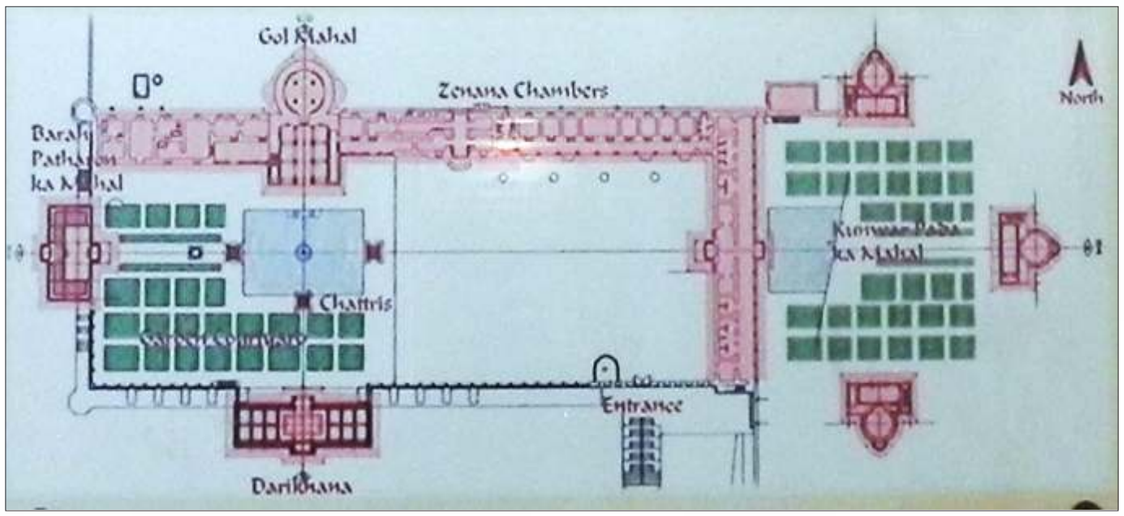

Garden Courtyard & Zenana Chambers : Maharana Jagat Singh-I (1628-1652) is undoubtedly one of the greatest patrons of art and architecture in Udaipur. In his reign, the picturesque Garden Courtyard with its central pool is completed at 'Jagmandir'. Zenana chambers or chambers for the ladies are built along the west-end of the 'Gol Mahal'. The Maharana lends his name to Jagmandir, the incomparable island palace on Lake Pichola. The quest for excellence in architecture, painting and the arts reaches its pinnacle in this era.

Chhatary

Darikhana Barah Patharon Ka Mahal

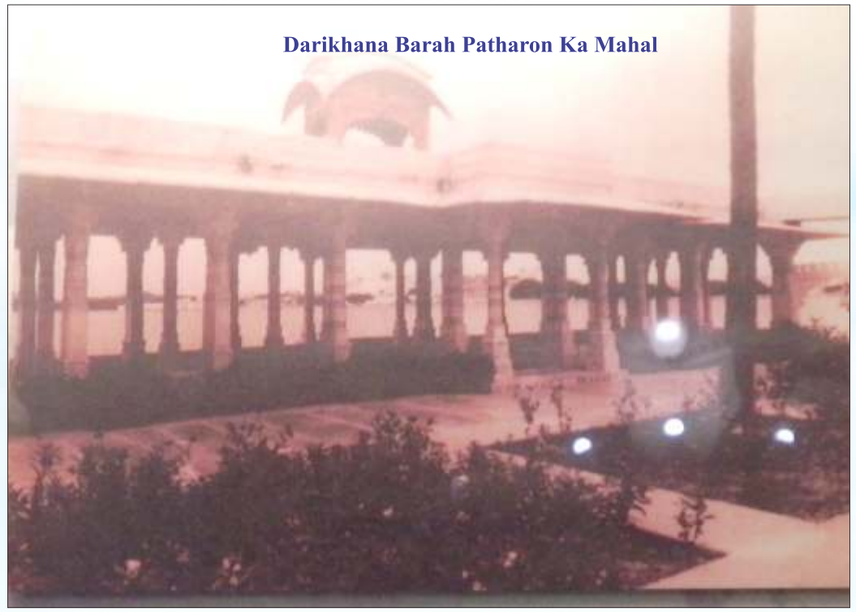

Darikhana Barah Patharon Ka Mahal : Jagmandir is gloriously embellished during the reign of Maharana Sangram Singh (1710-1734). The Darikhana or the open pavilion, with its delicate craftsmanship, intricately carved marble columns is built to compliment the beauty of the Garden Courtyard. The open pavilion offers panoramic views of the City Palace and beyond. The 'Barah Patharon Ka Mahal' or the palace of twelve stones, a unique structure with twelve solid marble-slabs, is created along the east end of the 'Gol Mahal".

The Three Chhataries : In 1942, during the reign of Maharana Bhupal Singh (1931-1955) three 'Chattris' or Kiosks came to adorn the Garden courtyard in front of the 'Gol Mahal'. The Chattris mark the central directions of the Garden Courtyard. Each one is unique for its intricate carving and craftsmanship; the central deep green-marble 'Chattri' being the most characteristic of them all. The Chattris are instrumental in integrating the entire space of the Garden Courtyard and its pavilions.

Chhatary

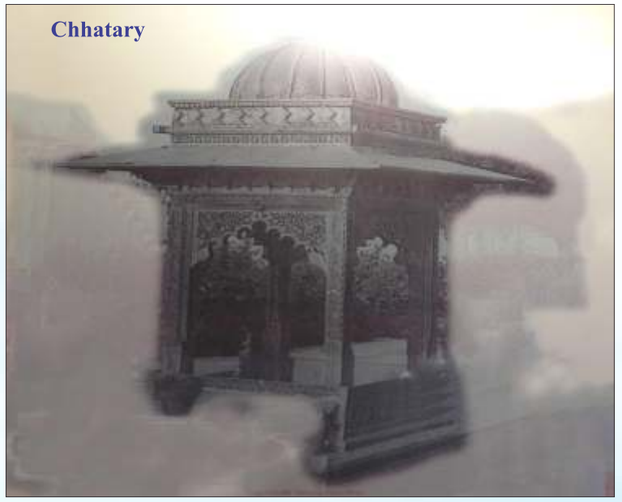

The Kunwarpada Ka Mahal :
It is also known as the Crown Prince Mahal, built at the western end of the garden courtyard added with a serene pool section creatively constructed by Maharana Sangram Singh! The pool is designed to be in the Center of the garden & it reflects the beauty of the open sky with an exquisite - eye catching scene! The pool is surrounded and flourished with palm trees on its border, lavished with green lawns and its entry is decorated with beautiful stunning marble elephant sculptures and flower beds!

The Kunwarpada Ka Mahal

Garden and Lavish Lawn : The western side of Jag Mandir that is near Kunwarnpada Ka Mahal is having a beautiful triangular garden with lavish green lawn, flower beds, colourful hedges and a scenic picture! The northern side of this garden is occupied by marble sittings carved with beautiful curvatures from where one can view Raj Mahal, Lake Palace, Natani Ka Chabutra and many floating birds on the vast surface of water! The garden is been used to celebrate scintillating high profile wedding ceremonies and parties! The whole scenario designed is nothing but gold to the eye!

Garden and Lavish Lawn

Maharana Ari Singh & Jagmandir : • The festive spirit and the architectural grandeur of 'Jagmandir' can best be visualised in this brilliant painting of the 18th century . •It narrates the sequence of festive activities centered around Maharana Ari Singh on this delightful pleasure island. •The Maharana, depicted with the gold nimbus, is seen six time : outside the "Gol Mahal', on the terrace of 'Barah Patharon Ka Mahal', shooting fish at the 'Darikhana', enjoying music and the company of his ladies at the Garden Courtyard; proceeding towards the 'Kunwarpada Ka Mahal'. •These are multiple events depicted within a single theme and on one canvas. •The architecture, landscape and the setting are remarkably coordinated to enhance the significance of each event. •In this painting, we are able to understand the various spaces created at 'Jagmandir' which is a veritable 'Swarg Ki Vatika' or a garden of heaven on earth. • It evokes emotions of beauty, idealized life and happiness. Documenting not just the festive spirit but also the form and meaning of the architectural glory of Jagmandir.

Brilliant Painting of the 18th Century - Jagmandir

जग–निवास : दूसरा जलमहल 'जग–निवास' राजमहल के किनारे से 800 फीट दूर है। इसको वि.स. 1810 ई.सं. 1754 में महाराणा जगतसिंहजी द्वितीय ने अपने नाम पर निर्माण कराया और इसका नाम जग–निवास रखा। इसकी नींव 4 मई, 1743 को रखी गई तथा 1 फरवरी, 1746 को यह बनकर तैयार हुआ।

कुँवरपदे के समय इन महाराणा ने अपने पिता महाराणा संग्रामसिंहजी से कुछ दिन जगमंदिर में रहने की इजाजत मांगी, इस पर महाराणा ने हुक्म दिया कि अगर ऐसा शौक होवे तो दूसरा महल बनवा लो। इसी पर इस महल की बुनियाद पड़ी और बड़े महल, खुशमहल, नहर, फूलमहल, धोला महल और फव्वारें आदि उसी वक्त से बने हुए हैं। महाराणा शंभूसिंहजी ने बड़े महल के पश्चिम में 'शंभूप्रकाश' नामक महल बनवाया और बड़े महल के पूर्व में दिलाराम के पास महाराज कुमार भोपालसिंहजी ने 'सर्वऋतु विलास' नामक नया महल बनवाया। यह बहुत खुशादा और बुलन्द महल है। इसके पूर्वी गोखड़े में काँच की पच्चीकारी है और गोखड़े के पांखियों पर चूने के काम में इसका नाम बना हुआ है। महाराज कुमार भोपालसिंहजी ने इससे मिले हुए 'खुश महल' को भी रहने लायक बना दिया।

इसमें एक भाग सज्जन निवास महल का है। इस महल में पश्चिम की तरफ एक हौज और उस पर दरीखाना और छोटे–मोटे पुराने बने हुए मकान थे। उनको वि.सं. 1935 ई.सं. 1878 में महाराणा सज्जनसिंहजी ने दुरुस्त करवा कर ऐसा उम्दा महल बनवा लिया, जिसको उदयपुर में अपने तर्ज का खुशनुमा एक ही महल कहना चाहिए। इसमें प्रवेश करते ही एक बड़ा हौज और उसके दोनों तरफ दो दरीखाने आते हैं जिनमें हरे और आसमानी रंग के काँच की पच्चीकारी बहुत सुन्दर और तारीफ लायक है। वायव्य कोण के मकानों में उत्तम चित्रकारी है। पश्चिम के हिस्से को भी दुरूस्त कराया और ऊपर की मंजिल में वायव्य कोण के बड़े कमरे में काँच की पच्चीकारी और उसके भीतर के दो छोटे कमरों में बहुत बढ़िया चित्रकारी देखने योग्य है। इसमें दीवार पर महाराणा सज्जनसिंह का पूरे कद का एक चित्र और शिकार के उत्तम दृश्य रेखांकित हैं।

इस महल के उत्तर की तरफ महाराज कुमार भूपालसिंहजी द्वारा बनाया हुआ 'चन्द्र–प्रकाश' नामक महल है। इसमें सोने का हल्का काम किया हुआ है। इसमें पश्चिम की तरफ के गोखड़े और पूर्व के बरामदे में संगमरमर के थंभो की नक्काशी का काम बहुत सुन्दर है।

महाराणा जगतसिंहजी द्वितीय ने जब इस जलमहल को बनवाया था, तब धोला महल नामी सफेद संगमरमर का महल नहर के ऊपर बनवाया परन्तु उसके ऊपर की छत के गुम्बद बुर्ज न बने। महाराज कुमार भूपालसिंहजी ने इसे भी सफेद संगमरमर का बनवाकर इस महल की शोभा बढ़ा दी। सच पूछा जाए तो महाराज कुमार भूपालसिंहजी ने इस जलमहल का जीर्णोद्धार करवाकर इसे नया ही बना दिया। तब शाही मेहमान और वाइसराय आदि आते थे, तालाब के साथ इस महल पर भी रोशनी छोटे–छोटे चिरागों द्वारा होती थी। महाराज कुमार भूपालसिंहजी ने वहां इंजन लगा कर यह सब झंझट दूर कर इस महल को बिजली से प्रकाशमान कर दिया। इस महल की शोभा में यह लिखना भी अतिशयोक्ति नहीं है कि उदयपुर में आकर जिसने यह महल नहीं देखा, उसकी उदयपुर यात्रा सफल नहीं समझनी चाहिए। 1961 ई.सं. में महाराणा भगवतसिंहजी ने इसे उदयपुर के प्रथम लक्जरी होटल में परिवर्तित किया और इस तरह उदयपुर में पर्यटन युग का सूत्रपात हुआ। जग–निवास उदयपुर के महत्त्वपूर्ण पर्यटन गन्तव्यों में से एक है। वर्तमान में यह ताज लेक पैलेस के नाम से प्रसिद्ध है।

जग–निवास का पूर्वी भाग : चहुँओर से पानी से घिरा हुआ

जग–निवास : अरावली पर्वत शृंखला के सबसे ऊँचे पर्वत पर सज्जनगढ़ पृष्ठभूमि में

जग–निवास का पूर्वी व पश्चिमी छोर : दक्षिणी छोर पर प्रवेश स्थल एवं पश्चिम की ओर अरसी विलास

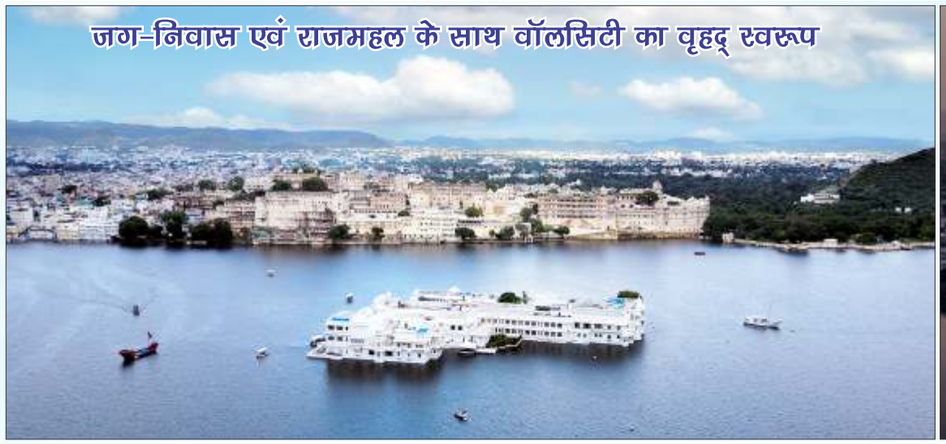

जग–निवास एवं राजमहल के साथ वॉलसिटी का वृहद् स्वरूप

प्रातःकालीन शुभवेला में विरासतकालीन शहर का सुहावना स्वरूप

जग-निवास का विहंगम चित्र : अन्दरूनी एवं बाहरी बारीकियों को चित्रित किया गया है।

जग-निवास में स्थित सुन्दर फव्वारें युक्त अन्दरूनी चौक

जग-निवास में काँच की पच्चीकारी युक्त सुसज्जित कमरा

रात्रिकाल में प्रकाशमय जग-निवास

सूर्यास्त के समय सुन्दर छटायुक्त जग-निवास

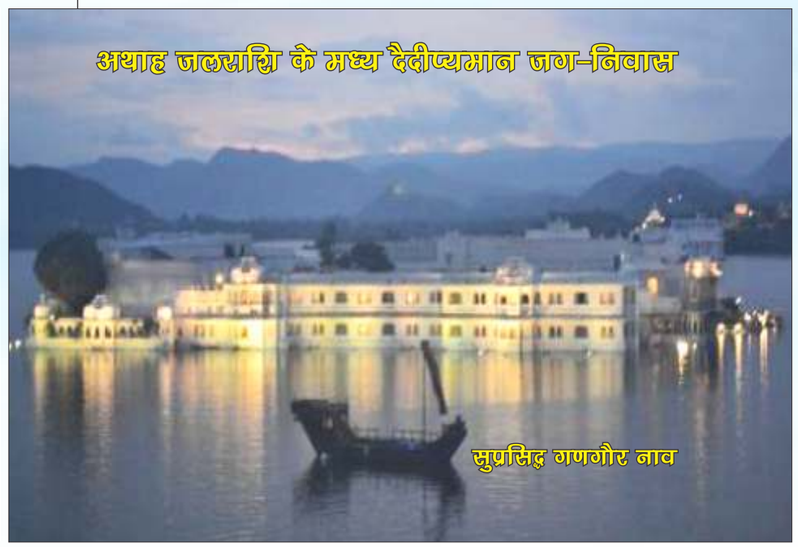

अथाह जलराशि के मध्य दैदीप्यमान जग-निवास

सुप्रसिद्ध गणगौर नाव

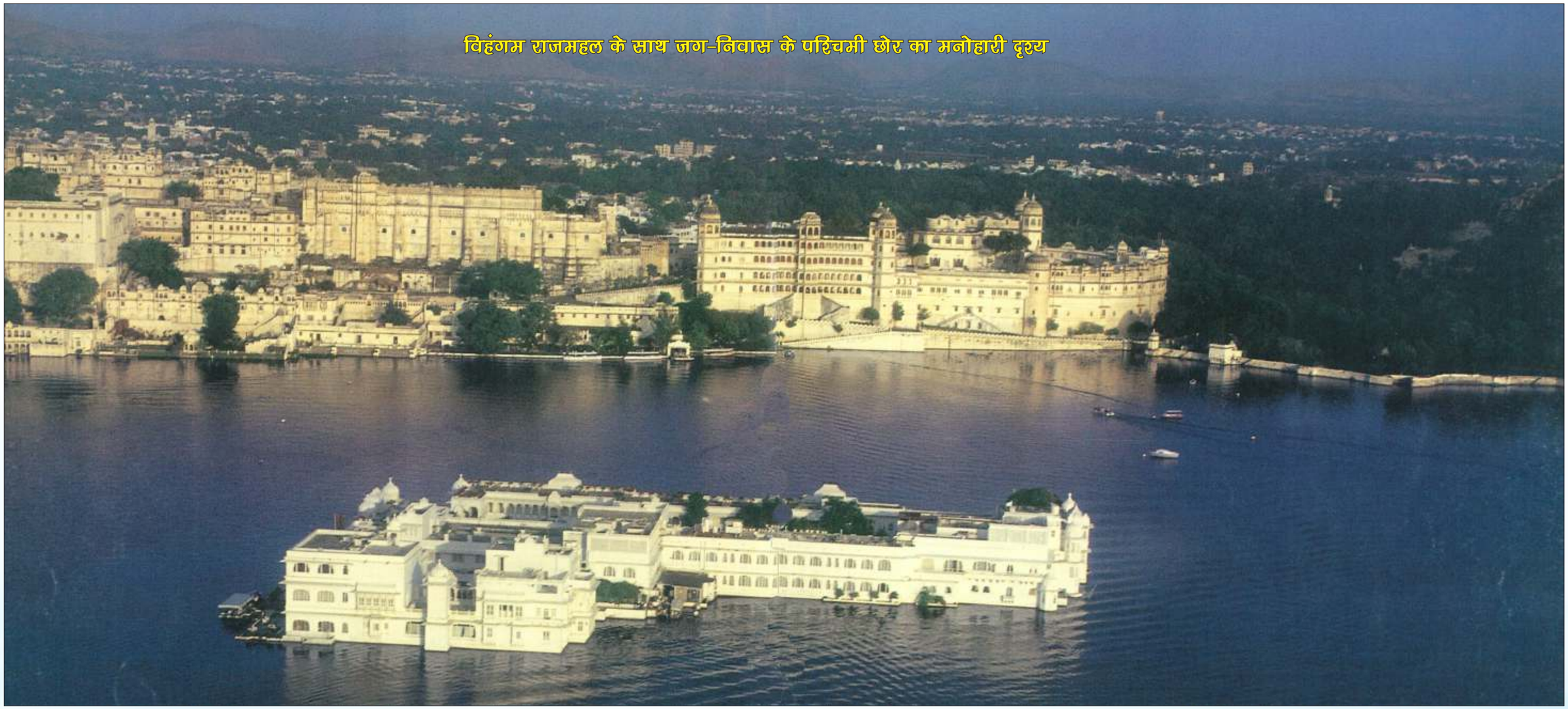

विहंगम राजमहल के साथ जग-निवास के पश्चिमी छोर का मनोहारी दृश्य

पिछोला : पूर्णतया रिक्त अवस्था के विविध स्वरूप : वर्ष 1973 व 2005 में पिछोला झील पूर्णतया सूख गई थी, तब विशेषकर गणगौर घाट, मोहन मन्दिर, हनुमान घाट, जग निवास, जग मन्दिर एवं दूर तक पश्चिमी छोर तक दृष्टिपात करें तो दिखेगा कि पिछोला झील की गहराई बहुत उथली है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष सीसारमा नदी से आते मटमैले पानी के साथ हजारों टन मिट्टी झील तल में जल की स्थिरता के साथ जमा होती है। झील की गहराई सीमित होने से झील की जल भराव क्षमता में भी कमी आना स्वाभाविक है। झील से प्रतिवर्ष गाद निकालने का कार्य व्यवस्थित रूप से जल विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में किया जाना चाहिये।

झील के पेटे की मिट्टी (गाद व पणा) उपजाऊ होने के साथ ही ईंट, मटके आदि बनाने के लिए अच्छी होती है। ऐसे में ईंट भट्टा मालिक, किसान, कुम्हार आदि इस मिट्टी को लेने की चाह रखने लगते हैं। जिस वर्ष पिछोला झील में कम पानी आता है, उस वर्ष गर्मियों में झील का पैंदा निकलने लगता है। साधारणतया पिछोला झील से सीसारमा छोर से ट्रेक्टर ट्रोलियाँ गाद ले जाते हुए देखें जा सकते हैं। यह अपनी सुविधा के अनुसार गाद ले जाते हैं जिससे बड़े–बड़े गड्ढ़े हो जाते हैं। झील से गाद निकालना उसकी सेहत के लिहाज से अच्छा रहता है लेकिन यह व्यवस्थित तरीके से होना चाहिये। एक ही जगह गड्ढ़ा करने से बारिश का पानी पहले वहां भरेगा, फिर आगे बढ़ेगा। झील भरने में भी परेशानी होती है तथा इसे भरने में समय भी अधिक लगेगा एवं यह पानी भविष्य में पेयजल के रूप में भी उपयोग में नही लिया जा सकेगा।

झील में से गाद निकालने से इसकी पानी की भराव क्षमता बढ़ती है लेकिन इसे व्यवस्थित और तेजी से करने की आवश्यकता है। मिट्टी में प्लास्टिक एवं अन्य प्रदूषक तत्व मौजूद होते हैं। डिसिल्टिंग से झील की आयु बढ़ने के साथ उसकी गहराई बढ़ती है और पानी की शुद्धता भी बढ़ती है। इस कार्य को जल संसाधन विशेषज्ञों एवं झील प्रेमियों की निगरानी में करवाना चाहिये। प्रशासन द्वारा झील से गाद प्रतिवर्ष निकालने के लिए विशेष नियम बनाये जाने चाहिये। प्रति ट्रेक्टर रॉयल्टी प्राप्त कर झील विकास प्राधिकरण या नगर निगम द्वारा झील सुधार एवं सौन्दर्यीकरण हेतु संसाधन जुटाये जा सकते हैं।

पिछोला झील में जल स्तर उतरने के साथ क्षेत्र विशेष में पेटा ''काश्त'' की जाती रही है। पूर्व में जब खेती रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर नहीं थी, पेटा काश्त उचित प्रतीत होती थी लेकिन जब से पिछोला झील पेयजल के लिए आरक्षित कर दी गई है, इस पर उर्वरक आधारित खेती की स्वीकृति नहीं देनी चाहिये, क्योंकि इससे आमजन के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

पिछोला के पूर्वी छोर पर दायजीराज की पुलिया, विभिन्न घाट एवं मोहन मन्दिर

पिछोला को समुचित गहरा किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

गणगौर घाट

जग–निवास पैदल मार्ग

पिछोला के रिक्त पेटे में खेती

रिक्त अवस्था में पिछोला में स्थित जग-मन्दिर, जग-निवास, मांजीराज का घाट एवं मोहन मन्दिर का स्वरूप

अरावली पर्वत श्रृंखला के पृष्ठभाग में स्थित विशाल पिछोला रिक्त अवस्था में

मोहन मन्दिर : यह एक छोटा सा टापू राजघाट त्रिपोलिया के समीप पिछोला में जीभ के आकार के उत्तरी विस्तार जिसके दोनों तट घनी बसावट वाले हैं, के मध्य स्थित है। इस द्वीप का निर्माण महाराणा जगत सिंह प्रथम (1628–1652 ई.सं.) ने अपनी सिरोही विजय के पश्चात् करवाया था। वहीं कुछ मतानुसार इसका निर्माण महाराणा की उप पत्नी से उत्पन्न पुत्र मोहनदास ने करवाया। इस संपूर्ण परिसर में महराब एवं खम्भें हैं। पश्चिम की ओर एक ढका हुआ छज्जायुक्त बरामदा तथा कुछ बाहर निकले हुए गोखड़े हैं, बीच का आँगन उद्यान रहा होगा। मन्दिर उपसर्ग से स्पष्ट है कि यह त्यौहारों के उद्देश्य से ही बनाया गया होगा। पिछली सदी के प्रारम्भ में यहाँ दशहरा तथा अन्य अवसरों पर आतिशबाजी होती थी। वर्तमान में यह बसन्त के गणगौर उत्सव के समय प्रयुक्त होता है।

मोहन मन्दिर

मोहन मन्दिर : राजमहल से

मोहन मन्दिर : पश्चिमी भाग एवं प्रवेश मार्ग

मोहन मन्दिर : पिछोला की अथाह जलराशि के मध्य

मोहन मन्दिर : अधिकतम् भराव स्तर पर पूर्णतया जल प्लावितं

मोहन मन्दिर के अग्रभाग में स्थित विविध घाट एवं राजमहल

मोहन मन्दिर का पूर्वी एवं दक्षिणी छोर

मोहन मन्दिर में रखरखाव के अभाव में खरपतवार एवं जंगली पौधों का फैलाव

अरसी बिलास : यह जलमहल जगमन्दिर के पश्चिम में स्थित मगरी के निकट महाराणा अरिसिंह तृतीय ने अपने नाम पर 1760 ई. सं. के दशक में दिन के समय मनोरंजन स्थल के रूप में विकसित किया जिसमें खुला मण्डप तथा उद्यान है। यहाँ उपयुक्त शब्द 'बिलास' ध्यान देने योग्य है जिसका तात्पर्य है निर्माण का वह रूप जो मन्दिर से कम परन्तु निवास से अधिक पवित्र माना जाता है।

अरसी बिलास

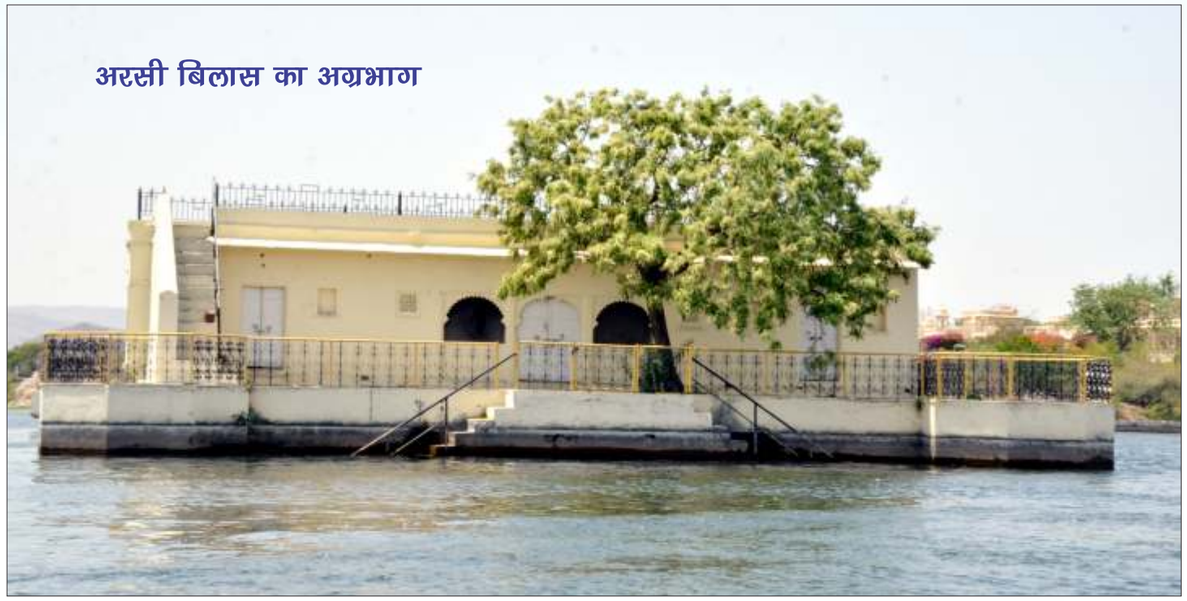
अरसी बिलास का अग्रभाग

अरसी बिलास का पश्चिमी छोर एवं उद्यान

चन्द्रप्रकाश महल (नटनी का चबूतरा) : यह एक दरीखाना (चबूतरा) पिछोला के पश्चिम एवं जग–मन्दिर द्वीप महल के एकदम पीछे सबसे छोटा द्वीप 'नटनी का चबूतरा' के नाम से भी जाना जाता है। इस जगह जलालशाह फकीर रहता था जिससे इसे जलाल्याभाटा भी कहते हैं।

एक जनश्रुति है कि एक कोई नटनी आई, उसने महाराणा साहब से अर्ज कराई कि महलों से पिछोला के उस पार एक रस्सी बाँधकर वह पिछोला को पार कर सकती है। इसको असंभव समझकर उसे कहा गया कि यदि वह इस तरह पिछोला को पार कर देगी तो उसे आधा राज्य दे दिया जाएगा। तब महलों से सीतामाता मंदिर के ऊपर की पहाड़ी के छोर पर रस्सी बाँधी गई और नटनी महलों से रस्सी पर चलती हुई इस चबूतरे तक पहुँची कि किसी कर्मचारी ने रस्सी काट डाली। जिससे वह तालाब में गिर कर मर गई और उस जगह यह चबूतरा बनाया गया, जो 'नटनी के चबूतरे' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। परन्तु यह कथा मनगढ़न्त प्रतीत होती है क्योंकि 3 कि.मी. से अधिक विस्तार के पिछोला को एक रस्सी के सहारे पार करने के लिए, जिसका स्तर झील के जल स्तर के ऊपर हो, उसके पूर्वी और पश्चिमी छोरों का जमीन से काफी ऊपर बँधा होना जरूरी है और ऐसी स्थिति में (जैसा कि कहा जाता है कि पूर्वी तट पर बैठे हुए किसी व्यक्ति ने रस्सी काटी), वह रस्सी उस व्यक्ति की पहुँच से बाहर रही होगी। इतनी योग्य कलाबाज झील में गिरने पर निश्चित रूप से तैरकर झील पार कर लेती, जो उस जगह झील पूरी भरने पर मुश्किल से 2 मीटर गहरी रही होगी। जब पिछोला सूख गया था, तब यह देखा गया कि चबूतरा चट्टानी उभार पर बना हुआ है न कि सीधे जमीन पर बनाया गया, जैसा कि विश्वास किया जाता है कि नटनी के डूबने की जगह पर उसका निर्माण किया गया। इसलिए वास्तव में शरद ऋतु व चैत्रमास की चंद्रिका की शोभा कमलों के अन्दर निहारने हेतु यह स्थान महाराणा सज्जनसिंह जी ने बनवाकर इसका नाम 'चन्द्रप्रकाश' रखा था। इसके अतिरिक्त यह मात्र चाँदनी रात में अथवा सायंकालीन सैर के लिए एक चबूतरा है। शायद इसका निर्माण झील से निकली हुई चट्टान के कारण संभावित दुर्घटना के प्रति नाविकों को सचेत करने के लिए हुआ हो। जिस कारण इस उभार को हटाने के बजाय एक चबूतरा बना दिया गया। एकान्त में स्थित इस स्थल का उपयोग ध्यान व योग के उद्देश्य से भी किया जाता रहा होगा।

नटनी का चबूतरा

पिछोला का पश्चिमी छोर नटनी के चबूतरे के पास कमल पुष्पों से पूर्णतया अटा हुआ एवं दूर से दृष्टिगत होते हुए राजमहल की सुन्दर दृश्यावली

खास ओदी : पिछोला झील के दक्षिण में खास ओदी का स्थान वन–विहार के लिए अति रमणीय और आनन्दमय है। वहाँ जाने के लिए बड़ी पाल पर हनुमान पोल दरवाजे से झील के तट पर माछला मगरा से सटी हुई एक सड़क दूध तलाई से होकर जाती है। आगे जल बुर्ज दरवाजे के बाहर पर्वत के ढलान में चातुर्मास में कई साधु महात्मा लोग पर्णकुटियां बनाकर विश्राम करते थे। इनके लिए पुण्यशील महाराणा साहब की तरफ से भोजन आदि का प्रबन्ध किया जाता था। खास ओदी की इमारत महाराणा संग्रामसिंहजी द्वितीय ने गहन जंगल के मध्य बनवाई थी। महाराणा फतहसिंहजी साहब ने इसमें वृद्धि कराकर महल बनाया और आस–पास बगीचा लगा दिया। यहाँ एक चारदीवारी का अहाता है जिसमें शेर, चीते, सूअर, रीछ, जरख आदि जंगली जानवर शामिल छोड़कर कुश्ती कराई जाती थी। बड़े, रईस, यूरोपियन, शाही कुटुम्ब के मेहमान, वायसराय आदि के आगमन पर उनके प्रोग्राम में खास ओदी की सैर भी रखी जाती थी क्योंकि जंगली जानवरों के तमाशे के अलावा यहां से महल, शहर, तालाब और जंगल का दृश्य अति रमणीय था। सायंकाल के समय प्रतिदिन तीन मन मक्की सूअरों को डाली जाती थी। वराहदेव नियत समय पर अपना भाग लेने के लिए आकर उपस्थित होते थे। उनकी दौड़–धूप, टक्करें, धक्कम–धक्का, घुरघुर्राहट देखने योग्य थी। खास ओदी से आगे तालाब के किनारे नाहर ओदी, खुशहाल ओदी की शिकारगाह के अतिरिक्त खास ओदी एवं पिछोला के किनारे के मध्य आश्रम अष्टभुजा देवी मन्दिर स्थित है।

खास ओदी का प्राचीन चित्र, जहां सूअरों को सायंकाल में मक्का ड़ाला जाता था

खास ओदी : जीर्णोद्धार के इंतजार में

आश्रम अष्टभुजा देवी मन्दिर : पिछोला के दक्षिणी किनारे पर खास ओदी के नीचे श्री 1008 श्री राजगुरु धूणीमाताजी का मेवाड़ का आश्रम अष्टभुजा देवी का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर करीब 200 वर्षों से अधिक पुराना है। इस मन्दिर परिसर में भेरूजी, हनुमानजी, सूर्यदेव, महादेव एवं विष्णु भगवान के पाँच छोटे मन्दिर भी स्थित हैं। यह संपूर्ण परिसर एक त्यागी, देवी समर्पित महन्तजी के सान्निध्य में उदयपुर महाराणा की ओर से एकलिंगजी ट्रस्ट द्वारा संचालित है।

आश्रम अष्टभुजा देवी मन्दिर के बाहरी प्रांगण से पिछोला एवं पृष्ठभाग में राजमहल

जलीय पक्षियों की उपयुक्त शरण–स्थली

सीतामाताजी का मन्दिर : खास ओदी से कुछ आगे पिछोला के किनारे उदयपुर–जलबुर्ज–सीसारमा सड़क पर श्री सीतामाताजी का प्राचीन मन्दिर स्थित है। यह रामायणकालीन मन्दिर वैष्णव समाज की कुलदेवी के रूप में प्रसिद्ध है। वर्तमान में वैष्णव (वैरागी) समाज संस्थान, उदयपुर द्वारा इसका प्रबन्धन किया जाता है। मान्यतानुसार यह मन्दिर लंका विजय के बाद स्थापित किया गया। इस स्थान का नाम पूर्व में सीतारामपुर हरियन वन था, जिसका अपभ्रंश सीसारमा हो गया। सीसारमा नदी भी पूर्व में कपिला नदी के नाम से जानी जाती थी। यहाँ पर पौष माह में रविवार के दिवस पर मेला आयोजित होता है।

कालका माता (महाकाली) मन्दिर : माछला मगरा के दक्षिणी भाग पर स्थित नाहर एवं खुशहाल ओदी के ऊपर ''बाँकी का मगरा'' (गिर्वा की दूसरी सबसे ऊँची चोटी 822 मीटर) के पश्चिमी ढ़लान पर शिखर से काफी नीचे पिछोला झील के दक्षिण–पश्चिम में सीसारमा–उदयपुर रोड एवं वर्तमान में एकलिंगगढ़ छावनी परिसर में कालका माता (महाकाली) मन्दिर स्थित है। वर्तमान में ''बाँकी का मगरा'' एक प्रतिबन्धित क्षेत्र है क्योंकि यह एकलिंगगढ़ छावनी (भारतीय सेना की एक छावनी) के अन्तर्गत आता है।

इस मन्दिर का निर्माण महाराणा जवान सिंह (1828–1838 ई.) ने करवाया तथा 10 फरवरी, 1837 को इसका लोकार्पण किया गया। वर्तमान में मन्दिर का संचालन इन्फेट्री बटालियन नं. 2 एकलिंगगढ़ छावनी द्वारा किया जाता है। मन्दिर परिसर में छत एवं फर्श का निर्माण तथा पुनर्निर्माण का कार्य 13वीं ''बटालियन दी राजपुताना राईफल्स'' के समस्त पदों द्वारा दिनांक 31 मई, 2011 को सम्पन्न हुआ। पहाड़ी पर स्थित होने एवं उदयपुर शहर विशेषकर पिछोला का सुरम्य नजारा प्रस्तुत करने के कारण बरसात के मौसम में इस मन्दिर का भ्रमण सबसे ज्यादा किया जाता है। मन्दिर परिसर से पिछोला झील का अद्वितीय सौन्दर्य पूर्ण रूप से निखरता है। यहाँ से छोटे–बड़े प्राकृतिक टापू जहाँ स्थानीय एवं मेहमान पक्षी निवास करते दिखते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से एक तरफ राजमहल, जग–मन्दिर एवं विशाल जल सतह के साथ पूर्वी, दक्षिणी एवं पश्चिमी छोर पर हरीतिमा से ढकी अरावली पहाड़ियों का सुन्दर स्वरूप दिखाई देता है। वन विभाग के पिछोला के दक्षिणी किनारे स्थित जंगल सफारी एवं गोल्डन पार्क यहां से प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ते हैं।

।।जय काली माता की।। ओउम सर्वमंगलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्येत्रयम्बे गौरिनारायणि नमोऽस्तुते।। जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

कालका माता मन्दिर से पिछोला का भव्य स्वरूप एवं प्राकृतिक टापू

'बाँकी का मगरा' नामक ऊँची पहाड़ी के ढलान पर स्थित कालका माता मन्दिर

कालका माता मन्दिर से पिछोला का भव्य स्वरूप, प्राकृतिक टापू, एकलिंगगढ़ छावनी गोवर्द्धन सागर एवं सघन हरियाली युक्त वन क्षेत्र – जंगल सफारी एवं गोल्डन पार्क

कालका माता मन्दिर से पश्चिमी छोर पर अरावली पर्वत श्रृंखला पूर्णतया हरियाली से आच्छादित – अति सुन्दर प्राकृतिक छटा

माता श्री अन्नपूर्णाजी मन्दिर : उदयपुर की प्रसिद्ध पिछोला झील के उत्तरी तट के पास एवं प्रसिद्ध होटल लीला पैलेस के उत्तरी द्वार पर ब्रह्मपुरी की नागानगरी में विशाल नीम के पेड़ के नीचे माता श्री अन्नपूर्णाजी विराजमान है, जहाँ एक छोटे से मन्दिर का निर्माण किया गया है। माताश्री की यह चमत्कारी मूर्ति भूमि से निकली हुई है। यह जनता को अन्न प्रदान करने की असीम शक्ति प्रदाता है। श्री अन्नपूर्णाजी को पक्कान्न का ही नैवेद्य लगाया जाता है। यहां की यह मान्यता है कि माताश्री सभी की मनोकामना पूर्ण करती है। नागर समुदाय में माताश्री अन्नपूर्णा की बहुत मान्यता है। मन्दिर के नजदीक ही नागरवाड़ी नामक एक कॉलोनी बसी हुई है। पूर्व में इस नागा नगरी में नग्न साधु बहुत संख्या में पिछोला किनारे पर साधना किया करते थे। वर्तमान में यह समुदाय इस क्षेत्र में नहीं रहता है।

अम्बामाता मन्दिर : उदयपुर के मध्य में कुम्हारिया तालाब के उत्तरी किनारे के पास प्रसिद्ध अम्बामाता का मन्दिर स्थित है जिसे उदयपुर में विशिष्ट पूजा स्थल के रूप में पहचाना जाता है। उदयपुर के महाराणा राजसिंह जी द्वारा इस मन्दिर के निर्माण के पीछे एक दिलचस्प कहानी है। माना जाता है कि उन्होंने गुजरात में देवी अम्बामाता के निर्देशों पर इस मन्दिर का निर्माण करवाया था। अम्बामाता मन्दिर ऊँची चारदीवारी के साथ करीब 20 फीट ऊँचे मंच पर बनाया गया है। मुख्य परिसर की दीवार के अन्दर एक आंगन एवं चरण पादुका रखने का स्थान है। मन्दिर के मुख्य द्वार के ऊपर नकारखाना एवं दोनों तरफ सुनहरी रंग के शेर की मूर्तियाँ स्थापित हैं। नकारखाने के पश्चिम की ओर पूर्व दिशा में मुख्य मन्दिर है। यह मन्दिर सफेद पत्थर से औसत वास्तुकला के साथ बना हुआ है। इतिहास के पृष्ठों में ऐसा माना जाता है कि महाराणा राजसिंह (1652–1680) गंभीर नेत्ररोग से पीड़ित थे और राजवैद्य द्वारा किये गये प्रयासों से उन्हें ठीक नहीं किया जा सका, तब उन्हें गुजरात की अर्बुदा पहाड़ी पर स्थित अम्बिका माता के दर्शन करने की सलाह दी गयी लेकिन यात्रा प्रारम्भ करने से पहले ही महाराणा को सपने में देवी के दिव्य दर्शन हुए और उन्होंने कहा कि उन्हें यह यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि देवी स्वयं मेवाड़ में आ रही है। सपने में दिये गये निर्देशों के आधार पर महाराणा और उनके दरबारियों ने एक जगह खोदना प्रारम्भ किया, जहाँ उन्हें देवी अम्बामाता की मूर्ति मिली। जमीन से मूर्ति के निकासी के तुरन्त बाद महाराणा अपनी गंभीर बीमारी से पूर्णतः मुक्त हो गये। महाराणा ने इसी स्थान पर एक मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ करवाया जो विक्रम संवत् 1721 (1664 ई.सं.) में पूर्ण हुआ। अम्बामाता मन्दिर अम्बामाता रोड पर अम्बापोल के पास शहर के केन्द्र स्थल से लगभग 3 कि.मी. एवं उदयपुर सिटी स्टेशन से 5 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

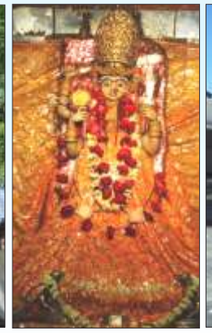

माछला मगरा से किशनपोल तक विस्तृत शहरकोट एवं उदयपुर शहर के साथ हरीतिमायुक्त क्षेत्र

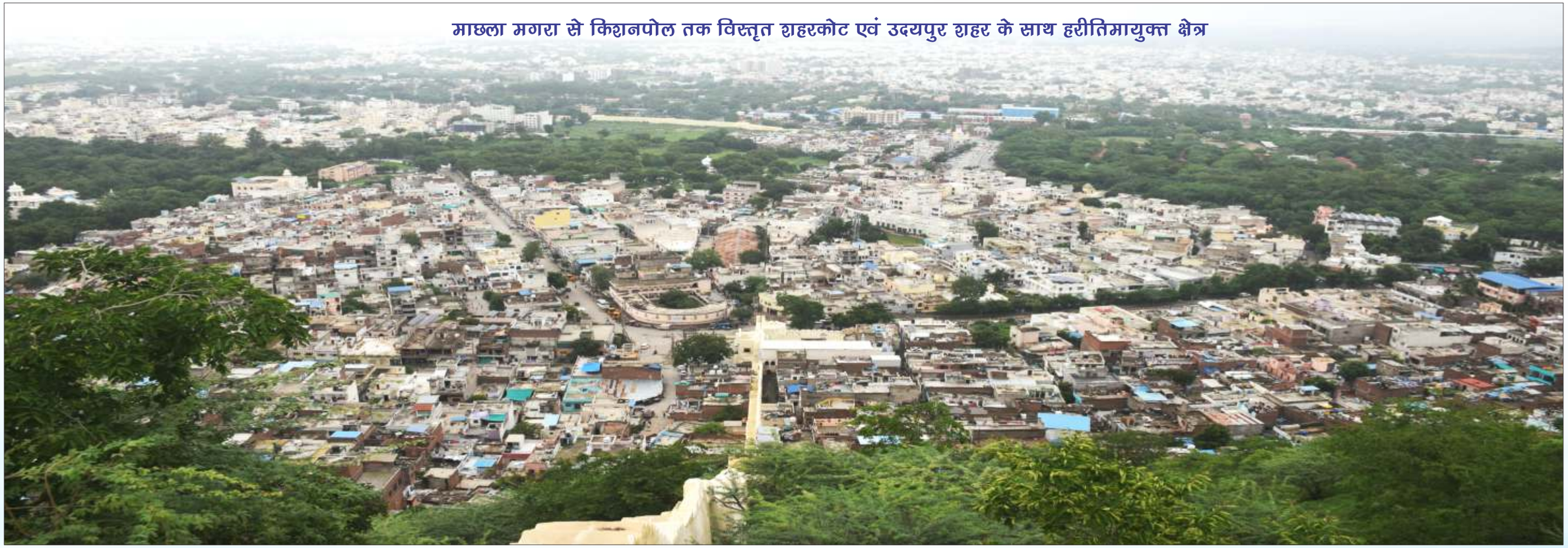

प्रताप पार्क : पिछोला झील के पश्चिम–दक्षिण में, इस झील के मुख्य जल स्रोत सीसारमा नदी के प्रवेश स्थल के किनारे लगभग 60 हजार वर्गफीट क्षेत्र में फैले नगर विकास प्रन्यास द्वारा विकसित प्रताप पार्क का लोकार्पण फरवरी, 2017 में हुआ। यह पार्क उदयपुर के युवाओं के मध्य सबसे नए उद्यान के रूप में एक पसंदीदा स्थल बन गया है। यहाँ पर पर्यावरण के अनुकूल वातावरण के साथ झील की विशाल जल सतह का मनोहारी प्राकृतिक दृश्य का सिंहावलोकन होता है। पार्क का नाम स्वर्गीय श्री प्रताप भण्डारी के नाम पर रखा गया है जिनका उदयपुर में पर्यटन व्यवसाय की वृद्धि में बड़ा योगदान है एवं पार्क का रखरखाव प्रताप बसन्तीलाल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। पार्क में आकर्षण का मुख्य केन्द्र वह स्थल है, जहाँ "**आई लव उदयपुर**" चिह्नित है। यहाँ से पिछोला झील एवं उसके लुभावने परिदृश्य से इस वाक्य का औचित्य सिद्ध होता है। पार्क में न केवल हरे–भरे हिस्से हैं बल्कि मोगरा के फूलों की क्यारियों के साथ ओपन जिम, व्यवस्थित वाहन पार्किंग भी है। यह पार्क 250 मीटर लम्बा एक्यूप्रेशर ट्रेक के साथ पत्थर की बंसियों से बाड़, सोलर लाईट्स होने से "**इको–फ्रेन्डली अर्थ**" का भी संदेश देता है। यह फोटोग्राफी के लिए भी उपयुक्त स्थल है। यहां से उदयपुर की अनदेखी सुन्दरता भी देखने को मिलती है। पारिवारिक पिकनिक के लिए भी यह उत्तम स्थल है। यहाँ पर दूधतलाई से जंगल सफारी होते हुए सुगमता से पहुंचा जा सकता है।

प्रताप पार्क : पिछोला के पश्चिम–दक्षिणी किनारे एवं सीसारमा नदी के प्रवेश–स्थल पर विकसित इस पार्क के तीनों तरफ मिट्टी के कृत्रिम टापू बनाए जाने चाहिये, जिस पर पक्षी विश्राम कर सकें तथा पर्यटक व शहरवासी स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों की चहलकदमी का आनन्द ले सकें।

सीसारमा नदी का प्रवेश स्थल तथा पिछोला की विशाल जलराशि से घिरा हुआ सुन्दर पार्क

पार्क की बाहरी बनावट एवं वाहन पार्किंग स्थल

सुन्दर पार्क का भव्य एवं विकसित स्वरूप

उद्यान में केन्द्रीय फव्वारे के साथ वनस्पति की विविधता लाई जानी चाहिये।

जंगल सफारी पार्क : दूधतलाई से 2.5 कि.मी. दूर दूधतलाई–सीसारमा रोड पर कालिका माता मन्दिर के नीचे वन विभाग द्वारा विकसित जंगल सफारी पार्क स्थित है। इसका निर्माण वर्ष 2012 में पूर्ण हुआ। यह विकसित पार्क प्रकृति की गोद में एक मस्ती एवं रोमांचकारी अनुभूति को परिलक्षित कर स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। पूर्वशासित काल में माछला मगरा एवं बांकी मगरा क्षेत्र पर खास ओदी, नाहर ओदी, खुशहाल ओदी आदि के मध्य स्थित यह क्षेत्र राजाओं का शिकारगाह हुआ करता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वर्ष 1972 में वन्य जीव संरक्षण अधिनियम की बाध्यता से वन्य जीव एवं पौधों की प्रजातियों का संरक्षण एक आवश्यक कदम बन गया। इस अधिनियम के बाद देश में ऐसे कई शिकारगाहों को संरक्षित कर सफारी पार्क में परिवर्तित कर आमजनों के लिए खोल दिया गया ताकि वे विभिन्न जीवों को देख एवं समझ कर उनकी विविधता एवं उपलब्धता से परिचित हो सकें। साथ ही औषधीय पौधों एवं पेड़ों की महत्ता से भी अवगत हो सके। इसी उद्देश्य के साथ उदयपुर में इस पार्क को विकसित किया गया।

इस पार्क में 4 मीटर चौड़ी एक प्राकृतिक पगडंडी बनायी गयी है। इस पर भ्रमण करते हुए जनसामान्य प्रकृति से जुड़ना सीखने के साथ प्रकृति की प्रत्येक गतिविधि को सीधे महसूस कर सकता है। पार्क का मुख्य आकर्षण ''सात बहिनें'' अर्थात् ''सात पक्षियों का एक समूह'' है। इसमें एक दो मंजिला पक्का मचान भी निर्मित है, जहाँ से पिछोला झील की विशालता के साथ सिटी पैलेस, लेक पैलेस, जग–मन्दिर एवं प्राकृतिक टापुओं की भव्यता के सुन्दर नजारों का लुत्फ उठाया जा सकता है। यहाँ से पिछोला झील के किनारे जलीय, स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी यथा– सैंडग्रास, रॉबिन, इंडियन रोलन, ग्रीन मुनिया एवं वुडलेंड भी अक्सर देखे जा सकते हैं। साथ ही ऊँचे पहाड़ों पर स्थित प्राचीन ओदियों को गाईड की सहायता से देखा जा सकता है। इस पार्क में प्रवेश शुल्क से ही प्रवेश किया जा सकता है।

पार्क में विकसित वन के अनुरूप संरचनाएँ

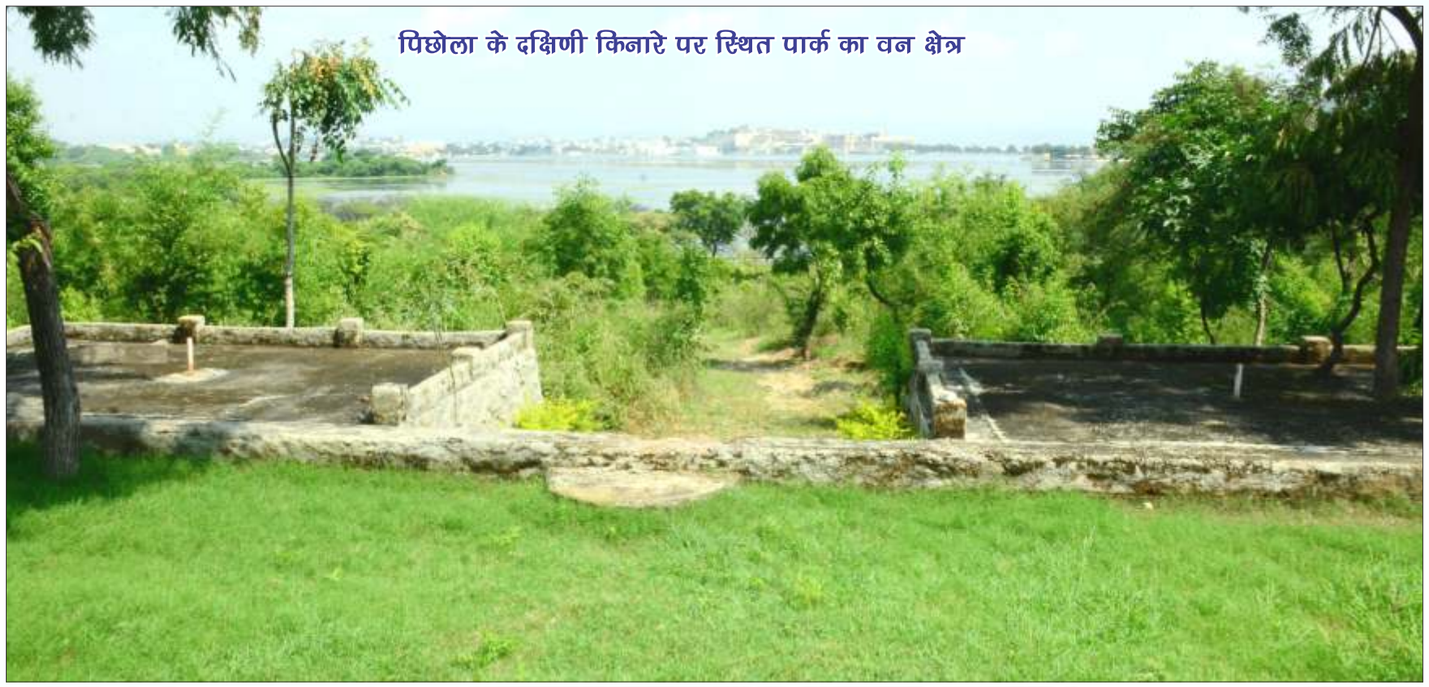

पिछोला के दक्षिणी किनारे पर स्थित पार्क का वन क्षेत्र

जंगल सफारी का केन्द्रीय स्थल : विशाल लॉन एवं ग्रामीण परिप्रेक्ष्य की संरचनाएँ

गोल्डन पार्क : वन विभाग द्वारा नगर विकास प्रन्यास के आर्थिक सहयोग से विकसित इस पार्क का लोकार्पण 23 दिसम्बर, 2017 को हुआ। गोल्डन पार्क पिछोला झील के किनारों पर जंगल सफारी एवं प्रताप पार्क के साथ विकसित करने के उद्देश्य से निर्मित किया गया। करीब 2 हेक्टयेर क्षेत्र में फैले इस पार्क का निर्माण पिछोला झील की विशाल जलराशि के बीच स्थित जग–मन्दिर, ताज लेक पैलेस एवं अन्य टापुओं का मनोहारी परिदृश्य देखने हेतु किया गया। इस पार्क की संरचना विषय आधारित परियोजना के अन्तर्गत पर्यटकों को आकर्षित, बच्चों को सम्मोहित और जंगल बचाने के लिए जागरूकता के उद्देश्य से मिनी जंगल के रूप में विकसित करने के लिए बनायी गयी। इस संपूर्ण पार्क में फूलों की क्यारियों पर सूर्य के प्रकाश की किरणें पड़ने पर वह चमकती हुई परिलक्षित होती हैं। पार्क में कई हर्बल पौधे नामपट्टी के साथ लगाये गये हैं। साथ ही यह बाघ व अजगर जैसे जानवरों की विभिन्न मूर्तियों से भी सुसज्जित किया गया है। पार्क को मिनी जंगल के रूप में विकसित करने हेतु एक छोटा पुल भी बनाया गया है।

यह पार्क पिछोला के तट के पास स्थित होने के साथ ऊँची वायर फेन्सिंग लगाकर सुरक्षा के समुचित उपाय भी किये गये हैं क्योंकि पार्क में आने वाले अधिकतम् लोग युवा एवं बच्चे हैं। बैठने की उचित व्यवस्था भी उपलब्ध है जो काफी सजे हुए रूप में संगीत वाद्य यंत्र तबला आदि विभिन्न आकारों में बनाये गये हैं। पार्क में बहुत व्यवस्थित रूप में औषधीय पौधे शृंखलाबद्ध रूप से लगाये गये हैं। इससे यहाँ का प्राकृतिक वातावरण इस झील के किनारे भ्रमण करने के लिए शानदार स्थल बन जाता है। इस पार्क के किनारे बैठकर पक्षियों को देखने का सुखद अनुभव भी महसूस किया जा सकता है। यहाँ से दुर्लभ एवं प्रवासी प्रजातियों के पक्षियों को झीलों में विचरण करते हुए एवं अपनी प्यास एवं आहार करते हुए भी देखें जा सकते हैं। गोल्डन पार्क में डायनासौर स्कल्प्चर का निर्माण भी कर बच्चों के लिए एक और आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। इस पार्क को सूर्यास्त से पूर्व देखना चाहिये। पारिवारिक पिकनिक के लिए भी यह उत्तम स्थल है। इस वन्य पार्क में उच्च स्तर का कैफेटेरिया के साथ उचित पार्किंग व्यवस्था विकसित की जानी चाहिये। वर्षाकाल में पार्क के रखरखाव पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

गोल्डन पार्क में विकसित स्थल

जंगल सफारी के पश्चिम में पिछोला के दक्षिणी किनारे पर स्थित गोल्डन पार्क : भव्य एवं विशाल स्वरूप

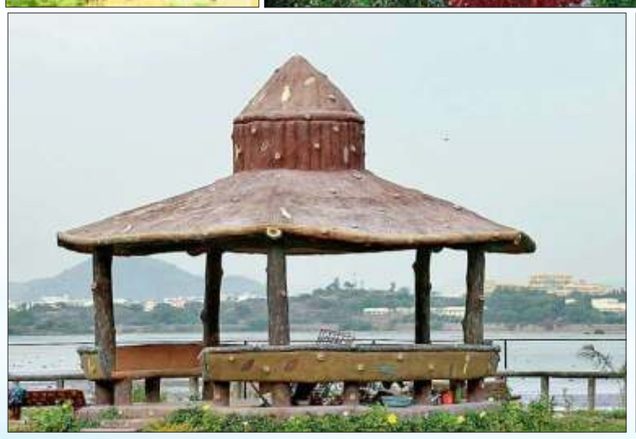

प्रताप पार्क, गोल्डन पार्क एवं जंगल सफारी पार्क को लोकप्रिय बनाने हेतु उपाय : पिछोला झील के पश्चिम–दक्षिण से दक्षिण किनारे एवं सीसारमा–दूधतलाई मार्ग के मध्य स्थित प्रताप पार्क, गोल्डन पार्क एवं जंगल सफारी पार्क उदयपुर के नवीन आकर्षण के केन्द्र बिन्दु के रूप में विकसित हुए हैं। ये तीनों पार्क पिछोला झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि करने के साथ इस छोर को अतिक्रमण मुक्त भी रख सकेंगे। नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास, वन विभाग आदि संस्थाओं के द्वारा काफी राशि व्यय करने के बावजूद भी पिछोला किनारे बहुत बड़े क्षेत्र में विकसित उक्त तीनों पार्क पर्यटकों एवं शहरवासियों के पसंदीदा स्थल नहीं बन सके हैं, क्योंकि :

1. इन पार्कों के निर्माण के उद्देश्य के अनुसार न तो इनका समुचित रखरखाव किया जा रहा है और न ही उसी अनुसार विकास की ओर अग्रसर है।
2. दूधतलाई से सीसारमा रोड तक अनेक दर्शनीय स्थल हैं जिनमें अष्टभुजा मन्दिर, खास ओदी, महाकाली मन्दिर, सीतामाता मन्दिर, जंगल सफारी, गोल्डन पार्क एवं प्रताप पार्क मुख्य है। पिछोला का यह क्षेत्र स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों का भी पसंदीदा स्थल हैं। ऐसे सुन्दर स्थलों के लिए पर्याप्त चौड़ाई एवं सभी मौसम के अनुकूल सड़क तक निर्मित नहीं की गयी है। प्राथमिकता के आधार पर इसका नवीनीकरण आवश्यक है।
3. गोल्डन पार्क एवं जंगल सफारी पार्क में प्रवेश मार्ग एवं पार्किंग व्यवस्था और अधिक व्यवस्थित होनी चाहिये।
4. इन पार्कों में प्रवेश शुल्क के साथ ही कैमरा ले जाने के लिए अतिरिक्त शुल्क लिया जाता है, जो व्यावहारिक नहीं है।
5. इन दोनों पार्कों के मध्य में एक उच्च स्तर का कैफेटेरिया पीपीपी मोड पर संचालित होना चाहिये। चूंकि इन सभी पर्यटक स्थलों के मध्य एक भी व्यवस्थित कैफेटेरिया नहीं है जिससे पर्यटक एवं शहरवासी यहाँ आने में असुविधा महसूस करते हैं। अतः इसे अतिशीघ्र प्रारम्भ किया जाना चाहिये।
6. पर्यटक विभाग की सूची में इन सभी सीलों के नाम भी सम्मिलित किये जाने चाहिये।
7. इन सभी रमणीक स्थलों के सुव्यवस्थित भ्रमण हेतु प्रशिक्षित गाइड प्रशासन की ओर से नियुक्त किये जाने चाहिये जिससे आमजन एवं पर्यटक इन स्थलों की सूक्ष्म जानकारी अर्जित कर सकें तथा इनके मुख्य आकर्षण को वे दूसरों के साथ भी साझा कर इन्हें और अधिक लोकप्रिय बना सकें।

श्री बैजनाथ महादेव मन्दिर : मुख्य प्रवेश द्वार

मन्दिर प्रांगण

भव्य मन्दिर एवं अन्य संरचनाएँ

श्री बैजनाथ महादेव मन्दिर : पिछोला झील के दक्षिणी छोर पर सीसारमा गांव है, जहां शिखरबन्द प्राचीन कला एवं कौशल का बैजनाथ महादेव का भव्य मन्दिर स्थित है। इस शिवालय को महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय की माता देवकुमारी ने बनवाया था। अपनी मातृभक्ति के कारण महाराणा संग्राम सिंह ने लाखों रुपये व्यय कर इस देवालय की प्रतिष्ठा वि.स. 1772 (ई.सं. 1715) माह सुदी 12 को बड़ी धूमधाम से की थी। राजमाता ने सुवर्ण का तुलादान किया था। मन्दिर में दो बड़ी–बड़ी शिलाओं पर खुदी हुई वि.सं. 1775 की प्रशस्तियाँ हैं जिनमें उक्त उत्सव का विस्तृत वर्णन है। यह प्रशस्ति 139 श्लोकों के 5 प्रकरणों में समाप्त हुई हैं। इसमें राणा लाखा से महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय तक का संक्षिप्त परिचय, राजमाता के द्वारा उक्त मन्दिर के बनने और उसकी प्रतिष्ठा के उत्सव के अतिरिक्त राजमाता के पिता के वंश वर्णन आदि बहुत सी बातें हैं।

सीसारमा नदी के उफान पर बाढ़ का पानी मन्दिर परिसर में पसरा हुआ

सीसारमा नदी का संकुचित भाग

सीसारमा नदी : शहर की मुख्य झील पिछोला का मुख्य जल स्रोत है।

उदयपुर से सीसारमा मार्ग पर सीसारमा नदी पर बनी पक्की पुलिया से आगे नदी की चौड़ाई एवं गहराई के संकुचित हो जाने से बाढ़ का पानी इसके उत्तरी क्षेत्र में सीसारमा गांव, खेतों एवं मन्दिर तक फैल जाता है।

हरिदासजी की मगरी : शहर के पश्चिमी दरवाजे ब्रह्मपोल के बाहर और तालाब के किनारे एक पहाड़ी हरिदासजी की मगरी के नाम से प्रसिद्ध है। इसके चारों तरफ महाराणा फतहसिंहजी ने पक्का कोट बनवाकर इसमें सांभर, चीतल, रोज आदि छोड़ दिए थे। यहां एक पुराना दो मंजिला मकान टेकरी पर था और एक दरीखाना नीचे था। इन दोनों की महाराणा फतहसिंहजी (1859–1869) ने मरम्मत करवाकर नीचे वाले दरीखाने पर एक छोटा महल बनवाकर उसमें सुन्दर चित्रकारी और महाराज कुमार भोपालसिंहजी का बाल्यावस्था का पूरे कद का चित्र दीवार पर बनवा दिया और एक वाडिया (चहार दीवारी का अहाता) भी खास ओदी माफिक बनवाया, जिसमें शेर–सूअर आदि की कुश्ती देखने योग्य होती थी। यहां भी सायंकाल के समय सूअरों को प्रतिदिन मक्की डाली जाती थी। यहां से महल, शहर, तालाब और पिछोला का मनोहारी दृश्य देखने के योग्य हैं। मगरी से एक सड़क ब्रह्मपोल दरवाजे की ओर तथा दूसरी फतहसागर को जाती है। वर्तमान में यहाँ पर उदय विलास एवं ट्राईडेन्ट के अतिरिक्त अनेक उच्च स्तरीय होटल्स स्थित है। साथ ही यहाँ पर व्यावसायिक एवं आवासीय कॉलोनियाँ भी विकसित हो चुकी है।

वर्तमान में होटल ट्राइडेन्ट के परिसर में स्थित बारा महल के दक्षिण में एक पहाड़ी को वन्य जीव अभयारण्य में परिवर्तित कर दिया गया है, जो मोर एवं प्रवासी पक्षियों सारस, सैंडग्राउस आदि का आवास स्थल है। इसके अतिरिक्त इसे चित्तीदार हिरण एवं लंगूर के लिए आरक्षित कर दिया गया है। इसमें विविध प्रकार के सरीसृप एवं भारतीय जंगली सूअर भी देखे गये हैं।

सोनी जी की बाड़ी एवं हरिदासजी की मगरी का प्राकृतिक स्वरूप, जहाँ से पिछोला झील की विशालता के साथ राजमहल एवं ताज लेक पैलेस का दर्शनीय स्वरूप दृष्टिगत होता है

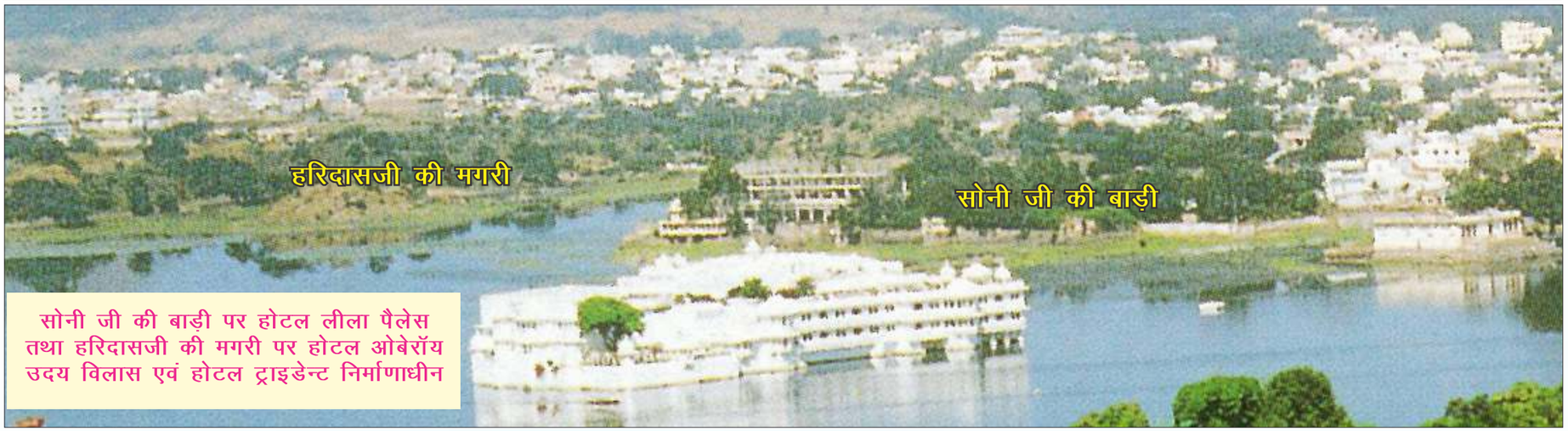

सोनी जी की बाड़ी पर होटल लीला पैलेस तथा हरिदासजी की मगरी पर होटल ओबेरॉय उदय विलास एवं होटल ट्राइडेन्ट निर्माणाधीन

Bara Mahal : It was built in 1859-1869 by Shri Maharana Fateh Singh Ji Mewar. It is set within lush green gardens by the side of the picturesque lake Pichola and has an enclosure where many splendid hunt and combat between the tiger and the wild boar took place. The forest has now been converted into a small wild life sanctuary near hotel Trident which is the habitat peacocks and migratory birds like Sarus and Sandgrouse. It is also a reserve for the popular spotted deer a common langur. A variety of reptiles and the Indian wild Boar.

To prestigious and renowned hotels Oberai Udai Vilas and Trident were constructed under the green surrounding and now they are fully operational.

मोर एवं प्रवासी पक्षी

शेर एवं सूअर का कुश्ती स्थल

जीव अभयारण्य में चित्तीदार हिरण

होटल लीला पैलेस (सोनी जी की बाड़ी) : दी लीला पैलेस अरावली पर्वत श्रृंखला एवं सिटी पैलेस के लुभावने दृश्य के साथ पिछोला झील के उत्तरी तट पर प्राकृतिक वादियों में स्थित है, इस स्थान को पूर्व में सोनी जी की बाड़ी के नाम से जाना जाता था। इसके 72 कमरे और 8 सुइट मेहमानों को राजसी समय के शाही जीवन की भव्यता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं। हेरिटेज और लेक व्यू रूम राजस्थान की हस्तकला का प्रतिनिधित्व करने वाली कलाकृतियों और साज–सज्जा के साथ बारीक रूप से सजाए गए हैं। सुइट्स में वास्तुकला की भावना पैदा होती है जिसमें पारम्परिक भारतीय महलों के समृद्ध और प्राकृतिक विवरण शामिल हैं। लीला पैलेस, उदयपुर मेहमानों की शैली और आराम में समृद्ध विरासत की खोज करने के लिए एक शांत वातावरण प्रदान करता है। लीला पैलेस, उदयपुर राजसी उपस्थिति के साथ लक्जरी और सबसे लोकप्रिय होटलों में से एक हैं। ट्रिप एडवाइजर के ट्रेवलर चॉइस में वर्ष 2018 के दुनिया व भारत के सर्वश्रेष्ठ होटलों में उदयपुर की इस होटल को भी चुना गया। देश के टॉप 25 होटल्स में उदयपुर का दी लीला पैलेस दूसरे स्थान पर रहा। इस लिस्ट में ताज लेक पैलेस चौथे और ऑबेरॉय उदय विलास 7वें स्थान पर रहे हैं। वहीं दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 25 होटलों में भी दी लीला पैलेस 13वें स्थान पर रहा है।

होटल लीला पैलेस : पिछोला की जल सतह पर तैरती हुई सी दृश्यमान होती है।

होटल में सुन्दर स्विमिंग पूल

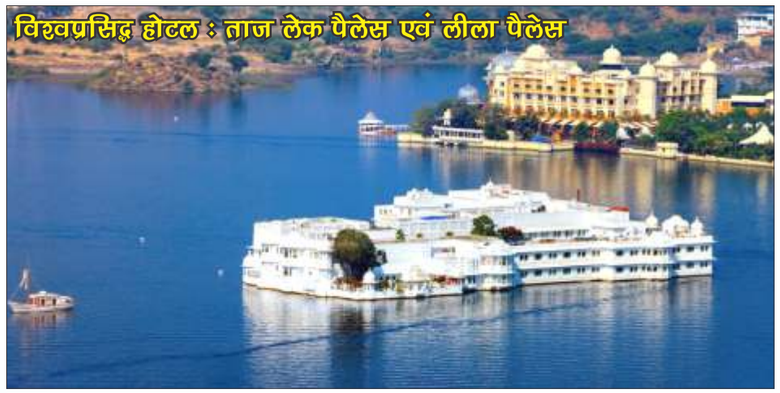
विश्वप्रसिद्ध होटल : ताज लेक पैलेस एवं लीला पैलेस

होटल के पृष्ठभाग पर नीमचमाता मन्दिर

होटल लीला पैलेस का हरीतिमा युक्त विशाल परिसर, सुन्दर प्रांगण एवं आधुनिक जेटी के साथ पृष्ठभाग में शहर का सुन्दर नजारा

होटल का आन्तरिक भव्य स्वरूप

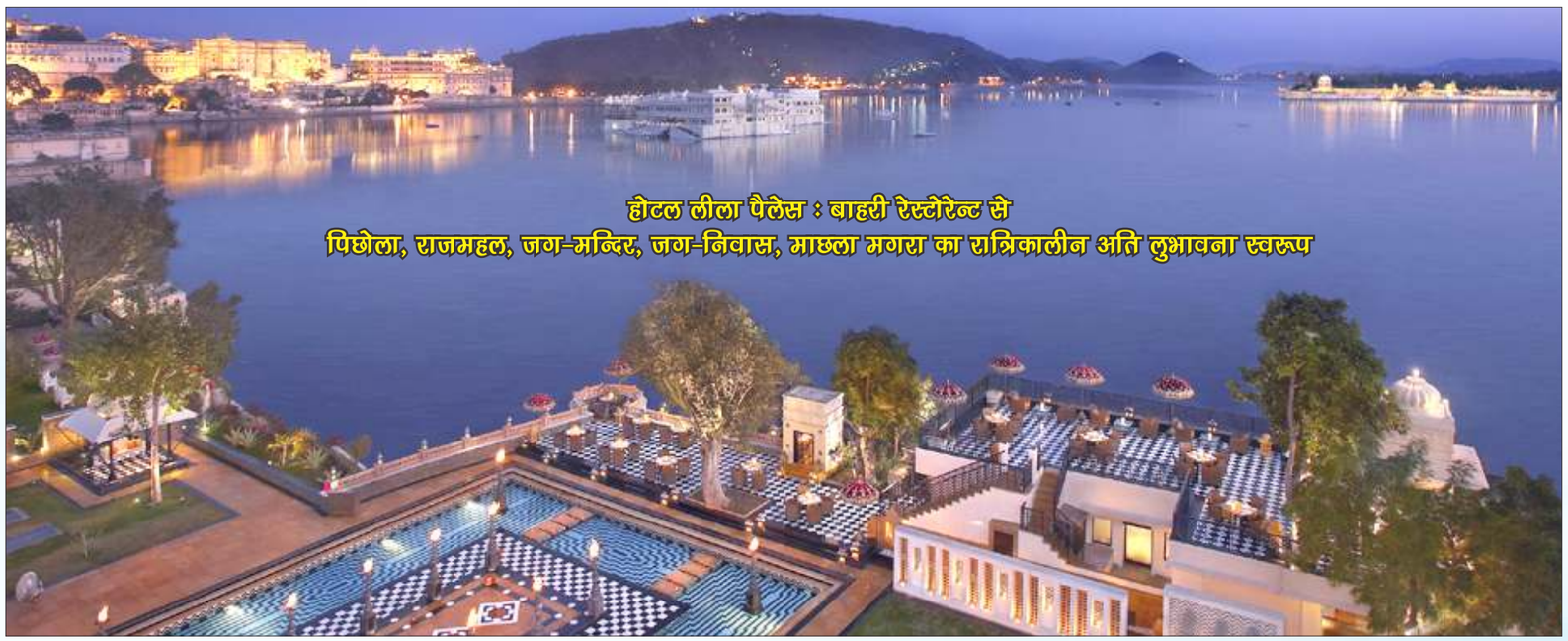
होटल लीला पैलेस : बाहरी रेस्टोरेन्ट से
पिछोला, राजमहल, जग-मन्दिर, जग-निवास, माछला मगरा का रात्रिकालीन अति लुभावना स्वरूप

होटल ट्राइडेन्ट : पिछोला के किनारे स्थित होटल ट्राइडेन्ट उदयपुर में झीलों के किनारे स्थित प्रतिष्ठित होटलों में से एक है। यह सिटी पैलेस, जगमन्दिर, ताज लेक पैलेस, मानसून पैलेस आदि के मनोहारी दृश्य को निहारने के लिए उपयुक्त है। इस होटल में उदयपुर के स्थापत्य और सांस्कृतिक विरासत के ओत–प्रोत 137 कमरे और 4 सुइट्स उपलब्ध हैं। साथ ही यह पारम्परिक एवं प्राकृतिक कलाकृतियों की आकर्षक साज–सज्जा से सम्पन्न है तथा यह उदयपुर की शान एवं खूबसूरती को बखूबी बयां करता है। इस होटल के साथ 'बारा महल' नामक एक पुरातत्व महत्व का महल जुड़ा हुआ है।

इसका निर्माण 1859–1869 में श्री महाराणा फतहसिंह जी ने करवाया था। यह सुरम्य झील पिछोला के किनारे हरे–भरे बगीचों के भीतर स्थित है और इसमें एक स्थल, जहां शेर और जंगली सूअर के बीच लड़ाइयाँ करायी जाती थी। इसमें स्थित जंगल को एक छोटे वन्यजीव अभयारण्य में परिवर्तित कर दिया गया है जिसमें सारस और सैंडग्रास जैसे प्रवासी पक्षी विचरण करते हैं। यह प्रसिद्ध चित्तीदार हिरण, सामान्य लंगूर, विभिन्न प्रकार के सरीसृप और भारतीय जंगली सूअरों के लिए भी आरक्षित है।

मुख्य परिसर प्रवेश द्वार

होटल का मुख्य भवन चहुँओर से हरितिमा एवं पृष्ठभाग में पिछोला

गैलेरी की अदम्य सुन्दरता

होटल का हरियालीयुक्त परिसर एवं पिछोला

होटल के बाहर बगीचा एवं पृष्ठभाग में पिछोला

होटल ट्राइडेन्ट का मुख्य प्रवेश गेट

होटल के भीतर के सुन्दर स्वरूप

होटल ओबेरॉय उदय विलास : उदय विलास पिछोला झील के पश्चिमी किनारे स्थित हरिदासजी की मगरी क्षेत्र में निर्मित है, जो पूर्व में मेवाड़ के महाराणाओं का एक शिकार स्थल था। यह राजस्थान के साथ भारत की सबसे बेहतरीन हेरिटेज स्टाइल की एक लक्जरी होटल है, जो मेवाड़ी स्थापत्य तत्वों का उपयोग करते हुए बनायी गयी है। यह बड़े गुम्बद, कपोल, छतरियाँ, सजावटी मण्डप आदि मेवाड़ी विशेषताओं से परिपूर्ण है। वर्ष 2015 में इसे विश्व में सर्वश्रेष्ठ होटल का दर्जा प्राप्त हुआ था। यहाँ पर आने वाले मेहमानों को मेवाड़ की शान, स्नेह एवं शाही भव्यता से परिचित कराया जाता है। यहाँ पर पर्यटक विशाल पिछोला झील के विभिन्न घाट, सिटी पैलेस, ताज लेक पैलेस, जग–मन्दिर आदि के सुन्दर एवं भव्य दृश्यों का आनन्द लेते हैं। इसमें 5 सूइट्स सहित 90 कमरे हैं तथा पूरा परिसर एक दुधिया सफेद एकरसता लिए हुए है, जो एक समग्र शांति का अनुभव कराता है। इसमें एक आयताकार स्विमिंग पूल है जो काले ग्रेनाइट व सफेद संगमरमर से निर्मित है। पूरे परिसर में फव्वारें एवं परावर्तक पूल दर्शनीय हैं। एक शानदार एवं परिष्कृत लॉबी उदयविलास की आंतरिक विशेषताओं को निर्धारित करती है। सोने की पत्ती पर पुष्प चित्र के साथ एक बड़ा गुम्बद भी शाही महत्त्व को दर्शाता है।

होटल उदय विलास का वृहद् स्वरूप, चारों ओर हरियाली एवं अरावली पर्वत शृंखलाओं से घिरा हुआ

होटल का पूर्ण स्वरूप एवं पृष्ठभाग में स्थित पिछोला

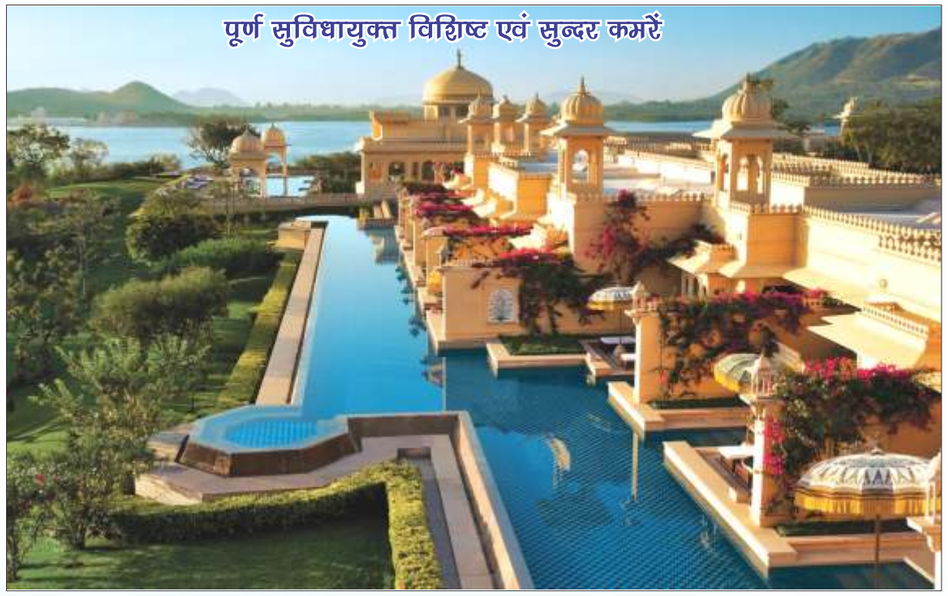
पूर्ण सुविधायुक्त विशिष्ट एवं सुन्दर कमरें

मेवाड़ी वास्तुकला के अनुरूप गुम्बद

भव्य प्रवेश मार्ग

रात्रिकाल में होटल की सुन्दर छटा

भव्य प्रवेश मार्ग

पिछोला के ऐतिहासिक घाट : उदयपुर शहर के ऐतिहासिक महत्त्व के घाटों का जल मानव जीवन का अहम् हिस्सा है। यहां जल को देवता माना जाता है। जल जीवन प्रदाता है। इसे जल नारायण का नाम भी दिया गया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार नदी एवं झीलों के तट पर घाट बनवाए जाते रहे हैं ताकि घाटों से जल की पूजा–अर्चना की जा सके। छोटी–बड़ी सीढ़ियों से इन घाटों का निर्माण इस तरह होता था कि पानी कम या ज्यादा होने पर भी इनका उपयोग जनमानस आसानी से कर सके। ये घाट स्नान से लेकर ध्यान तक, प्रत्येक पर्व, उत्सव, यात्रा, श्राद्ध, संकल्प के प्रमुख सोपान हैं।

भारतीय संस्कृति एवं परम्परानुसार मेवाड़ के महाराणाओं ने मेवाड़ के बाहर कई पवित्र स्थलों पर घाटों का निर्माण कराया था जहां कोई भी श्रद्धालु स्नान कर पूजा–तर्पण के कार्यों को सम्पन्न कर सके। इसी क्रम में उदयपुर शहर के मध्य स्थित पिछोला झील के किनारों पर कई ऐतिहासिक घाटों का निर्माण जन–कल्याण, जन–सुविधा एवं धार्मिक आयोजनों को ध्यान में रखकर किया गया था। घाटों की बात जब आती है तो मन सीधे बनारस पहुँच जाता है, जहां बड़ी संख्या में लोग भाांति, सुकून के साथ मोक्ष की तलाश में पहुँचते हैं। हर शाम होने वाली गंगा मैया की आरती देशी–विदेशी पर्यटकों को घाट की ओर खींच लाती है, मगर उदयपुर के घाट भी बनारस के घाटों से कुछ कम नहीं हैं। शांति, सुकून और खूबसूरती से परिपूर्ण ये घाट लोगों का दिल जीत रहे हैं। लोग इन घाटों के किनारों पर बैठकर झील की खूबसूरती को घंटों निहारते हैं जिनमें देशी–विदेशी पर्यटक भी पीछे नहीं रहते। वे भी यहाँ सुकून पाकर प्रफुल्लित होते हैं एवं शांति महसूस करते हैं।

पिछोला झील के पूर्व में निर्मित राजघाट जिसे गणगौर घाट भी कहा जाता है, का भी अपना ऐतिहासिक महत्व रहा है। यहां रियासतकाल में गणगौर के त्यौहार पर महाराणा अपने सामन्तों के साथ उपस्थित होते थे और घाट से नाव पर सवार होकर पिछोला से गणगौर माता के दर्शन करते थे। मौके पर उदयपुर व बाहर से आए हुए सभी लोग गणगौर उत्सव में श्रद्धा के साथ सम्मिलित होते थे। इसी कारण यह उदयपुर का प्रमुख व ऐतिहासिक महत्व का घाट रहा है, जहां एक साथ सैकड़ों लोग एकत्रित होते हैं। जलझूलनी एकादशी पर इसी घाट पर रामरेवाड़ियों में ठाकुरजी को लाकर उनके स्नान व पूजा–अर्चना की प्राचीन परम्परा है जिसमें सभी समाज के लोग इकट्ठा होते हैं। घाटों के किनारों पर कई छोटे–बड़े मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था ताकि इन घाटों की पवित्रता बनी रहे और झील भी स्वच्छ रहे।

घाटों का सिरमौर गणगौर घाट

प्रसिद्ध घाट

मांजी का घाट
अमराई घाट
पंचदेवरिया घाट
हनुमान घाट
भीम परमेश्वर घाट
हत्था पोल घाट
रोवणिया घाट
नाथी घाट, खुर्रा घाट
बोरसली घाट
गणगौर घाट
नाव घाट
लाल घाट
पीपली घाट
रूप घाट, अखाड़ा घाट
मेहराव घाट
पार्वती विलास घाट
बंसी घाट

पिछोला के किनारे स्थित सभी प्रसिद्ध घाट एवं मन्दिर के साथ वृहद् उदयपुर शहर का मूल स्वरूप

पिछोला के पंचदेवरिया घाट, हनुमान घाट, रोवणिया घाट, भीम परमेश्वर घाट, बोरसली घाट आदि पर स्थित मन्दिरों पर संध्या में होने वाली आरती और उसमें बजने वाली घंटियों की पावन धुन मन को विशेष आनन्द प्रदान करती है तथा काशी, हरिद्वार, अयोध्या के घाटों जैसा आभास प्रदान करती है।

झील किनारे बने कई छोटे–बड़े घाटों का मानव समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इन घाटों पर हमारे समाज की कई परम्पराओं का निर्वहन अनवरत आज भी होता आ रहा है। पहले कुछ घाट शहर के नागरिकों के कपड़े धोने व नहाने के लिए उपयोग में आते थे लेकिन जब से प्रशासन ने इनकी खूबसूरती बनाए रखने एवं झील का पानी पेयजल के लिए आरक्षित होने से इन्हें ''नो बाथिंग एवं वॉशिंग'' जोन बनाया गया है, तब से ये घाट युवाओं एवं पर्यटकों के पसंदीदा स्थल बन गए हैं। उदयपुर के इन खूबसूरत घाटों पर समय बिताने के लिए पहुंचने वालों में सर्वाधिक युवाजन हैं एवं ये घाट युवाओं के फेवरेट डेस्टिनेशन बन गये हैं। यहाँ वे अपने ईष्ट मित्रों के संग पहुँचते हैं और समय बिताते हैं। इसके अलावा खूबसूरत नजारों को अपने मोबाईल कैमरे में कैद कर सेल्फी लेते हैं। इन घाटों के बैकग्राउण्ड में भव्य सिटी पैलेस एवं बड़ी–बड़ी हवेलियाँ, होटल्स आदि नजर आती हैं जो सेल्फी की खूबसूरती और बढ़ा देते हैं। इन घाटों की खूबसूरती बड़े–बड़े फिल्म निर्देशकों को भी अपनी ओर खींचकर लाई हैं एवं यहां कई फिल्मों, सीरियल्स, डॉक्यूमेन्ट्रीज, रियलिटी शो और एड की शूटिंग हो चुकी है।

इन ऐतिहासिक घाटों व झील को लेकर सबसे बड़ी चिन्ता की बात यह है कि लोगों के मन में अब इन धरोहरों के प्रति उतना आदर नहीं रहा, जितना पहले होता था। कई असामाजिक तत्व इन धरोहरों को खुर्द–बुर्द कर रहे हैं। बस कोई आयोजन या उत्सव हो तो भीड़ की तरह आए और इन घाटों को गन्दा कर चले जाते हैं। झील की पवित्रता और स्वच्छता का कोई ध्यान नहीं रखता। सरकार भी इन धरोहरों के प्रति इतनी सजग नहीं है और जो प्रयास किए जा रहे हैं, उन्हें भी मैं ''ऊँट के मुँह में जीरा'' समान समझता हूँ।

उदयपुरवासियों को हमारी धरोहरों और झीलों का सम्मान करना सीखना होगा। इनका आदर भी हमारे पूर्वजों की तरह करना होगा। ये प्राचीन धरोहरें अपना अस्तित्व बचाने हेतु गुहार लगा रही हैं। ये झीलें हमारी धरोहरें हैं इनसे ही उदयपुर का पर्यटन व्यवसाय है, जो लाखों लोगों को रोजगार प्रदान कर रहा हैं।

इस हेतु ये घाट स्नान से लेकर ध्यान तक, प्रत्येक पर्व, उत्सव, यात्रा, श्राद्ध व संकल्प के प्रमुख सोपान है, इसकी अनदेखी नहीं करनी चाहिये। ये हमारी विरासत हैं, इन्हें बचाना होगा। घाटों के आसपास वाहनों की पार्किंग नहीं की जानी चाहिये। रात्रिकाल में पूर्ण प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिये। स्थान–स्थान पर डस्टबिन भी सुव्यवस्थित होने चाहिये।

जग–निवास के सामने पिछोला के पश्चिमी तट पर सरदार स्वरूप श्यामजी का मंदिर और क्रमवार अमरकुण्ड तक अमराई घाट, आमेट की हवेली, उदयश्यामजी का मंदिर, पिपलिया की हवेली, पंचदेवरिया, थामला की हवेली, हनुमान घाट, रोवणिया घाट और भीम परमेश्वर जी का मन्दिर स्थित हैं।

पिछोला किनारे स्थित हनुमान घाट एवं दायजीराज की पुलिया

पिछोला किनारे स्थित रोवणिया घाट, बोरसली घाट, गणगौर घाट, नाव घाट, लाल घाट, पीपली घाट, रूप घाट, मेहराब घाट, जनाना घाट, बंसी घाट का मनोरम दृश्य

माँजीराज एवं अमराई घाट : श्री सरदार स्वरूप श्यामजी का मन्दिर श्री श्री 1008 चारभुजाजी (भगवान विष्णु), जिसे माँजी का मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। महाराणा सरदार सिंह जी की विधवा माँजीराज ने इस मन्दिर को बनवाया था। यह पिछोला के उत्तरी छोर पर नागा नगरी में तीन तरफ से पानी से घिरे हुए टापू पर स्थित है। मन्दिर मुख क्षेत्र में स्थित घाट को माँजी घाट एवं अमराई घाट के नाम से जाना जाता है। पूर्व में इसे जामुन घाट भी कहा जाता था। इस मन्दिर के बाहर दोनों तरफ तबारियाँ हैं, जो मृत्यु उपरान्त कर्मकाण्ड क्रिया के लिए उपयोग में आती हैं। यह मन्दिर अन्दर से रियासती भवन भी लगता है। जानकारों के अनुसार इस मन्दिर में श्री दयानन्द सरस्वती करीब दो महीने विराजमान रहे। उन्होंने अपने ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की पृष्ठभूमि यहीं पर लिखी तथा बाद में गुलाब बाग स्थित नवलखा महल (आर्य समाज भवन) में रहते हुए इसे पूर्ण किया गया। यह मन्दिर वर्तमान में देवस्थान विभाग की सम्पत्ति है एवं उनके नियंत्रण में है।

अमराई घाट विशेष रूप से युवा जनों में बहुत लोकप्रिय है। यह घाट एक सुखद अनुभव वाला स्थल है, जहाँ पर उदयपुर के पुराने शहर नागा नगरी क्षेत्र की पुरानी सड़कों से होकर गुजरना पड़ता है। कबूतर और अन्य पक्षियों के साथ खुशी से झूमते नाचते पवन संग अमराई घाट पर पिछोला का पानी अलग हो जाता है और सुनहरा सूरज एक आकर्षक दृश्य देने के साथ पिछोला झील में प्रवेश करने का फैसला करता है। साथ ही यह घाट जग–निवास (ताज लेक पैलेस), जग–मन्दिर, शिव विलास आदि हेरिटेज होटलों एवं सामने स्थित अनेक घाटों का विशाल दृश्य प्रदान करता है। अमराई घाट के परिसर के सौन्दर्यीकरण एवं प्रकाश व्यवस्था का कार्य उदयपुर नगर निगम द्वारा देवस्थान विभाग की सहमति से किया गया है। भव्य बगीचा, जन सुविधा कक्ष, पत्थर की बेन्च, फ्लोरिंग आदि कार्य करवाकर इसे एक उच्च स्तर के दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया गया है। झील के किनारे पानी के मध्य सेल्फी पॉइन्ट या फोटोग्राफी हेतु एक जेटी भी बनाई गई है।

जैसे ही पिछोला झील के पानी में सूरज की किरणें प्रकाशमान होती हैं, यह घाट स्थानीय लोगों से भर जाता है। जो तैराकी के शौकीन होते हैं, वे घाट से पिछोला झील में गोता लगाते हैं और झील के साफ पानी को ग्रहण करते हैं। दिन के समय घाट पर भीड़ कम रहती है लेकिन जैसे–जैसे सूरज ढ़लता जाता है वैसे–वैसे युवाओं एवं पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है। यहाँ वरिष्ठ एवं युवाजन बेन्चों पर बैठकर लहरों से उठती हुई जलराशि, बादलों, सूर्यास्त एवं बारिश के सुहावने मौसम का आनन्द लेते हैं। प्री–वेडिंग सहित विभिन्न फोटो शूट करने के लिए भी यह एक सुन्दर स्थल है। इस प्रमुख स्थल पर तेज गति वाली हवा के कारण पतंग उड़ाने वाले बच्चों को भी देखा जा सकता हैं। अमराई घाट परिसर के रखरखाव को और अधिक व्यवस्थित करने के साथ रेस्टोरेन्ट, सुविधा कक्ष के अतिरिक्त इसके पश्चिम में नाव घाट से नावों का संचालन प्रारम्भ किया जाना चाहिये। साथ ही इस घाट की तर्ज पर ही उदयपुर के प्रत्येक घाट को विकसित किये जाने की पहल की जानी चाहिये।

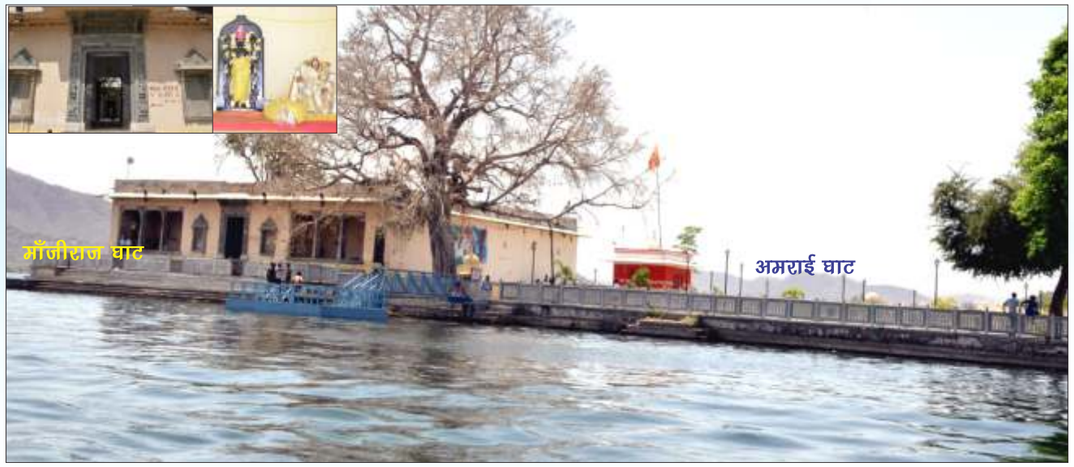

माँजीराज घाट से पिछोला का विशाल एवं शांत स्वरूप

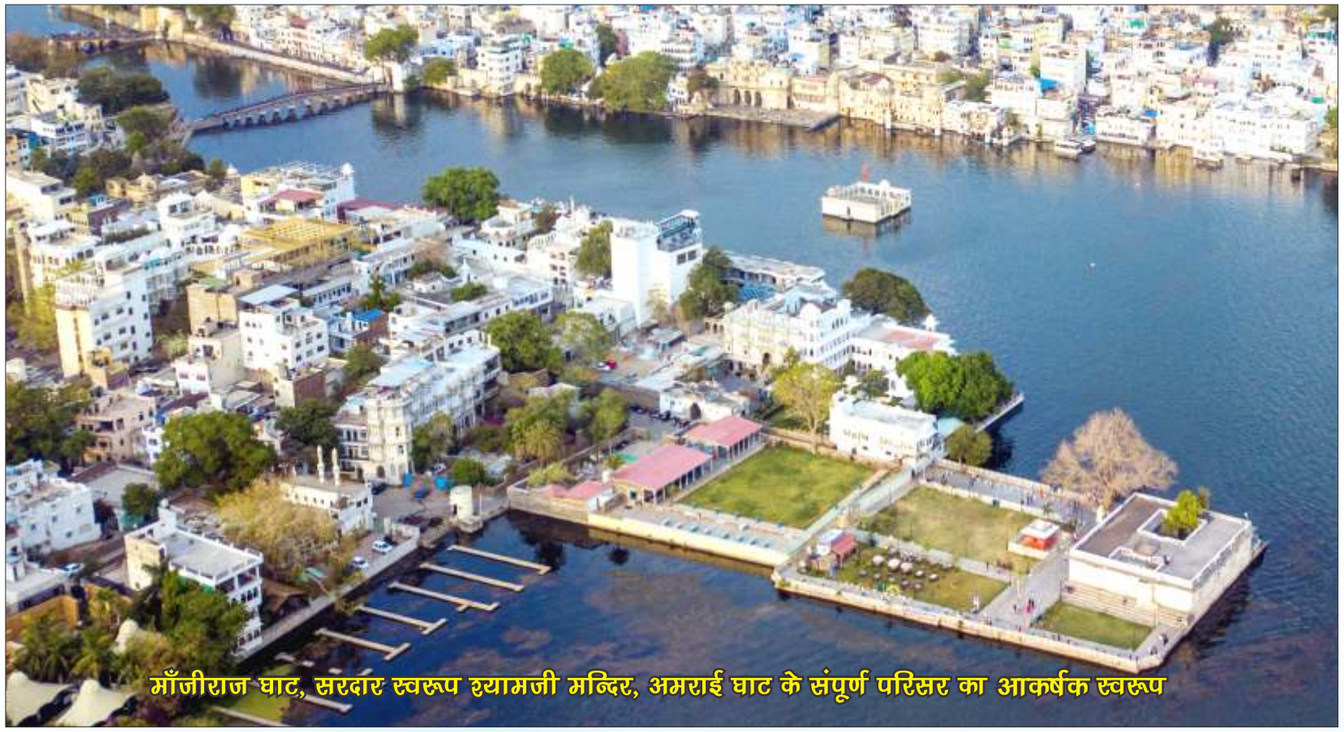
माँजीराज घाट, सरदार स्वरूप श्यामजी मन्दिर, अमराई घाट के संपूर्ण परिसर का आकर्षक स्वरूप

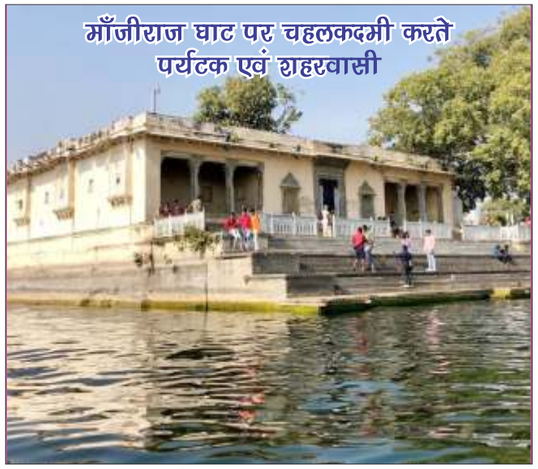
माँजीराज घाट पर चहलकदमी करते पर्यटक एवं शहरवासी

अमराई घाट पर पक्षियों एवं पर्यटकों की अद्भुत सहभागिता

चारभुजा मन्दिर की पूर्वी दीवार पर महादेव का विशाल स्वरूप

माँजीराज घाट से सूर्यास्त का सुहावना दृश्य

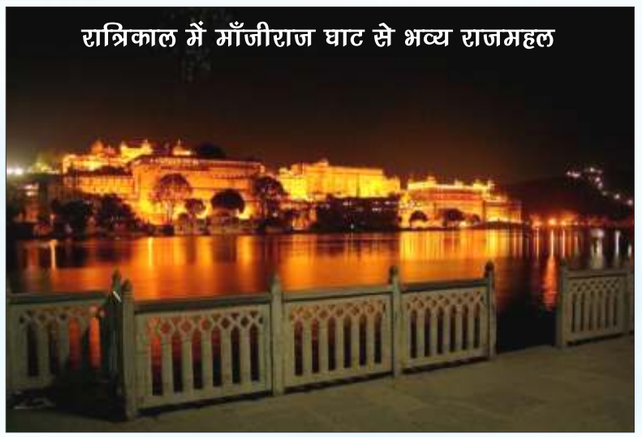
रात्रिकाल में माँजीराज घाट से भव्य राजमहल

उदयश्यामजी का मन्दिर : पिछोला झील के पश्चिमी छोर पर, मोहन मन्दिर के सामने श्री श्री श्री 1008 ठाकुर जी श्री उदयश्यामजी का भव्य मन्दिर आमेट (होटल आमेट हवेली) एवं पिपलिया ठिकाने (लेक पिछोला होटल) की हवेलियों के मध्य में स्थित है।

पंचदेवरिया घाट एवं मन्दिर : पिछोला झील के पश्चिमी छोर पर थामला हाउस के पास इस घाट पर भगवान शिव के मुख्य मन्दिर के साथ पाँच देवरिया हैं, जिनमें भगवान शिव, गणपति, सूर्यनारायण, लक्ष्मीनारायण एवं दुर्गामाताजी की भव्य मूर्तियाँ प्रतिस्थापित है। इस मन्दिर के उत्तरी छोर पर एक बड़े हॉल में हनुमानजी, राम दरबार–राम–लक्ष्मण–सीता एवं राधा–कृष्णजी के मन्दिर भी भव्यता के साथ शोभायमान हो रहे हैं। वर्तमान में यह परिसर श्री बजरंगबली प्रचार समिति द्वारा संरक्षित है। यहां नियमित पूजा–अर्चना होती है। इस घाट के पास से सिवरेज एवं गन्दा पानी पिछोला झील में अनेक प्रयासों के बावजूद भी समाहित हो रहा है। इसे रोकना पिछोला झील के जल की शुद्धता के साथ इस परिसर की पवित्रता के लिए भी नितान्त आवश्यक है।

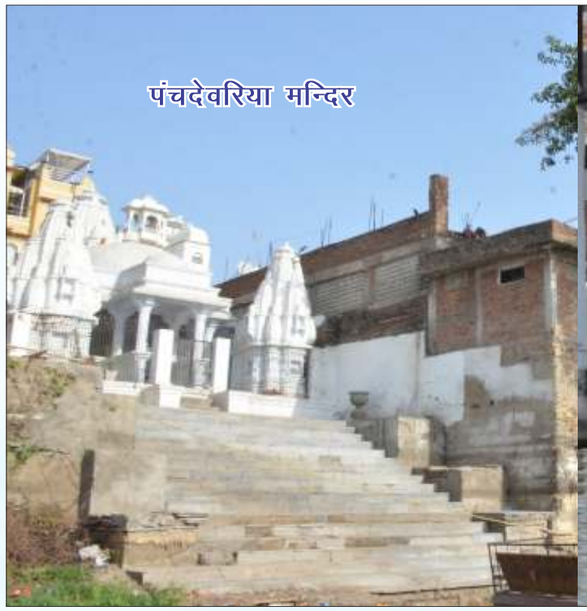

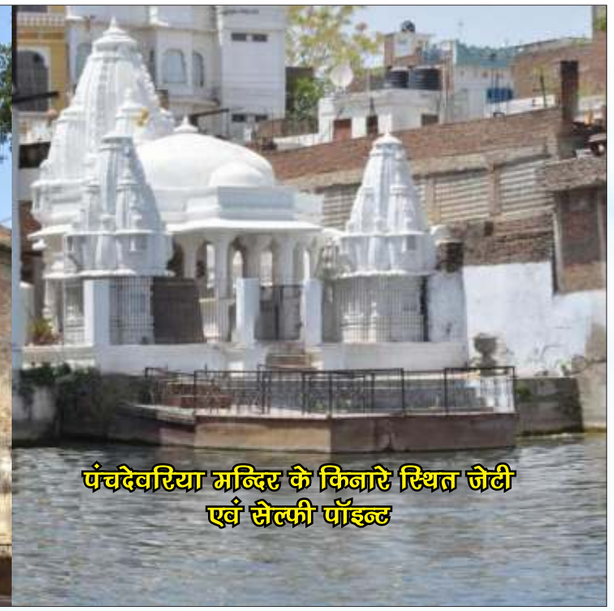

रोवणिया घाट : हनुमान घाट के उत्तरी क्षेत्र में रोवणिया घाट स्थित है, जहां पर श्री जगाजगेश्वर महादेव एवं रिद्धि–सिद्धि हनुमान मन्दिर हैं।

अमरकुण्ड के पश्चिमी छोर पर **श्री भीम परमेश्वर महादेव मन्दिर तथा श्री जाड़ा गणेशजी मन्दिर** (ब्रह्मपोल अन्दर) स्थित है।

हनुमान घाट : पिछोला के पश्चिमी तट पर अनेक प्रतिष्ठित मन्दिर होटल एवं दायजी सेतु के पास स्थित घाट जो अनेक मन्दिरों से घिरा हुआ है, उसे हनुमान घाट के नाम से जाना जाता है। घाट के दोनों ओर सुन्दर एवं तीन तरफा पानी से घिरी हुई छतरियाँ हैं। यहाँ से पिछोला के पूर्वी तट से लगे अनेक घाट रोवणिया घाट, खुर्रा बोरसली, हत्था पोल, गणगौर घाट, नाव घाट, लाल घाट आदि एवं मोहन मन्दिर, महादेव मन्दिर, तारकेश्वर महादेव, चौमुखा महादेव, लिम्बज माताजी, हनुमान मन्दिर आदि एवं हिलोरें लेती विशाल जल राशि को दृष्टिपात करते हुए पर्यटक एवं शहरवासी आत्म–विभोर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त इस घाट पर एवं छतरियों में सायंकाल वेला में इस घाट एवं पूर्वी तट पर स्थित मन्दिरों में आरती, प्रार्थना एवं घंटियों की मधुर धुन पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। यह घाट एवं मन्दिर सार्वजनिक प्रन्यास ठाकुरजी श्री सीता रघुनाथ जी महाराज के अन्तर्गत है। यहाँ का श्री रामेश्वर महादेव मन्दिर महाराणा भीमसिंहजी के काल में बाबा हनुमान दास जी महाराज द्वारा बनवाया गया। वे महान योगी पुरुष थे। इस मन्दिर के साथ संत निवास स्थित है जिसके नीचे संतों के प्रातःकाल दर्शन एवं पूजन के लिए सीता–राम एवं भगवान कृष्ण के छोटे मन्दिर हैं। श्री रामेश्वर महादेव मन्दिर के उत्तरी छोर पर राम–लक्ष्मण–सीता एवं हनुमानजी मन्दिर में इनकी भव्य प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। इस मन्दिर परिसर से लगे हुए विशाल चारभुजा नाथजी एवं पंचमुखी हनुमान मन्दिर इस घाट की शोभा बढ़ा रहे हैं। इस परिसर में स्थित सभी मन्दिरों में नियमित पूजा–अर्चना होती हैं।

दो विशाल छतरियों के मध्य स्थित हनुमान घाट

हनुमान घाट पर स्थित सभी मन्दिर एकलिंगजी ट्रस्ट, उदयपुर के प्रबन्ध क्षेत्र में आते हैं। हनुमान घाट के पश्चिमी छोर के मध्य सड़क के उस पार "हनुमान मन्दिर का नोहरा" स्थित है, जहां संतों के साथ आने वाले हाथी बन्धते थे। यह घाट एवं यहां पर स्थित मन्दिर अपनी विशेषताओं से शहरवासियों के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय एवं वन्दनीय है। इस परिसर को एकलिंगजी ट्रस्ट एवं यहां का सार्वजनिक प्रन्यास, अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं एवं नगर निगम के सहयोग से और अधिक सुन्दर बनाया जाना चाहिये क्योंकि इसकी पर्याप्त संभावनाएँ यहां पर उपलब्ध है, अतः इससे देशी एवं विदेशी पर्यटकों के मध्य यह स्थान और अधिक दर्शनीय एवं लोकप्रिय हो सकेगा।

झील की पूर्ण भराव क्षमता पर हनुमान घाट

हनुमान घाट के सामने प्रसिद्ध गणगौर, बोरसली एवं अन्य घाट
बोरसली घाट पर स्थित मन्दिरों में आरती के समय का नजारा यहाँ से काफी चित्ताकर्षक होता है।

हनुमान मन्दिर

राम–लक्ष्मण–सीता मन्दिर

रामेश्वर महादेव मन्दिर

हनुमान घाट के संत निवास स्थल पर सुन्दर पेन्टिंग्स

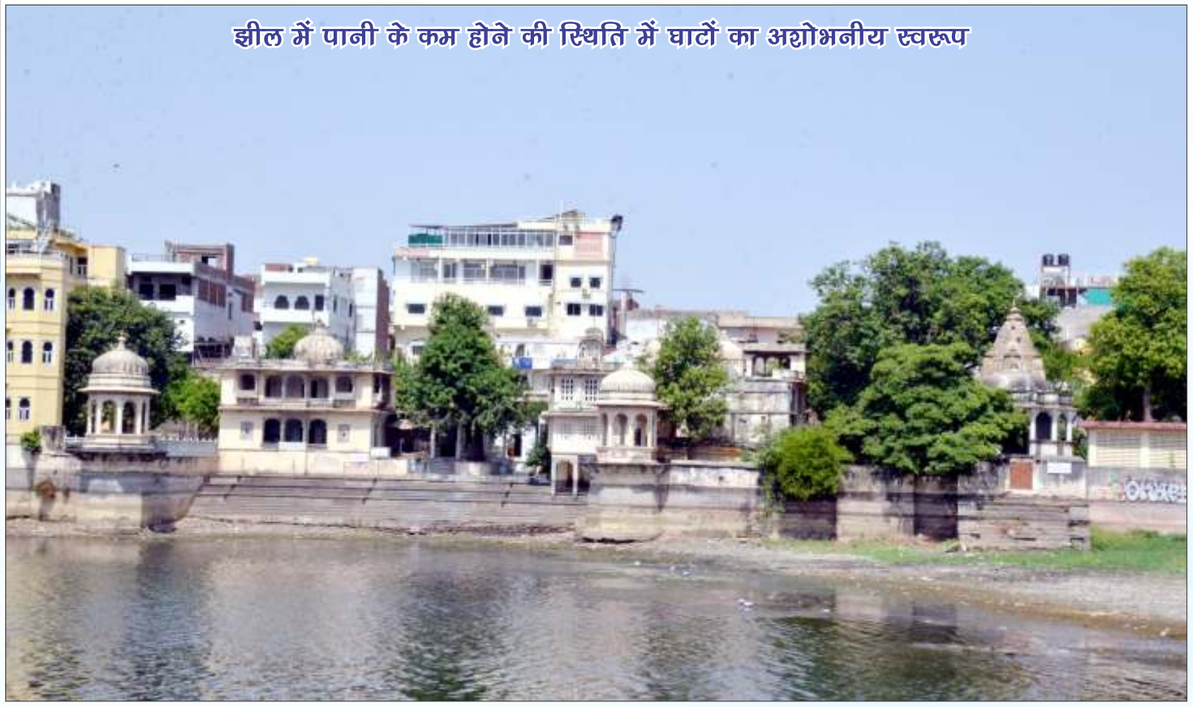
झील में पानी के कम होने की स्थिति में घाटों का अशोभनीय स्वरूप

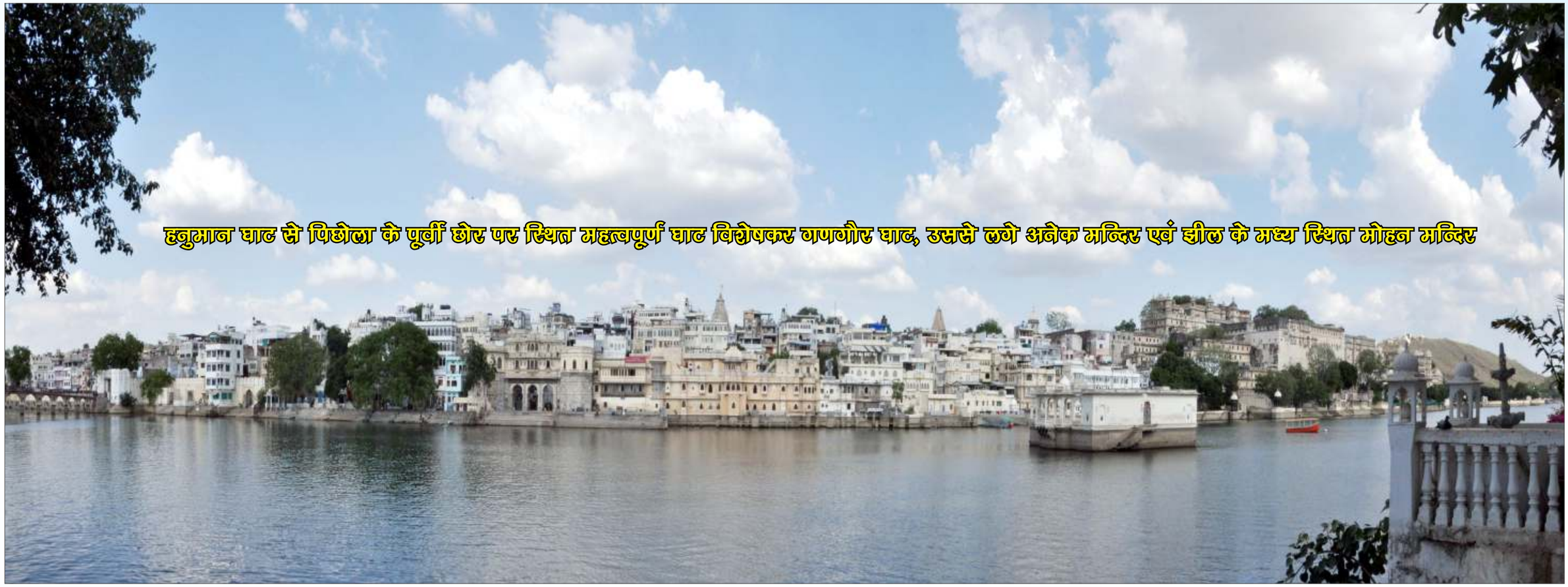

हनुमान घाट से पिछोला के पूर्वी छोर पर स्थित महत्वपूर्ण घाट विशेषकर गणगौर घाट, उससे लगे अनेक मन्दिर एवं झील के मध्य स्थित मोहन मन्दिर

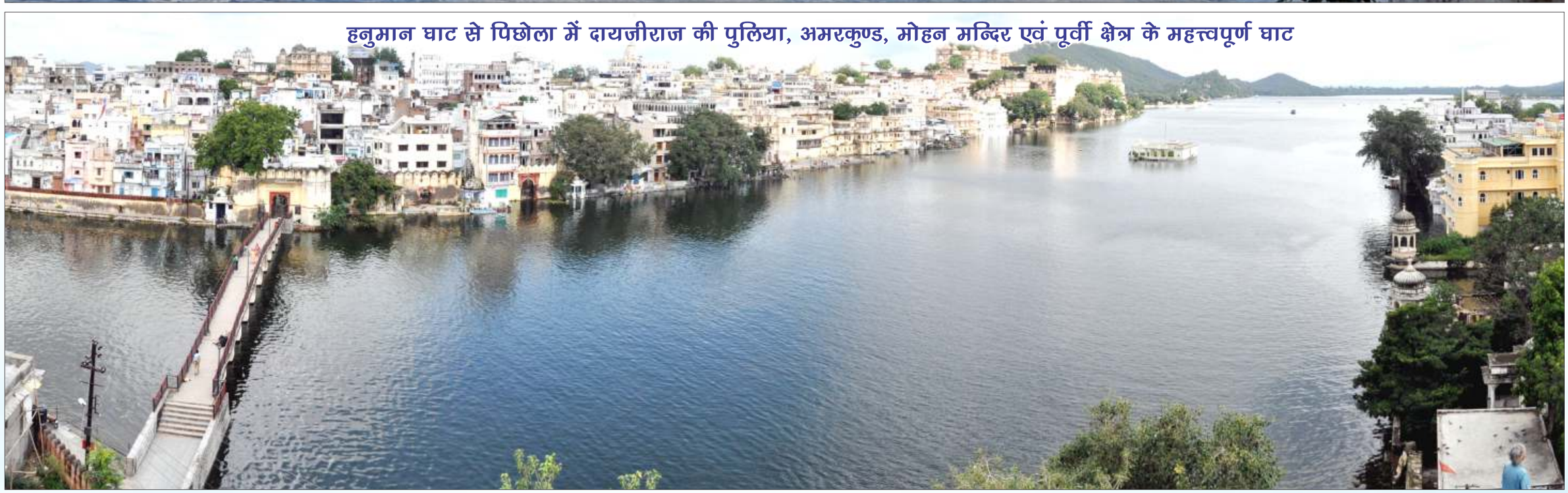

हनुमान घाट से पिछोला में दायजीराज की पुलिया, अमरकुण्ड, मोहन मन्दिर एवं पूर्वी क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण घाट

गणगौर घाट (राजघाट) : बागोर की हवेली के पास ही अमरचन्दजी के बनवाये हुए त्रिपोलिया के सामने गणगौर घाट स्थित है जिसे राजघाट भी कहते है, क्योंकि चैत्र शुक्ल 3 से 6 तक राज्य की गणगौर बड़े जुलूस के साथ यहाँ लाई जाती थी परन्तु महाराणा भूपालसिंह जी ने अरसे से राज्य की गणगौर माताजी का यहाँ आना बन्द कर महलों में पार्वती विलास में ले जाना आरम्भ कर दिया। यहाँ केवल महाराणा महलों से जुलूस की सवारी कर पधारते और नाव पर सवार होते थे और सायंकाल में महिलाओं की घूमर होती थी। इसके उत्तर में वीरूघाट और बोरसली घाट पर शहर की गणगौर लाई जाती थी और जलपान का दस्तूर कराकर उन्हें गाती–बजाती हुई स्त्रियाँ वापस ले जाती थी। वर्तमान में शहर की सभी गणगौर भव्य जुलूस के साथ गणगौर घाट पर लायी जाती है।

कार्तिक पूर्णिमा को पिछोला झील के गणगौर घाट पर प्रदोष वेला में हजारों की संख्या में दीपदान किया जाता है। झील में दीपक टिमटिमाते रहते हैं, वहीं जगमग त्रिपोलिया पर आसमान में पूर्णिमा का चाँद पूर्ण रोशनी बिखेर रहा होता है। दीपों की रोशनी, जगमग त्रिपोलिया एवं सुपर मून की चांदनी से पिछोला झील भी दमक उठती है। इन सभी के संगम से गणगौर घाट का नजारा अति विलक्षण एवं विशेष हो जाता है तथा स्थानीय नागरिकों, देशी एवं विदेशी पर्यटकों के कदम कुछ देर के लिए इस रोमांचकारी दृश्य का आनन्द लेने हेतु अवश्य थम जाते हैं। पिछोला झील के गणगौर घाट पर देशी एवं विदेशी पर्यटक धूप सेवन एवं यहां से इस विशाल झील के अनेक सुन्दर दृश्यों को अपने कैमरों में कैद करते रहते हैं।

गणगौर घाट से पिछोला झील का अति सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। यहां से मोहन मन्दिर, हनुमान घाट, अमराई घाट, अनेक मन्दिर, ताज लेक पैलेस के साथ पिछोला झील के उत्तरी एवं दक्षिणी छोर में फैली हुई विशाल एवं शांत जल सतह का अद्भुत नजारा देखते ही बनता है।

युवाजन एवं पर्यटकों के मध्य लोकप्रिय गणगौर घाट

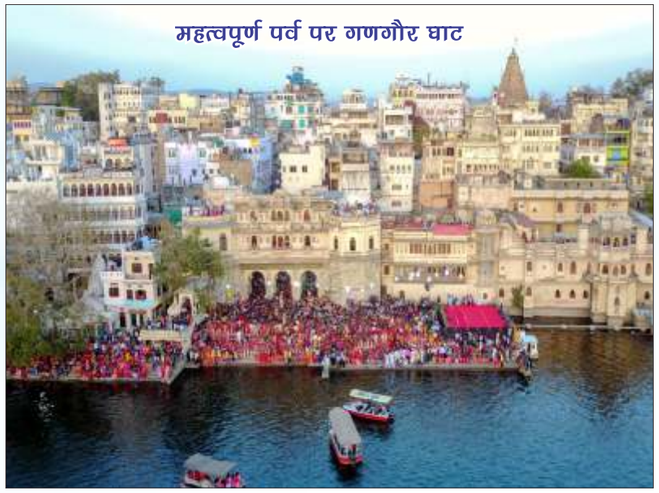
महत्वपूर्ण पर्व पर गणगौर घाट

महत्वपूर्ण पर्व पर दीप दान करती महिलाएँ

प्रसिद्ध गणगौर घाट एवं पिछोला का अद्वितीय स्वरूप

पूर्णिमा पर प्रकाशमय गणगौर एवं अन्य घाट

गणगौर घाट पर बारीश का लुफ्त उठाते पर्यटकगण

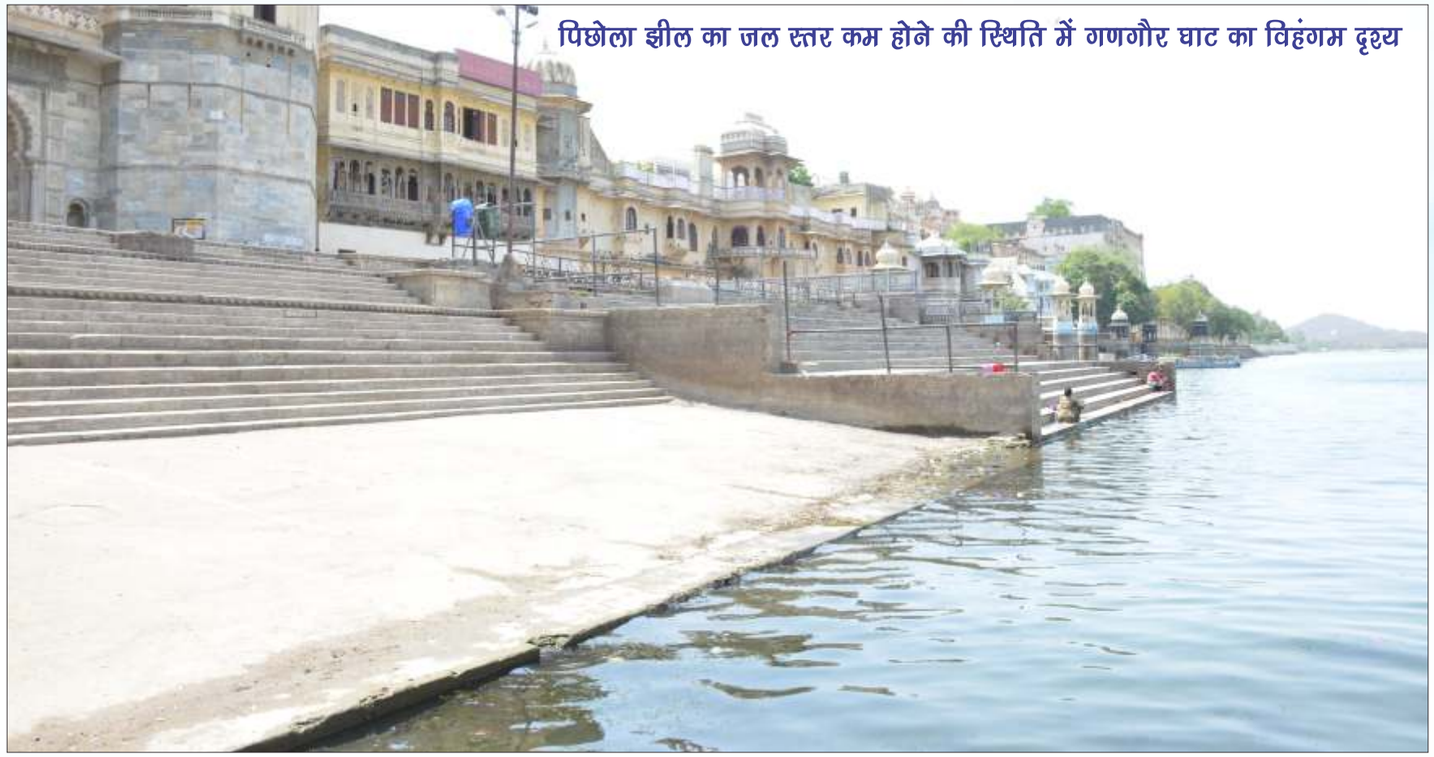

पिछोला झील का जल स्तर कम होने की स्थिति में गणगौर घाट का विहंगम दृश्य

पिछोला झील-गणगौर घाट अधिकतम् भराव स्तर पर जन सामान्य एवं पर्यटक मनोहरी दृश्य निहारते हुए

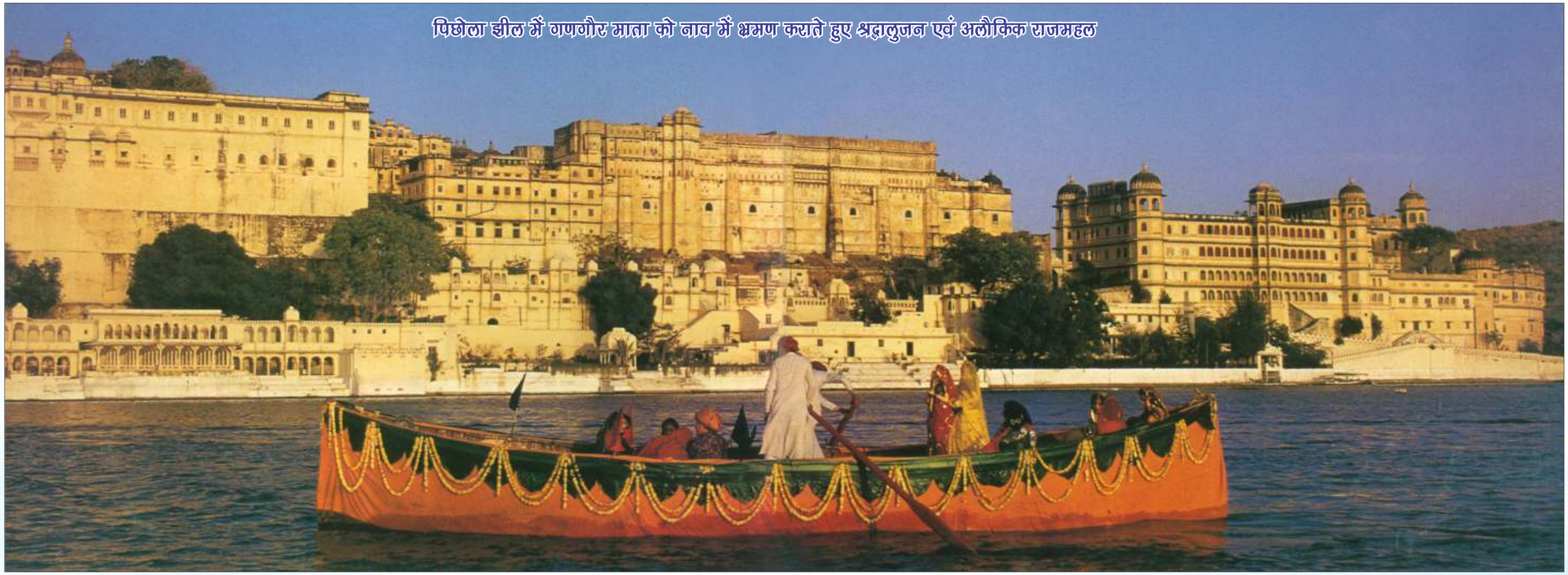

पिछोला झील में गणगौर माता को नाव में भ्रमण कराते हुए श्रद्धालुजन एवं अलौकिक राजमहल

बागोर की हवेली : बागोर की हवेली एक प्राचीन इमारत है जो पिछोला झील के गणगौर घाट पर स्थित है। इस हवेली में शानदार वास्तुकला, बारीक नक्काशी एवं उत्कृष्ट कांच का काम किया गया है। यह हवेली वास्तव में महाराणा प्रतापसिंहजी द्वितीय और अरीसिंहजी द्वितीय के प्रधानमंत्री ठाकुर अमरचन्दजी बड़वा सनाढ्य ब्राह्मण की है और राजघाट (गणगौर घाट) पर त्रिपोलिया भी उन्हीं का बनवाया हुआ है। अमरचन्दजी की मृत्यु उपरान्त यह हवेली बागोर महाराज को दी गई जो राज्य के नजदीकी हकदार थे। महाराणा सरदारसिंहजी, स्वरूपसिंहजी, शम्भूसिंहजी और सज्जनसिंहजी वहीं से गोद आए। अन्त में, महाराज शक्तिसिंहजी के निसन्तान मृत्यु हो जाने पर बागोर के ठिकाणे के साथ यह हवेली भी खालसे हुई। महाराज कुमार भोपालसिंहजी साहब ने इस हवेली की दुरूस्ती करवाकर देशी मेहमानों के लिए यहाँ पर अच्छा प्रबन्ध कर दिया था।

वर्ष 1986 में इस इमारत को भारत सरकार के पश्चिमी सांस्कृतिक केन्द्र को सौंप दिया गया। इस इमारत को एक शाही स्वरूप प्रदान करने के लिए शाही परिवार के विशेषज्ञों की सलाह से इसकी पुरानी वास्तुकला शैली को बहाल किया गया तथा परिसर में एक संग्रहालय स्थापित किया गया। यह संग्रहालय मेवाड़ की देशभक्ति एवं संस्कृति को चित्रित करता है। इसमें मेवाड़ के परम्परागत भित्ति–चित्रों के संरक्षण के साथ शाही एवं पारम्परिक कलात्मक वेशभूषा को प्रदर्शित किया गया है। इसमें मेवाड़ राजघरानों की विशेष सामग्री जैसे–ज्वैलरी बॉक्स, डाइस–गेम्स, हुक्का, पैन बॉक्स, नट क्रैकर्स, हैंड फैन, गुलाब जल छिड़कने वाले व ताँबें के बर्तन आदि भी दर्शनीय है। रानी का चेम्बर मेवाड़ के आकर्षक मूल चित्रों के साथ संरक्षित किया गया है। रंगीन कांच के छोटे टुकड़ों के साथ बनाये गये सुन्दर मोर दर्शकों को आकर्षित करते हैं। इस भव्य इमारत में व्यवस्थित बालकनियाँ, छतों, आंगनों, गलियारों सहित 100 से अधिक कमरे हैं। हवेली के अन्दरूनी हिस्सों को जटिल और महीन दर्पण कार्य से सुसज्जित किया गया है। हवेली में शाही महिलाओं के निजी महल, उनके स्नान कक्ष, ड्रेसिंग रूम, बेडरूम, लिविंग रूम, पूजा कक्ष एवं मनोरंजन कक्ष भी दर्शनीय हैं। सायंकाल में राजस्थान के पारम्परिक नृत्य एवं संगीत के सुखद प्रदर्शन होते हैं। यह हवेली रात्रि में चमकती रोशनी के साथ अद्भुत दिखाई देती है। बागोर की हवेली शाही परिवार की प्राचीन वास्तुकला और जीवन शैली से अवगत होने के लिए एक आदर्श स्थल है।

संग्रहालय

अन्दर का चौक एवं वास्तुकला के विभिन्न स्वरूप

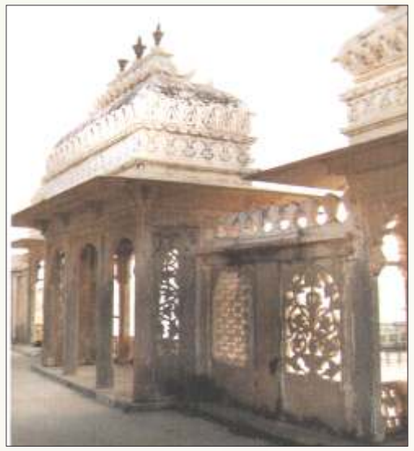

ऐतिहासिक बागोर की हवेली का भव्य स्वरूप

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र : यह केन्द्र भारत के पश्चिमी राज्य राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमण, दीव, दादरा नगर हवेली की प्रदर्शनकारी कलाओं, चाक्षुष कलाओं तथा वहां की लोक कला एवं आदिम कलाओं के सृजनात्मक विकास एवं सुविधाएँ प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित सात सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक केन्द्र उदयपुर शहर में वर्ष 1986 में स्थापित किया गया। इसका कार्यालय पिछोला झील के किनारे स्थित प्राचीन एवं ऐतिहासिक ''बागोर की हवेली'' में संचालित है। यहाँ एक संग्रहालय भी स्थापित है।

इसकी स्थापना का मुख्य ध्येय एक सुदृढ़ तंत्र के रूप में कलाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में फैलाना तथा विभिन्न राज्य एवं केन्द्रीय अकादमियों के रचनात्मक सहयोग से ग्रामीण, जिला, राज्य एवं अन्तर्राज्यीय स्तर पर बिखरी कलाओं में समन्वय एवं अन्तर्सम्बन्ध स्थापित कर कला व संस्कृति के विकास के समन्वित प्रयास करना है। इनमें कलाकार, सृजनधर्मिता एवं विलुप्त कला एवं पुनरूत्थान का प्रमुख ध्येय निहित रहा है।

देश के शेष छः केन्द्रों के साथ–साथ उदयपुर स्थित यह केन्द्र समूचे देश में संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ उसका संरक्षण एवं विस्तार करने वाली अग्रणी संस्था का दर्जा प्राप्त कर चुका है। यह मंचन कलाओं को प्रोत्साहन देने के साथ–साथ साहित्य तथा दृश्य कलाओं के सम्बद्ध क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान कर रहा है। यह केन्द्र एक पंजीकृत सोसायटी है, जिसके अध्यक्ष राजस्थान के राज्यपाल है। इसमें केन्द्र सरकार व पश्चिम क्षेत्र के सदस्य राज्यों की सरकारों के प्रतिनिधि भी होते हैं। इसका दैनिक कार्य निदेशक द्वारा संचालित किया जाता है।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र 1993 से हर वर्ष गणतंत्र दिवस पर होने वाले लोक नृत्य समारोह में भाग लेने के लिए अपने लोक कलाकारों को भेजते हैं। भारत के राष्ट्रपति 24 या 25 जनवरी को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में इस समारोह का उद्घाटन करते हैं तथा इसके माध्यम से लोक कलाकारों को राष्ट्रीय मंच पर अपनी कला प्रदर्शित करने का दुर्लभ अवसर प्राप्त होता है।

फतहसागर के पास स्थित हवाला गांव में इस केन्द्र द्वारा ''शिल्पग्राम'' नामक एक सांस्कृतिक गाँव विकसित किया गया है। यह लगभग 70 एकड़ भूमि पर अरावली पर्वतमालाओं के मध्य स्थित है। देश के पश्चिमी क्षेत्र के ग्रामीण, आदिम संस्कृति एवं जीवन–शैली को दर्शाने वाला यह एक जीवन्त संग्रहालय है। इस परिसर में सदस्य राज्यों की पारम्परिक वास्तुकला को दर्शाने वाली झौंपड़ियाँ निर्मित की गई हैं जिनमें पाँचों राज्यों के भौगोलिक वैविध्य एवं निवासियों के रहन–सहन को दर्शाया गया है।

इस शिल्पग्राम में प्रतिवर्ष दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में हस्तशिल्प मेला आयोजित किया जाता है। इस मेले में विभिन्न क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के जाने–माने कुशल हस्तशिल्प और कारीगर भाग लेते हैं। उन्हें अपने उत्पाद ग्राहकों के समक्ष प्रदर्शित करने एवं उनके सामने ही इन उत्पादों की निर्माण प्रक्रिया दिखाने का एक अनुपम अवसर प्राप्त होता है। केन्द्र के उद्देश्यों को मूल रूप देने हेतु अनेक योजनाएं – (1) राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान योजना (2) रंगमंच प्रोत्साहन येाजना (3) गुरू–शिष्य परम्परा योजना (4) युवा कलाकार प्रतिभा योजना (5) प्रलेखन योजना (6) हाट सुविधाएँ उपलब्ध कराना आदि प्रमुख हैं।

सांस्कृतिक केन्द्र के मुख्य उद्देश्यों के अनुरूप फरवरी, 2021 में प्रतिभावान मूर्तिकारों को प्रोत्साहन के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों के महापुरुषों के फाइबर स्कल्पचर उनके द्वारा तैयार कर वहां के राज चिह्न व ध्वज के साथ बागोर की हवेली की शाही गाथा गैलेरी (रॉयल सागा कक्ष) में सजाया गया है। इनमें मेवाड़ के महाराणा प्रताप, मराठा रियासत के छत्रपति शिवाजी महाराज, किशनगढ़ रियासत के पृथ्वी सिंह, बूँदी के महाराणा राजाराम सिंह, जयपुर के महाराणा जयसिंह, जैसलमेर के रावल जैसल, जोधपुर के राव जोधा, बीकानेर के महाराजा सर गंगा सिंह, अलवर के जय सिंह, कच्छ के महाराणा सवाई बहादुर, जामनगर के महाराणा रंजीत सिंह, बड़ौदा रियासत के महाराणा सायाजीराव गायकवाड़ प्रमुख हैं। इसी प्रकार विभिन्न चित्रकारों द्वारा बनाई गई पिछवाई पेन्टिंग एवं मिनिएचर पेन्टिंग को इनकी गैलेरी में प्रदर्शित किया गया है।

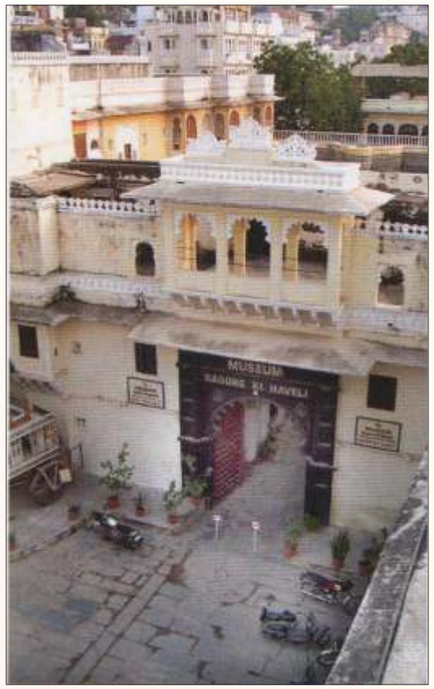

जगदीश मन्दिर : जगदीश मन्दिर भगवान विष्णु को समर्पित उदयपुर का बड़ा ही सुन्दर, प्राचीन व विख्यात मंदिर है जो हजारों श्रद्धालुओं के आस्था का मुख्य केन्द्र है। आध्यात्मिकता के क्षेत्र मे इसका अपना एक विशेष स्थान है। साथ ही मेवाड के इतिहास में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह मंदिर भारतीय आर्य स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे जगन्नाथ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। पर्व व आयोजनों पर यहाँ श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। उदयपुर शहर के मध्य लगभग 400 वर्ष पुराने शहर के इस विशाल मंदिर का निर्माण उदयपुर के शासक महाराणा श्री जगतसिंह (वर्ष 1628 से 1653) ने वर्ष 1651 में पूर्ण करवाया था। इस पवित्र मंदिर के प्रवेश द्वार को सिटी पैलेस के बारा पोल से देखा जा सकता है एवं गणगौर घाट भी इसके पास ही स्थित है। इस विशाल मंदिर की इमारत को बनाने में करीब 15 लाख रुपये खर्च हुए। जगदीश मंदिर की संरचना एक पिरामिड़ आकार की है। इसकी ऊँचाई 125 फीट है। यह तीन मंजिला मंदिर वास्तुशिल्प का चमत्कार है। मुख्य मंदिर की मंजिले 50–50 कलात्मक खंभों पर टिकी हुई है।

मंदिर अपनी खूबसूरती से सजी छत, सुन्दर जटिल नक्काशी, कई आकर्षक मूर्तियों, बड़े हवादार हॉल और शांति भरे वातावरण की वजह से पर्यटकों एवं तीर्थ यात्रियों के मध्य आकर्षण का केन्द्र है। मंदिर के शीर्ष की ऊँचाई 79 फीट है जिस पर घुड़सवारी, हाथियों के साथ संगीतकारों और नर्तकियों की प्रतिमाओं को देखा जा सकता है। मुख्य मंदिर के अन्दर भगवान विष्णु की अद्भुत चार भुजाओं वाली काले पत्थर की प्रतिमा विराजमान है। यह तीर्थस्थल चार छोटे मंदिरों से घिरा हुआ है, जो क्रमशः श्री गणपति, सूर्यदेव, माता पार्वती और शिवजी को समर्पित है। इस मंदिर के प्रवेशद्वार के पूर्व सीढ़ियों के अन्त में संगमरमर पत्थर से बने दो विशाल हाथी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। इसके अन्दर शिलालेखों के साथ अंकित पटियाँ हैं। एक संगमरमर की सीढ़ी मुख्य मंदिर तक ले जाती है, वहां गरूड़ की एक पीतल की मूर्ति है जो भगवान विष्णु के द्वार की रखवाली करती है। यह मंदिर उदयपुर की शान है। इसकी सुन्दरता और भव्यता को देखकर पर्यटक मोहित हो जाते हैं तथा वे इस मन्दिर की मनोहरी कलाकृतियों को अपने कैमरे में कैद कर अपने साथ ले जाते हैं।

जगदीश मन्दिर का ऊँचा प्रवेश स्थल एवं स्वागतार्थ संगमरमर निर्मित गजराज की प्रतिमाएँ

मन्दिर का सुन्दर गुम्बद

जगदीश मन्दिर मुख्य परिसर, जगदीश चौक एवं वॉल सिटी

संपूर्ण जगदीश मन्दिर

तीन मंजिले मन्दिर – वास्तुशिल्प का चमत्कार

भगवान जगदीश जी के समक्ष विराजित गरूड़ देवता

गरूड़देव श्री कांस्य प्रतिमा

जगदीश मन्दिर : सुन्दर नक्काशी एवं स्थापत्यकला के विभिन्न स्वरूप

चरणामृत प्राप्ति स्थल

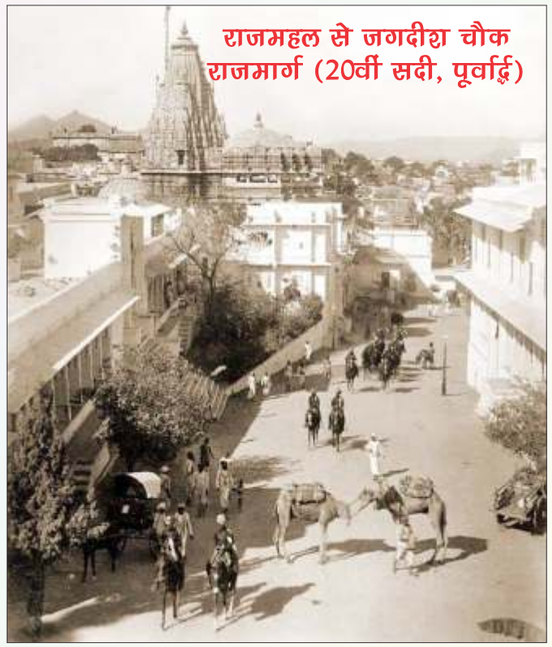
राजमहल से जगदीश चौक
राजमार्ग (20वीं सदी, पूर्वार्द्ध)

जगदीश मन्दिर (20वीं सदी, पूर्वार्द्ध) जगदीश चौक

जगदीश मन्दिर परिसर

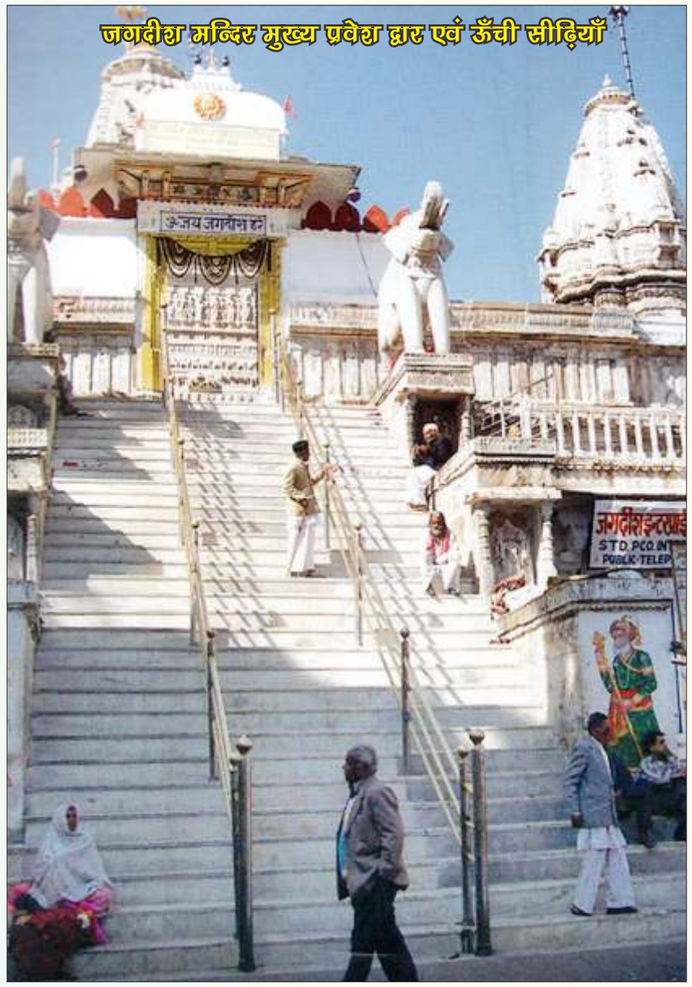
जगदीश मन्दिर मुख्य प्रवेश द्वार एवं ऊँची सीढ़ियाँ

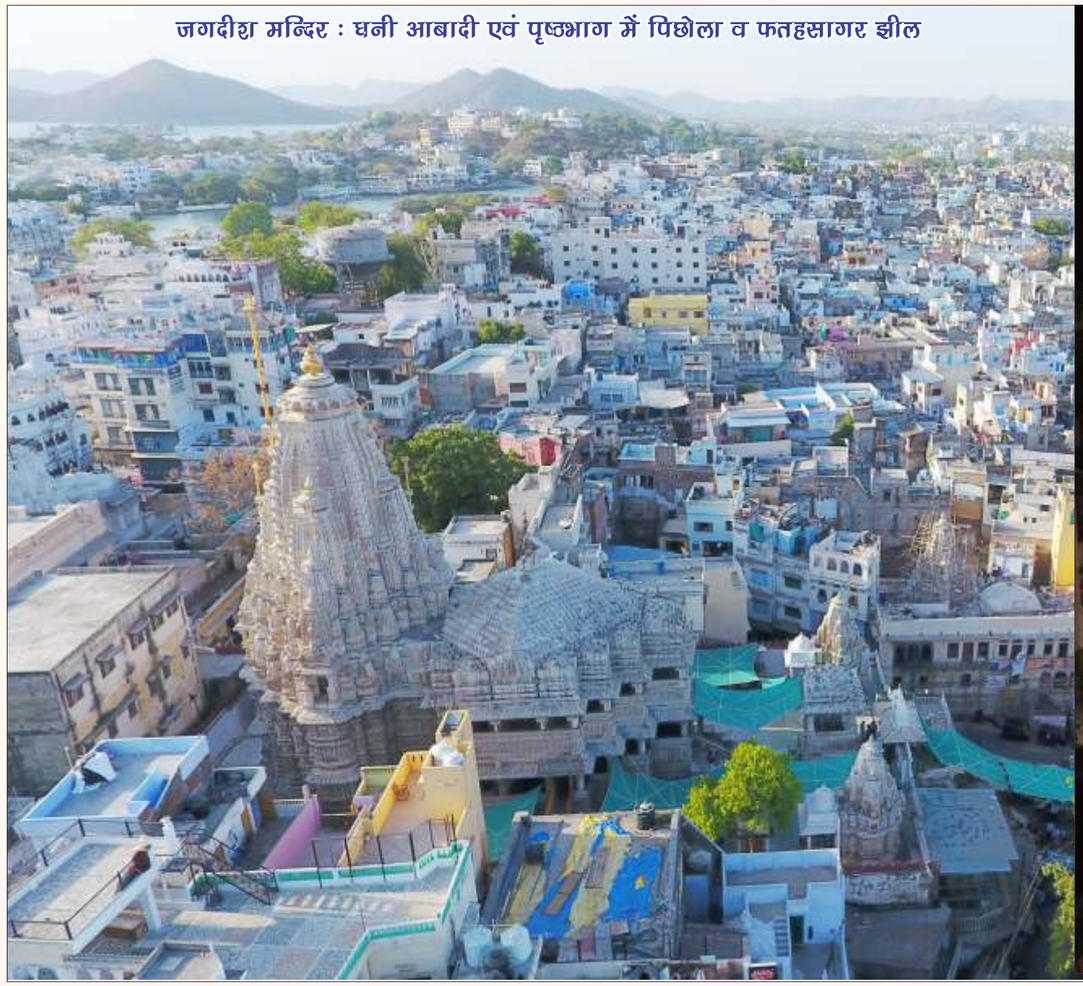
जगदीश मन्दिर : घनी आबादी एवं पृष्ठभाग में पिछोला व फतहसागर झील

रात्रिकाल में जगदीश मन्दिर का भव्य स्वरूप

बोरसली घाट : गणगौर घाट से सटा हुआ बोरसली घाट एक अति महत्वपूर्ण घाट है। इस घाट का नाम यहाँ स्थित एक विशाल बोरसली नामक पेड़ के नाम से जाना जाता है। यहाँ कई समाजों के मन्दिर स्थित हैं, जिनमें **तारकेश्वर महादेव मन्दिर**, **श्री चौमुखा महादेव जी हीरेश्वरजी का मन्दिर** (जेठियों का अखाड़ा का निजी मन्दिर), **श्री लिम्बजमाताजी मन्दिर** (जेठी समाज का निजी मन्दिर), **श्री हनुमान मन्दिर**, (श्रीमाली समाज का निजी मन्दिर), **धोला देवरा मन्दिर** (शिवजी का मन्दिर), **श्री घनेश्वर महादेव मन्दिर**, **श्री चारभुजा जी मन्दिर** (पुरूषोत्तम भगवान का मन्दिर) आदि मुख्य हैं।

बोरसली घाट बहुत व्यवस्थित है एवं इस घाट पर स्थित मन्दिरों के दर्शन एवं भक्ति की भावना से प्रतिदिन हजारों की संख्या में आमजन एवं पर्यटक यहाँ पर आते हैं। स्मार्ट सिटी के अन्तर्गत इसके कुछ घाट एवं खण्डहर मन्दिरों का जीर्णोद्धार भी किया जा रहा है।

रोवणिया घाट : विभिन्न समाज की महिलाएँ परिवारजन की मृत्यु उपरान्त शोक स्नान करने इस घाट पर आती थी। यहाँ मुस्लिम समाज के द्वारा ताजिये भी विसर्जित किये जाते थे। रोवनिया घाट के साथ एक शिव मन्दिर स्थित है, जिसका जीर्णोद्धार भी आवश्यक है।

खुर्रा घाट : बोरसली घाट के उत्तर में खुर्रा घाट स्थित है, जहाँ से पशु विशेषकर राजकीय हाथी, घोड़े आदि पानी पीने के साथ अठखेलियाँ भी करते थे।

लाल घाट : गणगौर घाट से दक्षिण में लाल घाट जहाँ से वर्तमान में नगर निगम, उदयपुर द्वारा स्वीकृत नावें पिछोला की सैर के लिए उपलब्ध रहती है। यह घाट घनी बस्ती के मध्य स्थित है। यहाँ से सिवरेज का पानी रिसता हुआ देखा गया है।

अमरकुण्ड, दायजीराज सेतु (सता पोल) के आसपास अनेक प्रसिद्ध मन्दिर स्थित हैं, जिनमें मुख्य **श्री राधेश्याम मन्दिर** (मन्दिर के अन्दर भगवान राम, हनुमान एवं शिव मन्दिर), **श्री श्री 1008 सत्येश्वर महादेव गड़िया देवरा मन्दिर** (दायजीराज सेतु के प्रवेश द्वार पर सता पोल से लगा हुआ), **श्री भीमपरेश्वर महादेव मन्दिर** (श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा के अन्तर्गत अमरकुण्ड के पूर्वी छोर एवं सता पोल के पास स्थित) हैं।

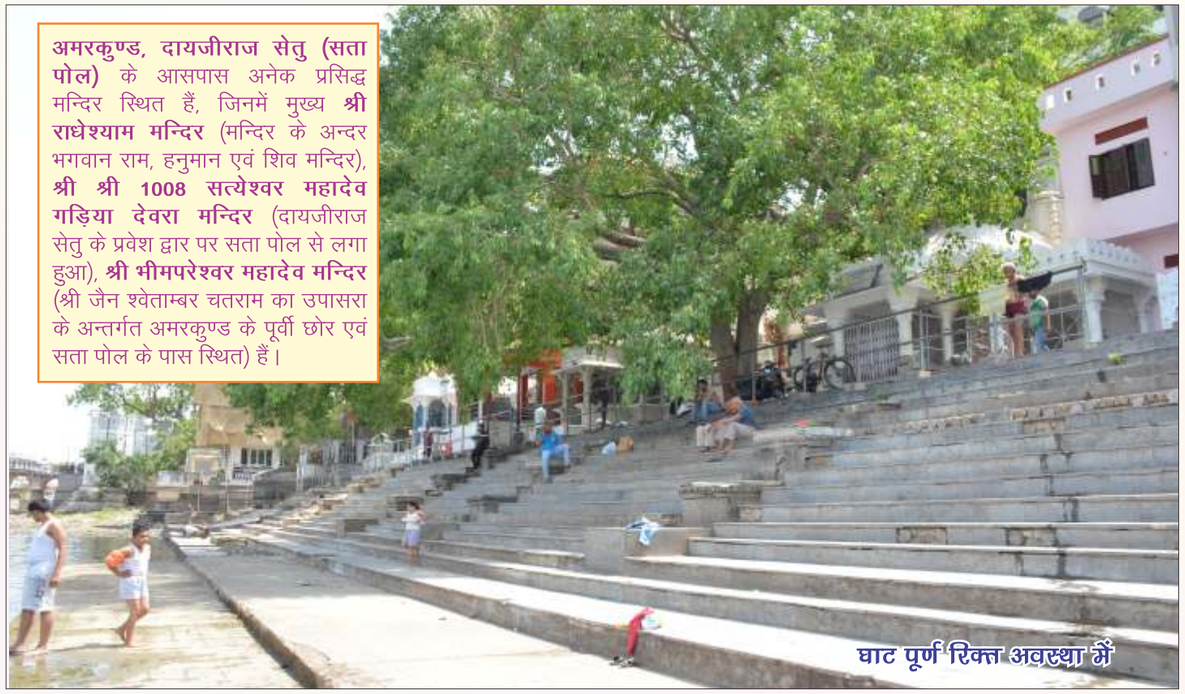

घाट पूर्ण रिक्त अवस्था में

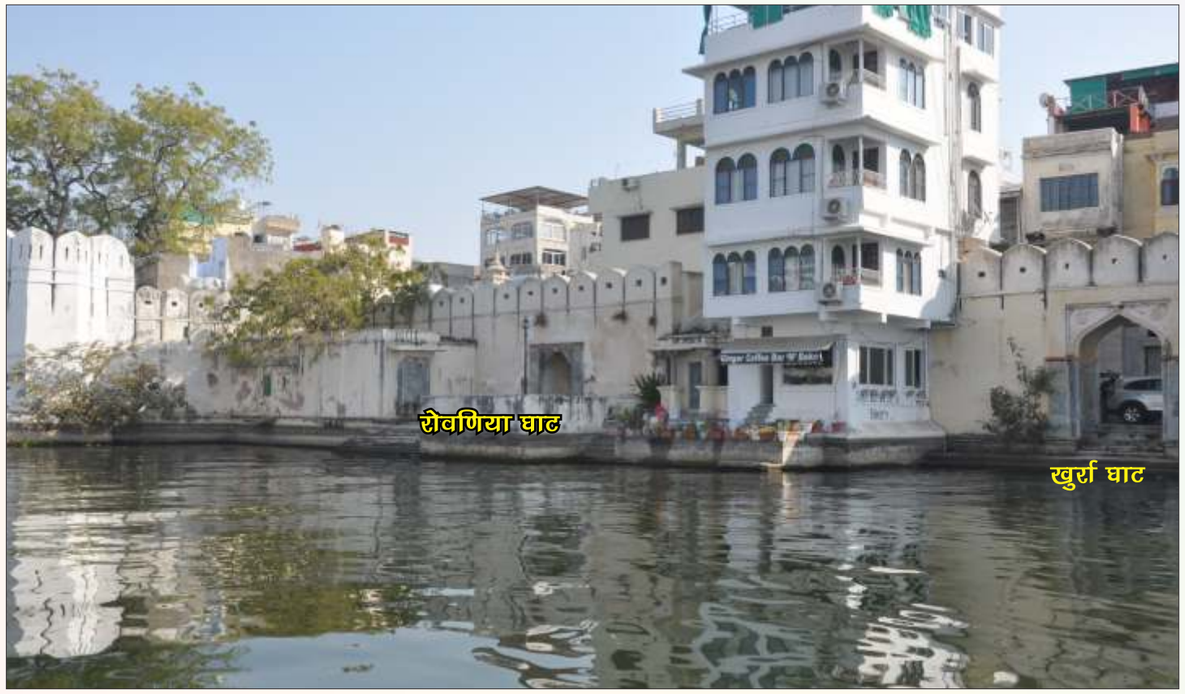

रोवणिया घाट

खुर्रा घाट

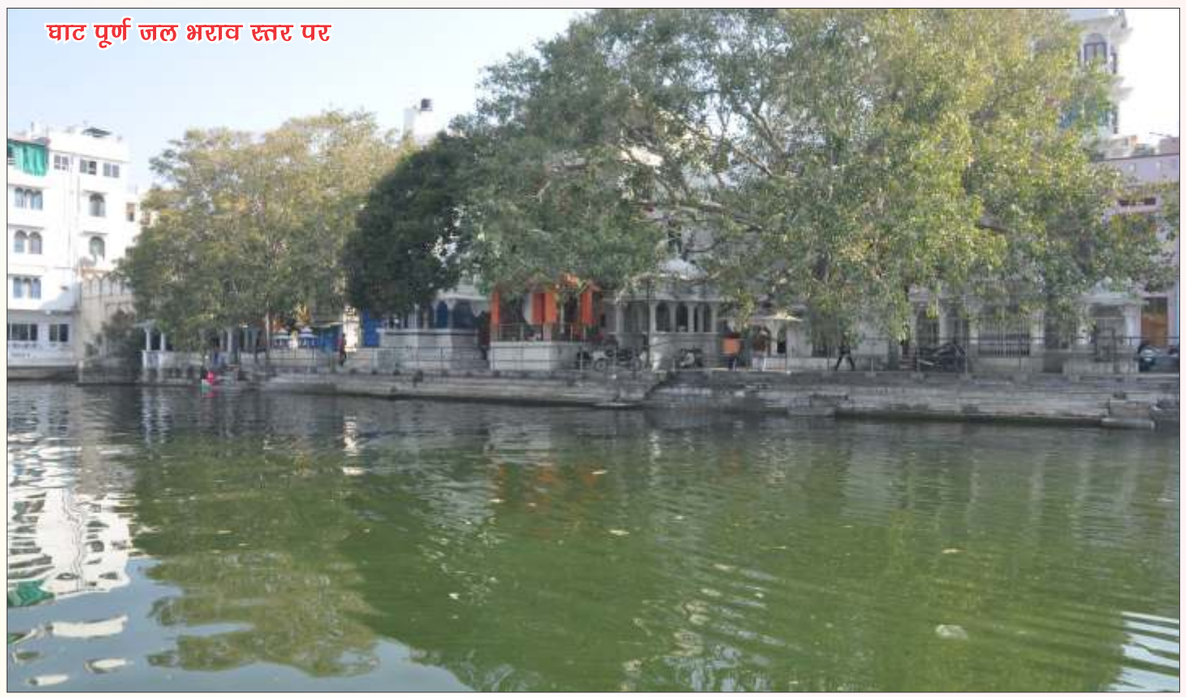

घाट पूर्ण जल भराव स्तर पर

लाल घाट

नाव घाट : महलों के उत्तर की तरफ के नए दरवाजे के सामने ही पिछोला झील पर नावघाट स्थित है। यहां नावें और कश्तियाँ उपलब्ध रहती थी। यहां से आगे सरदारों की हवेलियां और लाल घाट स्थित है, जहां बाद में जनाना घाट बनवाया गया था।

पीपली घाट : पार्वती विलास से मिला हुआ ही उत्तर में महाराणा जवान सिंह का बनवाया हुआ ''जन–निवास'' नामक महल है। इसमें नहर व फव्वारें भी थे। पहले जमाने में यहां अंग्रेज मेहमानों को भोज दिया जाता था। इस जगह पहले महाराणा अरिसिंह तृतीय के धायभाई रूपा का बनवाया हुआ रूपघाट था। इस घाट के आधे हिस्से पर तो यह महल बनवाया गया और शेष घाट पर पीपल का वृक्ष होने से पीपली घाट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घाट पर पहले खुली जगह थी परन्तु बाद में दरवाजा तथा कंगूरेदार कोट बनाकर इसको गढ़ के समान कर दिया गया है।

रूप घाट : यह घाट राजमहल परिसर में स्थित जनाना महल के किनारे भव्य छतरियों एवं मेहराब से सुसज्जित है। यह मान्यता है कि यह घाट राज महिलाओं के लिए आरक्षित था। इस घाट को सुन्दर स्वरूप देकर दर्शनीय बनाया जा सकता है। यह मेहराब घाट के नाम से भी जाना जाता है।

बंसी घाट : यह घाट राजमहल के किनारे स्थित है। इसका उपयोग राज परिवार एवं परिसर में स्थित होटल्स के पर्यटकों द्वारा किया जाता है। यह बहुत ही व्यवस्थित एवं सुसज्जित घाट है।

धोबी घाट (ब्रह्मपोल तालाब) : यह पिछोला के उत्तर–पश्चिमी किनारे पर स्थित एक छोटा भाग है, जो कुम्हारिया तालाब को जोड़ता है। इसके पूर्व में शहरकोट, मन्दिर, बस्तियाँ एवं प्रसिद्ध होटल लीला पैलेस, उत्तर में ब्रह्मपोल पुलिया व होटल्स, पश्चिम में मुस्लिम समुदाय का कब्रिस्तान, प्रसिद्ध होटल ओबेरॉय उदय विलास एवं दक्षिण में दूर तक पिछोला की जल सतह दृष्टिपात होती है। इसके मध्य एक छोटा टापू स्थित है जो कि हरियाली से आच्छादित है। पिछोला के इस भाग की जलधारा ब्रह्मपोल पुलिया के माध्यम से कुम्हारिया तालाब से मिलती है। वर्तमान में इस पर स्थित धोबी घाट, सुविधाकक्ष एवं एक बड़ा टीन शेड समुचित रखरखाव के अभाव में अव्यवस्थित रूप में है। इस घाट पर विभिन्न समाज के लोगों द्वारा परिवार में मृत्यु उपरान्त सामाजिक संस्कारों का निर्वहन किया जाता है।

इस भाग में ब्रह्मपोल दरवाजे से सटी हुई भूमि पर अक्सर भराव डाल दिया जाता है। इससे इसकी जल भराव क्षमता में कमी आने के साथ भूमि नजर आने लगती है। इसे प्रदूषण मुक्त रखने हेतु इसके पैंदे में सीवरेज लाइन डालने के बावजूद भी इसमें गन्दा जल–मल एवं सीवरेज लगातार समाहित होता रहा है। इससे इसके जल में पोषक तत्वों की वृद्धि होने से जलकुंभी, खरपतवार, जलीय घास, काई आदि निर्बाध रूप से पनप जाती है जिससे इस भाग का स्वरूप अत्यन्त बिगड़ा हुआ दिखाई देता है। इसके उत्तर में निर्मित धोबी घाट पर स्थानीय नागरिक एवं कपड़े धुलाई व्यवसाय में लगे लोग कपड़े धोते हुए देखे जा सकते हैं। वर्तमान में झीलों को स्वच्छ रखने एवं इनका जल पेयजल के रूप में उपयोग होने से नियमानुसार नगर निगम द्वारा कपड़े धुलाई पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिये।

पिछोला के इस भाग को बहुत सुन्दर बनाने के लिए इसे खरपतवार, जलीय घास, गन्दगी रहित करते हुए गाद व भराव निकालकर इसकी गहराई एवं जल भराव क्षमता में समुचित वृद्धि की जानी चाहिये। इसके पास आवासीय बस्तियां एवं होटल स्थित हैं। अतः इसे अति सुन्दर बनाकर पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों के मध्य लोकप्रिय बनाया जा सकता है। स्वच्छ वातावरण होने पर प्रातः एवं सायंकाल भ्रमण के लिए यह छोटा भाग काफी उपयोगी साबित होगा।

स्थानीय लोगों के अनुसार यह क्षेत्र असामाजिक तत्वों के लिए बहुत सुरक्षित क्षेत्र बन गया है, अतः नगर निगम इस क्षेत्र को विकसित किया जावे ताकि यह सदैव आबाद रहे। इसके लिए निम्नांकित सुझाव हैं :–

- वर्तमान में अवस्थित टीनशेड, सुविधा कक्ष, धोबी घाट सहित छोटी पहाड़ी को सुन्दर उद्यान एवं पक्के स्थल रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।
- ब्रह्मपोल पुलिया का आधुनिक रूप में पुनः निर्माण कर इसके दक्षिण की भूमि से भराव हटाकर इसे समुचित गहरा किया जाना चाहिये जिससे पिछोला का पानी ब्रह्मपोल पुलिया से होकर कुम्हारिया तालाब से बहता हुआ रंग सागर में समावेश होने से इनके प्रदूषण स्तर में भी कमी आयेगी।
- तालाब के मध्य स्थित टापू को थोड़ा ऊँचा कर अधिक पेड़ लगाकर हरियाली युक्त एवं प्रकाशमय फव्वारा स्थापित कर अधिक दर्शनीय बनाया जा सकता है।
- तालाब में डाली गई सीवरेज लाइन बाहर निकाली जाए एवं तालाब के किनारे अवस्थित बस्तियाँ, होटल्स, मन्दिर आदि से विसर्जित जल–मल एवं सीवरेज को दृढ़तापूर्वक रोका जावे।
- तालाब में चप्पू एवं पाल चलित नावें, पेड़ल बोट चलाई जावें जिससे जल में ऑक्सीजन की मात्रा में वृद्धि होने से प्रदूषण में भी कमी आयेगी।
- तालाब के रखरखाव, डिसिल्टिंग, सौन्दर्यीकरण के लिए नगर निगम, उदयपुर इसके किनारे स्थित प्रसिद्ध होटल्स लीला पैलेस एवं उदय विलास से सीएसआर के अन्तर्गत सहयोग ले सकता है।

ब्रह्मपोल तालाब का वृहद् स्वरूप : जलकुंभी एवं जलीय घास से अटा हुआ

बड़ी पाल : पिछोला झील महाराणा लक्षसिंह (लाखा) के समय में वि.सं. 1439–75 (ई.सं. 1382–1418) में किसी बनजारे ने बनाई थी। उसकी मुख्य पाल उस समय की प्रचलित विधि के अनुसार कच्ची ही होगी। महाराणा उदयसिंह ने इसके बांध को जो इस समय बड़ी पाल के नाम से प्रसिद्ध है, को पक्का, सुदृढ़ एवं ऊँचा बनवाकर झील के विस्तार में वृद्धि की एवं उसके किनारे अपने नाम का उदयपुर नगर बसाया। बाद में महाराणा जगतसिंह प्रथम, संग्रामसिंह द्वितीय, भीमसिंह और जवानसिंह ने समय–समय पर इस बाँध की सुदृढ़ता में वृद्धि की। वि.सं. 1852 (ई.सं. 1795) में महाराणा भीमसिंह के समय में अतिवृष्टि होने से यह बांध टूट गया जिससे आधा शहर बह गया। महाराणा जवान सिंह के समय में भी बांध को खतरा हुआ। तब एक बड़ी बुर्ज जिसे जवान बुर्ज भी कहते हैं, को पानी की टक्कर को रोकने के लिए बनवाकर बांध की कमजोरी मिटाई गई और पीछे एक और दीवार बनाकर बीच में मिट्टी ड़ालना प्रारम्भ किया, इस दौरान महाराणा जवानसिंह का इन्तकाल हो गया। तत्पश्चात् वह मिट्टी महाराणा स्वरूप सिंह ने ड़लवाकर इसका खतरा दूर किया। पिछोला झील की यह बड़ी पाल 334 गज (304 मीटर) लम्बी एवं 110 गज (100 मीटर) चौड़ी है। इस पाल पर महाराणा भीमसिंह के प्रधान सोमचन्द गांधी की छतरी भी है। इस मुख्य पाल के फलस्वरूप पिछोला झील का विस्तार हुआ तथा पिछोला झील को उदयपुर का प्राण कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि ऐसा विस्तृत जलाशय जिस पर भव्य राज–प्रासादों की शोभा, जगह–जगह बने हुए पक्के घाट, शिवालय, सरदारों की हवेलियाँ और कहीं–कहीं बाग–बाड़ियों की बहार, समीपस्थ पर्वतमालाओं के तल से टकराती हुई जल–तरंगों का दृश्य, वहाँ नाना प्रकार की वन–वृक्षावली और जंगली पुष्पों से निरापद वन जहाँ सैंकड़ों सूअर, हिरण, जरख आदि वन्य पशुओं का विचरण, जल में मगरमच्छ, मछलियाँ और कछुआ आदि जल–जन्तुओं के किलोल और बतख, हंस, बक, सारस, शुक, सारिका, कमाल आदि भांति–भांति के सुन्दर पक्षियों के मनोहारी कलरव से यह स्थल सुहावना बना रहता है। बड़ी पाल के नीचे महाराणा सज्जनसिंह का बनाया हुआ हरा–भरा विशाल और मनोहर समोर बाग एवं सज्जन निवास बाग है। पिछोला के बड़ी पाल के दक्षिणी किनारे से प्रारम्भ होकर तालाब के दक्षिणी–पश्चिमी तट के पास अरावली पहाड़ियों की एक श्रृंखला है। बाँध के समीप की ऊँची पहाड़ी 'माछला मगरा' (मत्स्य शैल) कहलाती है और उस पर एकलिंगगढ़ नामक प्राचीन दुर्ग बना हुआ है। यहाँ कुछ तोपें भी रहती थी। उदयपुर पर मराठों के आक्रमण के समय इस दुर्ग ने नगर की रक्षा करने में बहुत सहायता की थी। दक्षिण–पश्चिम में अरावली पर्वतमाला की इन श्यामवर्ण पहाड़ियों की पंक्ति आ जाने से इस झील की शोभा बढ़ गई है। यह संरचना की दृष्टि से बहुत सुन्दर है। इसके शीर्ष पर एक मन्दिर विद्यमान है। बड़ी पाल की यह बहु उपयोगी बुर्ज वर्तमान में बड़े एवं भव्य आयोजन के अवसर पर प्रकाश व्यवस्था एवं वाहन पार्किंग आदि के उपयोग के साथ रात्रिकाल में इसकी छटा बहुत ही मनोहारी लगती है। बड़ी पाल के पश्चिम में छोटी–सी झील दूध तलाई पर्यटकों के मध्य अपनी एक विशिष्ट निराली छवि प्रस्तुत करती है।

बड़ी पाल का विकसित उद्यान

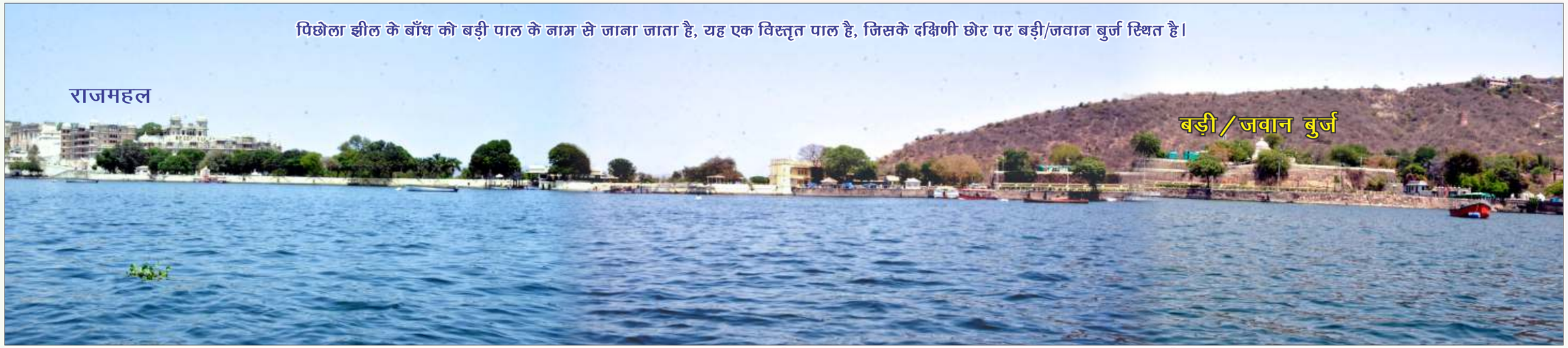

बड़ी पाल

बड़ी पाल का सुन्दर स्वरूप

बड़ी पाल पर स्थित बड़ी बुर्ज

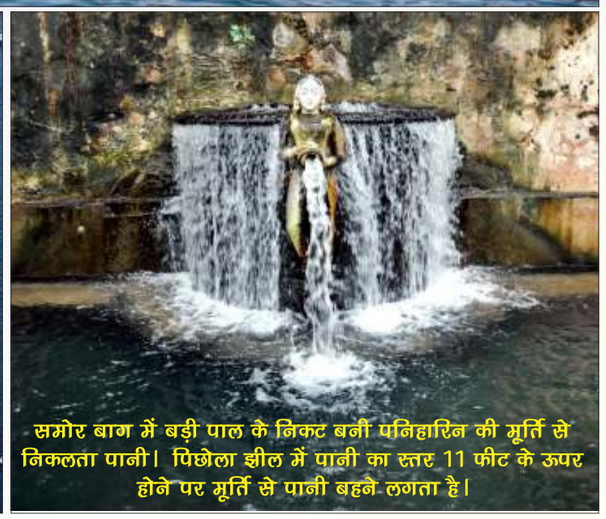
समोर बाग में बड़ी पाल के निकट बनी पनिहारिन की मूर्ति से निकलता पानी। पिछोला झील में पानी का स्तर 11 फीट के ऊपर होने पर मूर्ति से पानी बहने लगता है।

सिटी पैलेस (राजमहल) : पिछोला झील के पूर्वी तट पर पीपलिया घाट, रूप घाट, जनाना घाट, बंसी घाट एवं बड़ी पाल तक उदयपुर शहर के सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित राणा मगरी पर ये राजमहल इतने भव्य, विशाल एवं प्राचीन शैली के हैं कि प्रसिद्ध इतिहासकार फर्ग्यूसन ने इसे ''राजस्थान के विंडसर'' की संज्ञा दी। महलों के नीचे ही विस्तीर्ण सरोवर से इसकी प्राकृतिक शोभा बहुत ही अनुपम है। इस पैलेस को ''पूर्व का वेनिस'' के रूप में भी सन्दर्भित किया जाता है। उदयपुर के महलों का वर्णन, राजपूताना गजेटियर में इस प्रकार किया है कि ''यह बड़ी शानदार इमारत उत्तर से दक्षिण 1500 फीट (457 मीटर) लम्बी एवं 800 फीट (244 मीटर) चौड़ी है।

इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ। इसके निर्माण का विचार एक सन्त ने महाराणा उदयसिंह द्वितीय को दिया था। यहाँ पर बनाया जाने वाला पहला ढाँचा ''राय आंगन'' था तथा परिसर के निर्माण का कार्य सन् 1571 में पूर्ण हुआ। इस प्रकार यह राजमहल परिसर लगभग 450 वर्षों में अनेक उत्तराधिकारी महाराणाओं द्वारा बनाये गये भवनों एवं संरचनाओं का समूह है।

महलों का प्रवेश द्वार बड़ी पोल कहलाता है। बड़ी पोल में प्रवेश होते ही आगे एक चौक है। इसके पूर्व दिशा में सात आर्क (मेहराब/तोरण) एवं खुर्रे पर संगमरमर के तीन दरवाजे हैं, जो त्रिपोलिया कहलाते हैं। त्रिपोलिया के भीतर एक बड़ा चौक (माणक चौक) है, जिसके नीचे पूर्व में तहखाने बने हुए थे। चौक के पश्चिम के प्रारम्भिक कोने में एक हस्तीशाला भी है। इस राजमहल में सूर्य पोल, तोरण पोल एवं छटादार पुराने राजप्रासाद–बड़ी महल, अमर विलास, स्वरूप विलास, माणक महल, सूर्य गोखड़ा, यश मन्दिर, मोती महल, भीम विलास, छोटी चित्रशाला, प्रीतम निवास, करण विलास, दिलखुश महल, शीश महल, कृष्णा विलास, जनानी ड्योढ़ी, जनाना महल आदि बहुत सुन्दर एवं दर्शनीय महल स्थित हैं। ये महल फिलामेन्ट बालकनियों और खिड़कियों, अलंकृत गुम्बदों, मेहराबों, अष्टकोणीय टावरों/मीनारों एवं कपोलों से निर्मित हैं। महलों की जटिल वास्तुकला मध्ययुगीन, यूरोपियन एवं चीनी प्रभावों का एक अदभुत मिश्रण है।

पैलेस के झरोखों से एक तरफ जग निवास (अब विश्व–प्रसिद्ध ताज लेक पैलेस होटल) एवं जग मन्दिर का पिछोला झील के मध्य एक विहंगम स्वरूप और दूसरी तरफ उदयपुर शहर का सुन्दर दृश्य दृष्टिपात होता है। इसमें कई मण्डप व चबूतरे युक्त बगीचे हैं जिसमें आंतरिक अपार्टमेन्ट्स हैं जो खूबसूरत पच्चीकारी और वॉल पेन्टिंग से सुसज्जित हैं। यह राजसी इमारत एक पहाड़ी पर स्थित होने के बाद भी चारों ओर से ऊँची दीवारों से घिरी हुई है। यह पैलेस हरे–भरे बगीचे पर निर्मित होने के साथ अत्यन्त आकर्षक है। वर्तमान में यह संपूर्ण महल एक भव्य संग्रहालय एवं दर्शनीय स्थल है।

पुराने महलों के आगे यूरोपियन वास्तुकला की तर्ज पर निर्मित 'शंभू निवास' एवं उसके निकट '**शिव निवास**' तथा '**फतह प्रकाश**' नामक विशाल महल स्थित हैं। शंभू निवास राजपरिवार का निवास स्थल है तथा शिव निवास एवं फतहप्रकाश को होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। फतह प्रकाश महल में दो–मंजिला भव्य दरबार हॉल भी स्थित है, जहाँ पूर्व में आम खास एवं गैलेरी दर्शकों के बैठने के लिए थी। वर्तमान में इस गैलेरी को 'क्रिस्टल आर्ट गैलेरी' के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, जिसे निहारने के लिए देशी–विदेशी पर्यटक अवश्य आते हैं।

राजमहल में 'मयूर चौक' का सौन्दर्य अनूठा है। चारों ओर काँच को बड़ी बारीकी एवं कौशल से जमाकर मोर और कुछ मूर्तियाँ बनाई गई हैं। यहाँ बने पाँच मयूरों का सौन्दर्य देखते ही बनता है। राजमहल के दक्षिण में एक मध्यकालीन भवन है जिसे जनाना महल के नाम से जाना जाता है। इसे मेवाड़ के महाराणा करणसिंह की महारानियों के लिए सन् 1620 में निर्मित किया गया था। इस महल का निर्माण एक दुर्ग की तरह करवाया गया था जिसमें एक भी बाहर खुलने वाली खिड़की नहीं रखी गई थी। जनानी ड्योढ़ी से बायीं ओर रंगमहल स्थित है। यहाँ राज्य का सोना–चाँदी और खजाना रखा जाता था। दायीं ओर पीताम्बरराय, गिरधरगोपाल तथा बाणनाथ जी की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

राजमहल के प्रारम्भिक हिस्से में राज्य सरकार का एक संग्रहालय संचालित है, जिसमें ऐतिहासिक एवं पुरातत्व सम्बन्धी सामग्री का विपुल संग्रह है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में पहनी जाने वाली पगड़ियों एवं साफों के नमूने, सिक्के, उदयपुर के महाराणाओं के चित्र, अस्त्र–शस्त्र व पोशाकों के संग्रह के साथ–साथ शहजादे खुर्रम की वह ऐतिहासिक पगड़ी भी है जो मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा की मित्रता के स्वरूप अदला–बदली की गई थी।

मुख्य महल में सिटी पैलेस म्यूजियम भी बनाया गया है। इसमें पूर्व महाराणाओं को मिली विशिष्ट भेंट जिनमें पुरस्कार, सिक्के, बर्तन आदि के साथ युद्ध के समय उपयोग में ली जाने वाली पोषाकें, हथियार एवं अन्य सामग्री का संग्रहण किया गया हैं। इतिहास प्रेमियों एवं शोधकर्त्ताओं के लिए बड़ा चौक (माणक चौक) के नीचे स्थित तहखाने का पुनर्निर्माण कर अत्याधुनिक पुस्तकालय की स्थापना की गई है। इस राजमहल को विभिन्न संरचनाओं के साथ एक भव्य संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया है।

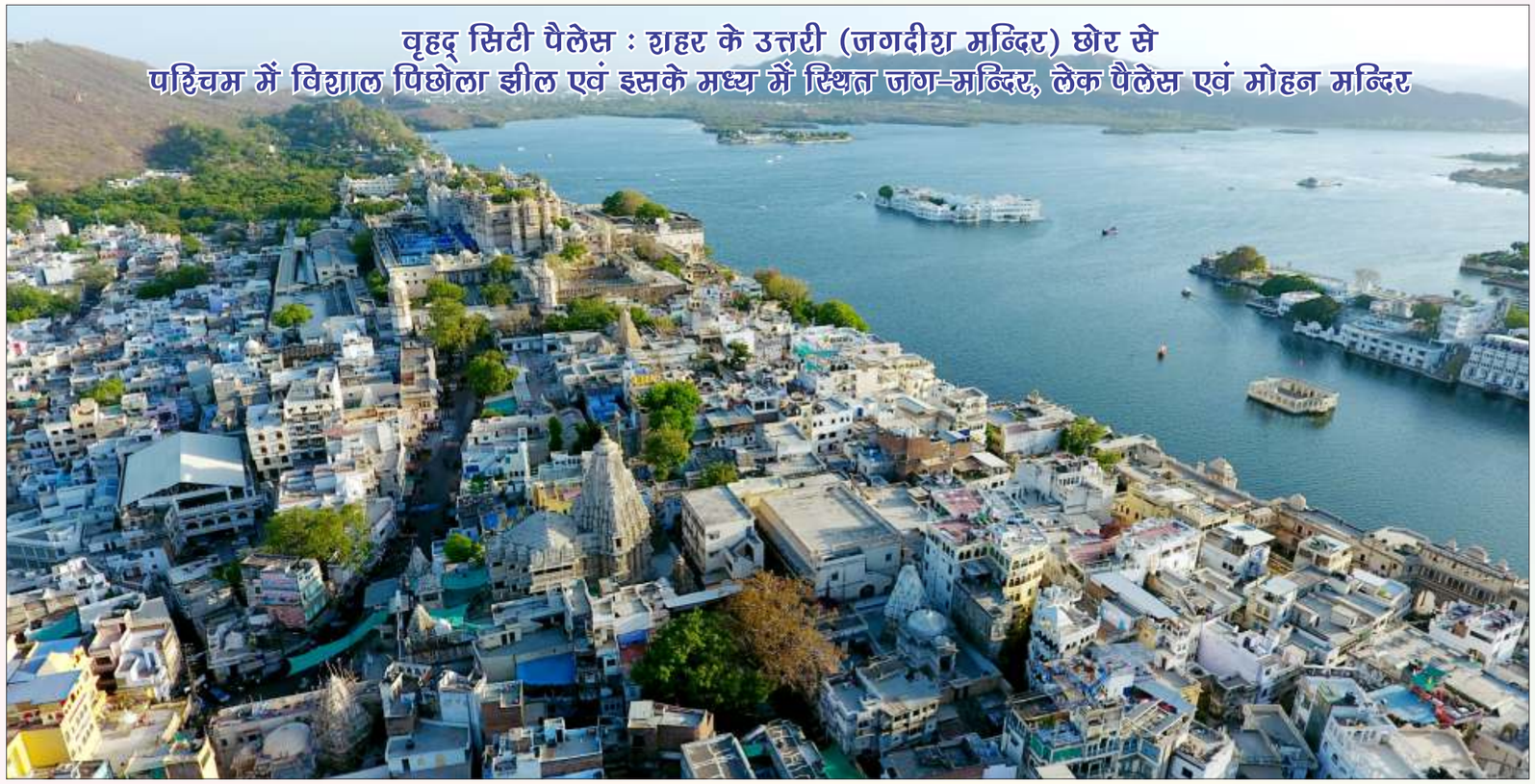

वृहद् सिटी पैलेस : शहर के उत्तरी (जगदीश मन्दिर) छोर से
पश्चिम में विशाल पिछोला झील एवं इसके मध्य में स्थित जग–मन्दिर, लेक पैलेस एवं मोहन मन्दिर

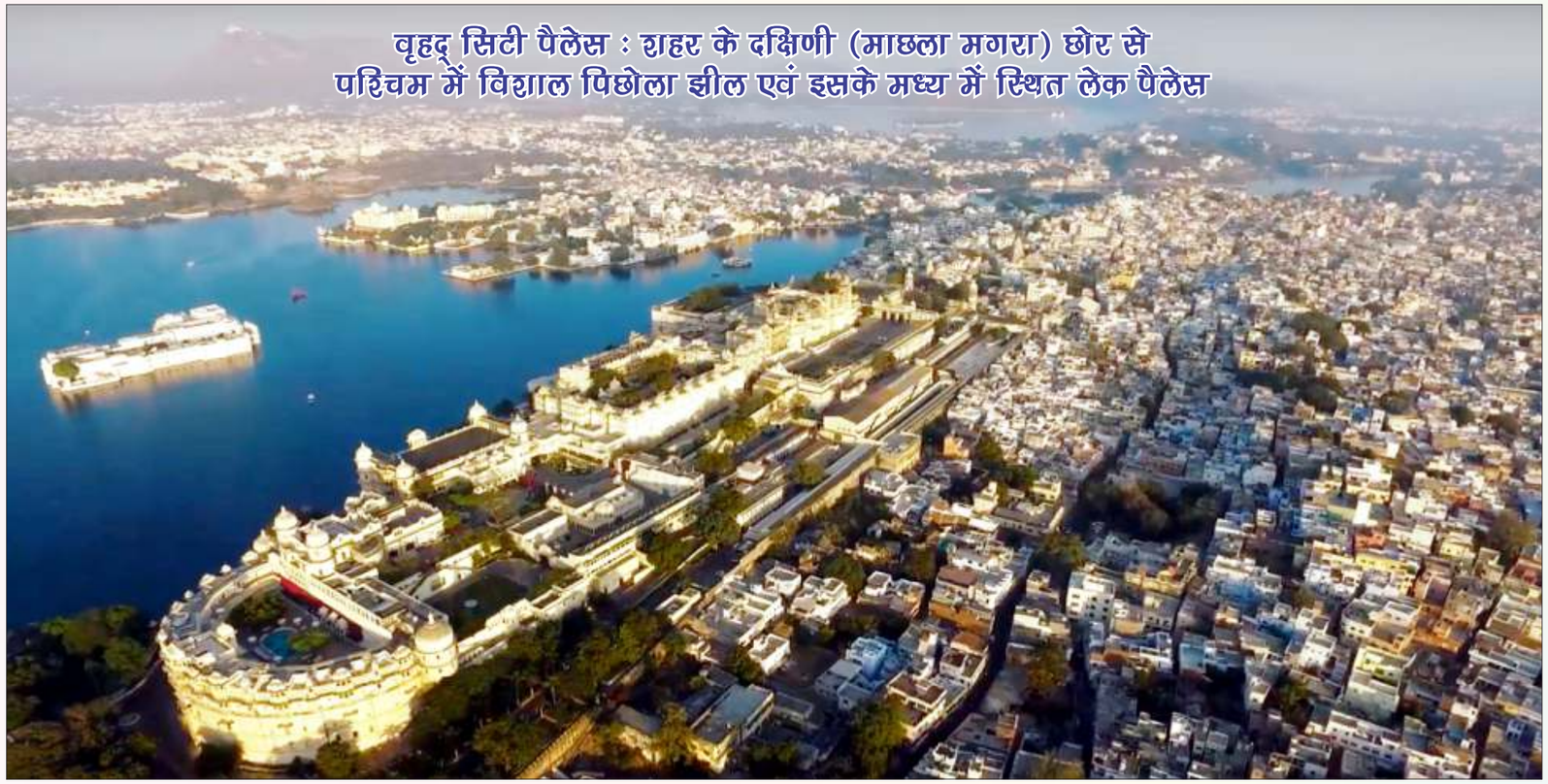

वृहद् सिटी पैलेस : शहर के दक्षिणी (माछला मगरा) छोर से
पश्चिम में विशाल पिछोला झील एवं इसके मध्य में स्थित लेक पैलेस

वृहद् सिटी पैलेस : शहर के पूर्वी छोर से
पश्चिम में विशाल अरावली पर्वत श्रृंखला एवं उस पर स्थित सज्जनगढ़

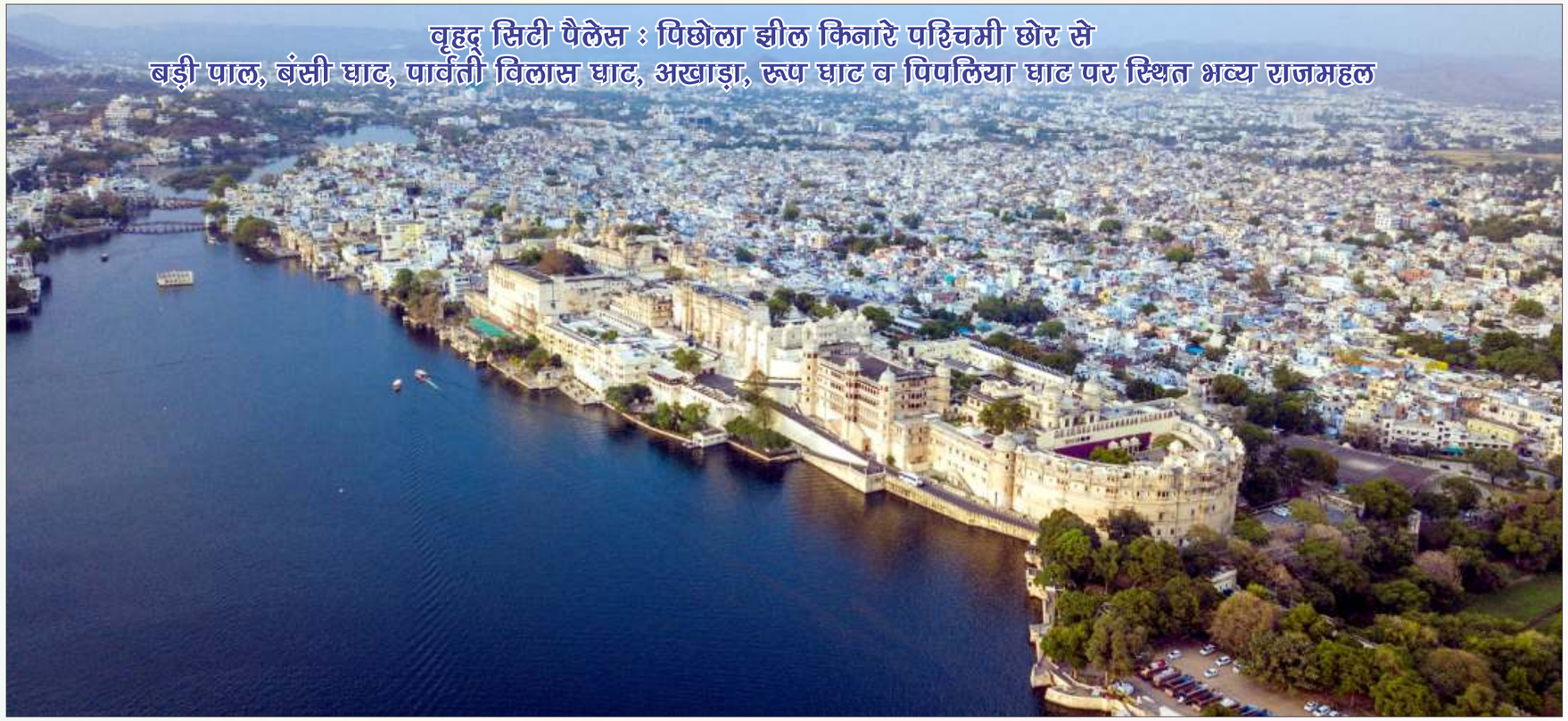

वृहद् सिटी पैलेस : पिछोला झील किनारे पश्चिमी छोर से
बड़ी पाल, बंसी घाट, पार्वती विलास घाट, अखाड़ा, रूप घाट व पिपलिया घाट पर स्थित भव्य राजमहल

महाराणा उदयसिंह (1537–72 ई.सं.) : उदयपुर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह शहर के जनमानस में सदैव अमर एवं चिर स्मरणीय रहेंगे। वे बहुत ही व्यावहारिक एवं कुशाग्र बुद्धि वाले शासक थे। उन्होंने मात्र एक किले चित्तौड़गढ़ की रक्षा हेतु जान की बाजी लगा देने की निरर्थकता का अहसास किया जो कि उन्हें खुले वातावरण में महसूस हुआ और उन्होंने अपनी राजधानी के लिए उदयपुर में पहाड़ियों से घिरे हुए नये क्षेत्र गिर्वा घाटी का चयन किया जो कि अरावली पहाड़ियों की दुर्गम श्रृंखला द्वारा संरक्षित था।

मेवाड़ की राजधानी उदयपुर की स्थापना 1559 ई.सं. में महाराणा उदयसिंह ने की थी। यद्यपि तिथि एवं वर्ष को लेकर इतिहासकारों के अलग–अलग मत हैं। कुछ इतिहासकार हिन्दू कैलेण्डर के अनुसार उदयपुर की स्थापना ''आखातीज'' के दिन मानते हैं, तो कुछ का कहना है कि उदयपुर की स्थापना 15 अप्रेल, 1553 और उस दिन भी आखातीज ही थी, जिसका प्रमाण उदयपुर का प्रथम महल मोतीमहल है, जो वर्तमान में मोती मगरी पर खण्डहर के रूप में विद्यमान है। इतिहासकारों के अनुसार एक बार महाराणा उदयसिंह मोतीमहल में निवास कर रहे थे, तभी वह शिकार की भावना से खरगोश का पीछा करते हुए उस जगह पहुँचे, जहाँ वर्तमान में राजमहल मौजूद है। वहाँ एक योगी साधु जगतगिरी, जो कि धूणी लगाए बैठे थे, से उनकी मुलाकात हुई और महाराणा के दिल का हाल जानकर साधु ने धूणी की जगह पर राजमहल बनाने का सुझाव दिया, जिसे महाराणा ने सहर्ष मान लिया। यह वृतान्त 1559 ई.सं. का था। तत्पश्चात् जिस पहाड़ी की चोटी पर महल का निर्माण कराया गया वह समूचे शहर से दिखाई देता था।

उदयसिंह द्वितीय महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) और बूँदी की राजकुमारी रानी कर्णावती हाड़ा (चौहान) के चौथे पुत्र थे। इनका जन्म चित्तौड़ में 4 अगस्त, 1522 को हुआ। महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के पश्चात् महाराणा रतन सिंह को उनका उत्तराधिकारी बनाया गया लेकिन उनकी हत्या के बाद उनके भाई विक्रमादित्य सिंहासन पर विराजमान हुए। उन्हें भी उनके चाचा बनबीर ने मार ड़ाला एवं उदयसिंह को भी बाल्यावस्था में मारने की कोशिश की गई लेकिन उनकी स्वामीभक्त सेविका पन्नाधाय ने अपने स्वयं के बेटे चंदन का बलिदान देकर उन्हें बचा लिया। वह दो वर्ष तक कुंभलगढ़ में राज्यपाल आशा शाह देपुरा (माहेश्वरी) के भतीजे के वेश में गुप्त रूप से रहे। 1540 ई.सं. में मेवाड़ के दरबारियों द्वारा कुंभलगढ़ में उनका राज्याभिषेक किया गया। उनकी पहली पत्नी महारानी जयवंता बाई से उनके सबसे बड़े बेटे महाराणा प्रताप का जन्म उसी वर्ष 9 मई को हुआ। महाराणा उदयसिंह ने अपने दरबारियों की सलाह पर चित्तौड़ के किलों को छोड़कर राजकुमार के साथ पहाड़ियों के मध्य स्थित कस्बे गोगुन्दा (अस्थायी राजधानी) में शरण ली तथा चित्तौड़ की सुरक्षा का दायित्व अपने विश्वसनीय सरदार जयमल और पत्ता के हाथों में सौंप दिया।

25 फरवरी, 1568 को अकबर ने लम्बी घेराबन्दी के बाद चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया एवं इसी के साथ महाराणा उदयसिंह ने अपनी राजधानी को संपूर्ण रूप से उदयपुर स्थानान्तरित कर दिया। 28 फरवरी, 1572 को 50 वर्ष की आयु में गोगुन्दा में उनकी मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् मेवाड़ के दरबारियों ने महाराणा उदयसिंह नामित जगमल के स्थान पर 1 मार्च, 1572 को उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराणा प्रताप का गोगुन्दा में राज्याभिषेक किया।

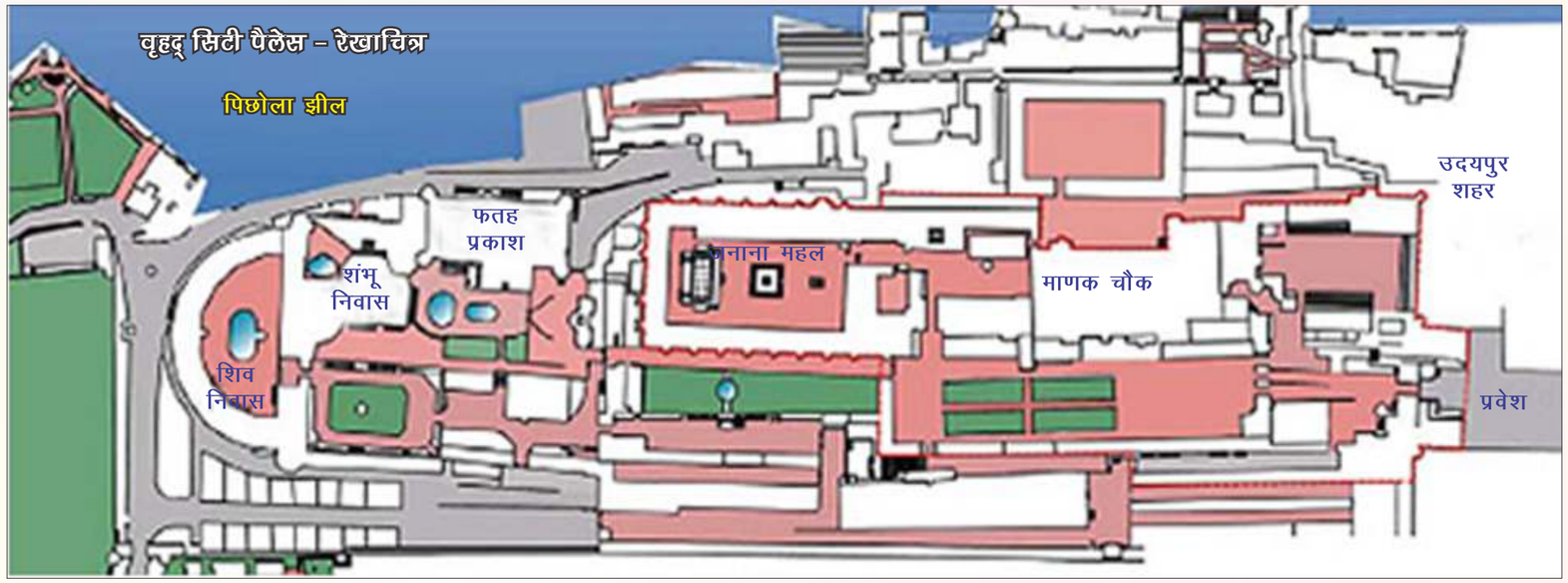

मेवाड़ एवं उदयपुर का संक्षिप्त इतिहास

प्रस्तावना : उदयपुर शौर्य एवं गौरव की धरा है। यह सत्कार एवं अनुराग की भूमि है जिसने चित्तौड़ के अनेक नायकों के उदय एवं पतन को देखा है। यह सांस्कृतिक वैभव एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की स्थली है। यह स्तम्भों वाले मण्डपों, विभिन्न मन्दिरों और हवेलियों के साथ शांत झीलों एवं द्वीपों, राजमहलों एवं सुन्दर उद्यानों के लिए विख्यात् है।

उदयपुर, मेवाड़ की अंतिम राजधानी की स्थापना महाराणा उदयसिंह ने 1559 ई. में की। महाराणा उदयसिंह ने सन् 1537 से 1572 तक शासन किया था। 1500 वर्ष पुराना यह मेवाड़ घराना दुनिया के सबसे पुराने शासक राजवंशों में से एक है। एक सुन्दर पर्वत पर स्थित उदयपुर को अक्सर ''सूर्योदय का शहर'' के नाम से सन्दर्भित किया जाता है। इसका नाम इसके संस्थापक महाराणा उदयसिंह से लिया गया है। साथ ही इसे ''पूर्व का वेनिस'', ''मन्दिरों का शहर'', ''झीलों की नगरी'', ''सौन्दर्य का शहर'', ''राजस्थान का कश्मीर'', ''दिव्य प्रेम का शहर'' आदि सुन्दर नामों से भी सुशोभित किया जाता है। उदयपुर को देखे बिना इसकी वास्तविक सुन्दरता की सराहना नहीं की जा सकती है। अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ एवं स्वच्छ झीलों के किनारे स्थित उदयपुर एक मनोहारी दृश्य प्रदान करता है, जो अत्यन्त लुभावना है।

राजस्थान का दक्षिणी भाग सांस्कृतिक रूप से मेवाड़ के नाम से जाना जाता है, जो राजस्थान की सबसे बड़ी रियासत है। उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा और राजसमन्द जिलों ने मेवाड़ का गठन किया, जिनकी विशिष्ट भौतिक एवं भौगोलिक विशेषताओं ने यहाँ के इतिहास को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदयपुर के शासक परिवार में सर्वोच्च दर्जा दिया जाता है और भारत के राजपूत प्रमुखों के बीच एक गरिमामय स्थान रखता है। उदयपुर के इस क्षेत्र को उदारतापूर्वक प्रकृति द्वारा सम्पन्न एवं मानवीय कौशल द्वारा समृद्ध किया गया है। उदयपुर से जयपुर, दिल्ली, अहमदाबाद एवं मुम्बई तक रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से पहुँचा जा सकता है। आज राजस्थान के एक बड़े पर्यटन केन्द्र के रूप में उदयपुर शहर अपने आकर्षक बाजारों, छतरियों व फव्वारों, उत्कृष्ट संग्रहालयों एवं स्वच्छ झीलों के साथ विकसित हो रहा है।

उदयपुर क्षेत्र के नागरिकों की जीवन शैली बहुत ही जीवन्त है। हरियाली, झीलें, किले, महल, उद्यान, लोगों की वेशभूषा, राजपूत वंश एवं उनके रावले एक विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थिति का निर्माण करते हैं। उदयपुर वर्षों से अनगिनत कलाकारों, वास्तुकारों, कवियों एवं स्वतंत्रता सैनानियों के लिए एक प्रेरणास्थल रहा है। वर्तमान में यह प्रशासनिक दृष्टि से संभागीय मुख्यालय है।

पुराने शहर में कई संकड़ी गलियाँ हैं, जिनमें दोनों तरफ झुके हुए झरोखें हैं। अधिकांश घरों के बाहरी भाग को सफेद रंग से रंगा गया है, जो पृष्ठभूमि में शानदार झीलों एवं उद्यानों के साथ पूरे शहर की सुन्दरता को जोड़ता है। आज के उदयपुर में पर्यटकों को अब घोड़ों एवं हाथियों की सवारी करने वाले एवं दरबारियों को प्रभावशाली वेशभूषा में महाराणा के महल में जाते हुए देखने को नहीं मिलता है, लेकिन उदयपुर की सड़कें अभी भी सम्मोहन एवं सद्भाव से भरी हुई हैं। शहर के चारों ओर बारह प्रवेश द्वार जिनमें झामरपोल, रामपोल, किशनपोल, उदियापोल, सूरजपोल, देहलीगेट, दण्डपोल, हाथीपोल, चांदपोल, सत्तापोल, अम्बापोल एवं ब्रह्मपोल स्थित हैं।

यह शहर लकड़ी के सुन्दर खिलौने, मार्बल के अद्भुत शिल्प, नक्काशीदार सजे हुए फर्नीचर, बंधेज की साड़ियों, पंख से हल्के जूतों, पेन्टिंग व अन्य विभिन्न हस्तशिल्प एवं पुरावशेषों के लिए प्रसिद्ध है। इस अद्भुत विलक्षण वीरभूमि की यात्रा आगन्तुक के मस्तिष्क में एक दीर्घकालीन जादू सा प्रभाव छोड़ देती है, जो उसे बार–बार यहाँ आने के लिए प्रेरित करती है।

इतिहास : मेवाड़ एवं उदयपुर का इतिहास दुनिया में अतुलनीय है। मेवाड़ भारत का सबसे सम्मानित राजपूत वंश है जिसे अब सिसोदिया कहा जाता है, लेकिन पूर्व समय में इसे गुहिलोत के नाम से जाना जाता था। इस वंश के वास्तविक संस्थापक बप्पा रावल थे, जो गुजरात के वल्लभ निवास के गुहिल वंश के थे। मेवाड़ के बाद के सभी शासकों, प्राचीन गुहिल वंश से लेकर वर्तमान मेवाड़ के महाराणा अरविन्द सिंह जी को बप्पा रावल का वंशज माना जाता है। संस्कृत शिलालेखों में मेवाड़ को 'मदपत' कहा जाता है। पौराणिक रूप से मेवाड़ के शासक ''सूर्यवंशी'' कहलाते हैं। उदयपुर महाराणा को राम के सिंहासन का वैध उत्तराधिकारी भी माना जाता है और उन्हें ''हिन्दुओं का सूर्य'' कहा जाता है। यही कारण है कि शाही परिवार के शिलालेखों में शाही परिवार के प्रतीक के रूप में सूर्य है। किवंदती है कि मेवाड़ का सिसोदिया राजवंश रामायण के नायक भगवान राम के बड़े पुत्र लव के माध्यम से अवतरित हुआ था। वे दक्षिण की ओर पलायन

भव्य राजमहल के साथ विभिन्न घाटों एवं पिछोला झील का तटीय अद्वितीय सौन्दर्य

संपूर्ण राजमहल का सुन्दरतम् दृश्य : मानो पानी पर तैरता हुआ एक अलौकिक राजमहल हो।

कर गये, जो कि अभी गुजरात है। तट के किनारे कई शहर थे जिनमें से एक को वल्लभी कहा जाता था।

''**जो दृढ़ राखे धर्म को तिहि राखे करतार।**'' अर्थात् ''सर्वशक्तिमान ईश्वर उन लोगों की रक्षा करता है जो धार्मिकता को बनाये रखने में दृढ़ है।''

500 ई.सं. के मध्य वल्लभीपुर के राजपूत राजा सिलादित्य सप्तम् की सिंध के अरब शासक के कमाण्डर सलीम यूनिस ने हत्या कर दी थी। उनकी चौथी और सबसे छोटी पत्नी पुष्पावती, जो माउन्ट आबू के पास अम्बाजी में अपने अजन्मे बच्चे के लिए प्रार्थना करने के लिए तीर्थ यात्रा पर थी, ने वल्लभी के विनाश और अपने पति की मृत्यु के बारे में सुना। निराशा में उसने एक गुफा में शरण ली और अपने बेटे को जन्म दिया, जिसे उसने गुहा (गुफा में जन्मा) कहा। अपने बच्चे को एक स्थानीय ब्राह्मण महिला को सौंपते हुए पुष्पावती सती हो गयी। तत्पश्चात् 'गुहा' या गुहिल भीलों के बीच युवा हुए। उन्हें ईड़र शहर के पास के जंगलों में पाला गया, जो स्थानीय भील सरदार माण्डलिक द्वारा शासित था, जिन्होंने गुहिल को अपने बच्चे के रूप में गोद लिया। 568 ई.सं. में जब गुहिल ग्यारह वर्ष के हुए तब भील सरदार ने गुहिल को अपना पहला क्षेत्र प्रदान किया, जिससे मेवाड़ राज्य का प्रादुर्भाव हुआ। 572 ई.सं. में माण्डलिक की मृत्यु हो गयी और गुहिल ने गद्दी संभाली तथा गुहिलोत वंश की स्थापना की। गुहिल के बाद उनके बेटे भोज (603–618 ई.सं.) ने अपनी राजधानी पास के भोमट जिले में स्थानान्तरित कर दी। इसके बाद महेन्द्र–प्रथम (618–626 ई.सं.) जिसे असंतुष्ट भीलों के एक समूह द्वारा जब वह शिकार कर रहा था, मार दिया गया और उन्होंने अपने लिए एक छोटे राज्य की मांग की। उनके उत्तराधिकारी नागादित्य (626–646 ई.सं.) ने अपनी सरकार का स्थान नागरधारा (जिसे बाद में नागदा नाम दिया गया) में स्थानान्तरित कर दिया। उदयपुर के उत्तर में यह स्थान अभी भी 23 किलोमीटर की दूरी पर एकलिंगजी के पास स्थित है।

नागादित्य के बाद, उनके पुत्र शिलादित्य, अपरागत और महेन्द्र द्वितीय ने 716 ईस्वी तक नागदा पर शासन किया और 716 ईस्वी में महेन्द्र द्वितीय की मृत्यु हो गयी तथा उनकी पत्नी ने अपने तीन वर्ष के बेटे कालभोज (बाद में बप्पारावल) को एक ब्राह्मण पुजारी को देखभाल के लिए सौंप दिया, जिन्होंने उसे पूरी तरह से धार्मिक प्रशिक्षण दिया। यहाँ उन्होंने स्थानीय देवता एकलिंगजी की पूजा–अर्चना करना सीखा। 21 वर्ष की उम्र में बप्पारावल ने हरित ऋषि के आशीर्वाद से पूरे गुहिलोत साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने का फैसला किया और चित्तौड़गढ़ की ओर बढ़ गये। शासक मानमोरी ने युवा बप्पारावल को अपनी सेना का कमांडर–इन–चीफ नियुक्त किया और 734 ईस्वी में बप्पारावल को चित्तौड़गढ़ के शासक के रूप में घोषित किया तथा चित्तौड़गढ़ आठवीं से सोलहवीं शताब्दी तक सिसोदिया वंश की राजधानी बना रहा। बप्पारावल ने अपने सच्चे संप्रभु एकलिंगजी के सम्मान में एक मन्दिर बनवाया, जहाँ वे पहली बार अपने गुरु हरित ऋषि से मिले थे। हालांकि मेवाड़ का अपना एक उत्कृष्ट सैन्य रिकॉर्ड था लेकिन यह अपनी गैर आक्रामकता की भावना से जाना जाता है। मेवाड़ हमेशा आक्रमणों से खुद को बचाने, अपने खोए हुए प्रदेशों को फिर से हासिल करने या अपने लोगों की गरिमा एवं स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए लड़ा। मेवाड़ी शासकों ने मुगलों के सामने झुकने से इंकार कर दिया और अपने राजपूती मूल्यों पर कायम रहे। उन्होंने मुगल सम्राटों के साथ अपनी राजकुमारियों की शादियाँ करने से इंकार कर दिया। 951 ईस्वी में रावल अल्लाट को चित्तौड़गढ़ से खदेड़ दिया एवं उन्हें आहड़ के नाम से एक नई राजधानी मिली। खेमसिंह के शासनकाल (1168–72 ईस्वी) के दौरान राजकुमार रहप नाथद्वारा के पास दक्षिण–पश्चिम में अपने जागीर के गांव सिसोदा चले गये, जहाँ उन्होंने एक नई उपाधि ''राणा'' अपनाई एवं परिवार को सिसोदिया वंश के रूप में जाना जाने लगा। तेईस पीढ़ियों तक मेवाड़ के शासक सुनसान घाटी में ही निवासरत रहे, जब तक कि राणा जैता सिंह (1212–53 ईस्वी) अन्त में

राजमहल के विभिन्न अति मनोहारी स्वरूप

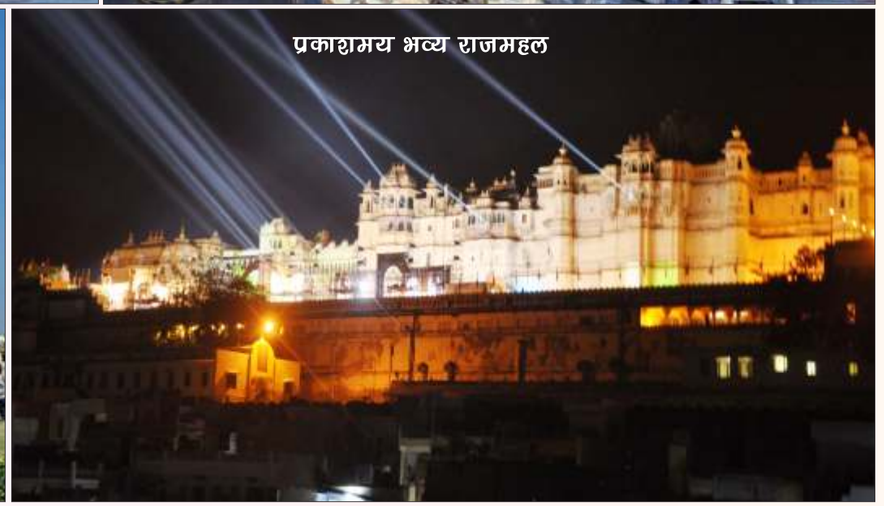

इतिहास के पृष्ठों से...

अपनी राजधानी चित्तौड़गढ़ वापस नहीं ले गये। आहड़ से जाने के बाद कई दशकों तक मुस्लिम आक्रमणकारियों ने चित्तौड़गढ़ पर हमला जारी रखा। 1303 ईस्वी में चित्तौड़ के किले को दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने घेर लिया था, जो कि राणा रतन सिंह की सुन्दर रानी पद्मिनी को जीतने की इच्छा से आया था। हार निश्चित देखकर पद्मिनी और किले की अन्य सभी महिलाओं ने स्वेच्छा से जौहर कर लिया। खिलजी ने किले में प्रवेश कर लूटपाट की और उसे नष्ट कर दिया। इस घटना को ''चित्तौड़ का पहला साका'' के रूप में जाना जाता है।

राजा विक्रमादित्य, जिन्होंने केवल पाँच वर्ष शासन किया, के शासनकाल (1534 ईस्वी) में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने मेवाड़ पर हमला किया। महाराणा विक्रमादित्य ने किले को छोड़ दिया एवं पास की पहाड़ियों में छिप गये। उनकी माता रानी कर्णावती एवं किले की 13000 अन्य महिलाओं ने जौहर की पारम्परिक रस्म के लिए खुद को बलिदान किया एवं लगभग 32000 राजपूत योद्धाओं ने साहसपूर्वक लड़ाई लड़ी, लेकिन उनकी सेना बुरी तरह लड़खड़ा गई। मेवाड़ के इतिहास में यह ''दूसरा साका'' के नाम से जाना जाता है।

राजा विक्रमादित्य को उनके दरबारियों द्वारा गिरफ्तारी के बाद एक महल में रखा गया तथा 12 वर्ष के उदयसिंह का राज्याभिषेक किया गया। पृथ्वीराज के पुत्र 'बनबीर' को उनके राज्य–प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया गया, जो बाद में मेवाड़ का शासक बनना चाहता था। अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करने के लिए बनबीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी। लेकिन उदयसिंह को उनकी बहादुर स्वामिभक्त सेविका 'पन्नाधाय' द्वारा अपने पुत्र का बलिदान देकर बचा लिया गया। ''उनके महान् बलिदान के बिना न तो महान् नायक 'प्रताप' और न ही उदयपुर शहर अस्तित्व में आया होता।'' इससे पन्नाधाय खींची वंश की मेवाड़ की सबसे प्रसिद्ध नायिका बन गई। असाधारण देशभक्ति के प्रतीक के रूप में उसका नाम मेवाड़ के इतिहास में सदा चमकता रहेगा।

आगे के दो वर्षों तक उदयसिंह ने कुंभलगढ़ में आश्रय लिया। जब चित्तौड़ के दरबारियों को पता चला कि उदयसिंह अभी भी जीवित है, तो उन्होंने बनबीर को निष्कासित कर दिया एवं उदयसिंह को वापस चित्तौड़गढ़ ले आये, जहाँ उन्हें मेवाड़ के शासक के रूप में आरूढ़ कर दिया गया। जब उदयसिंह के पोते अमरसिंह का जन्म हुआ, तो उन्होंने परिवार के देवता की पूजा करने के लिए एकलिंगजी के मन्दिर की यात्रा की। चित्तौड़ लौटने से पहले उन्होंने पावन बस्ती के दक्षिण में स्थित पहाड़ों में एक शिकार पर जाने का फैसला किया। उन्होंने अरावली में एक बड़ी ऊँची घाटी में प्रवेश किया एवं एक खरगोश का शिकार करने के बाद पिछोला के किनारे पर विश्राम किया। झील के पूर्वी किनारे पर उदय सिंह एक संत से मिले। संत ने उन्हें सलाह दी कि यदि उसने यहाँ एक शहर बसाया तो भाग्य हमेशा उनके पक्ष में रहेगा। महाराणा उदय सिंह ने अपनी राजधानी के लिए इस स्थान को उपयुक्त स्थान माना, क्योंकि चित्तौड़गढ़ सुरक्षित नहीं था।

महाराणा उदयसिंह का उदयपुर को मेवाड़ की नई राजधानी बनाने का वर्ष 1559 का निर्णय सही साबित हुआ, जब मुगल बादशाह अकबर ने 1567 ई.सं. में मेवाड़ पर हमला किया। उसने पहले पहाड़ी–किले मांडलगढ़ पर कब्जा किया और 20 अक्टूबर, 1567 को चित्तौड़गढ़ पहुँच गया। चार महीनों तक मेवाड़ के सैनिकों की अकबर के सैनिकों द्वारा की गई घेराबन्दी से मेवाड़ के सैनिक अपने स्वयं के किले में कैदी बन कर रह गये। इसके विपरीत आक्रमणकारियों की सभी रास्तों, बुनियादी संसाधनों एवं रसद तक सहज पहुँच थी। अन्ततः मेवाड़ के सैनिकों को किले से बाहर आना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप 24 फरवरी, 1568 को तृतीय जौहर (साका) हुआ। चित्तौड़ के पतन के बाद महाराणा उदयसिंह ने 1568 ई.सं. में अपनी राजधानी उदयपुर में पूर्णतया स्थानान्तरित कर दी।

सिटी पैलेस की प्राचीन झलकियाँ

बड़ी पोल का बाहरी चौक

सिटी पैलेस का माणक चौक

जगदीश मन्दिर से राजमहल मार्ग

सिटी पैलेस, पिछोला एवं बंसीघाट

बड़ी पोल, त्रिपोलिया गेट एवं मुख्य महल

बड़ी पोल एवं भीतर स्थित त्रिपोलिया गेट

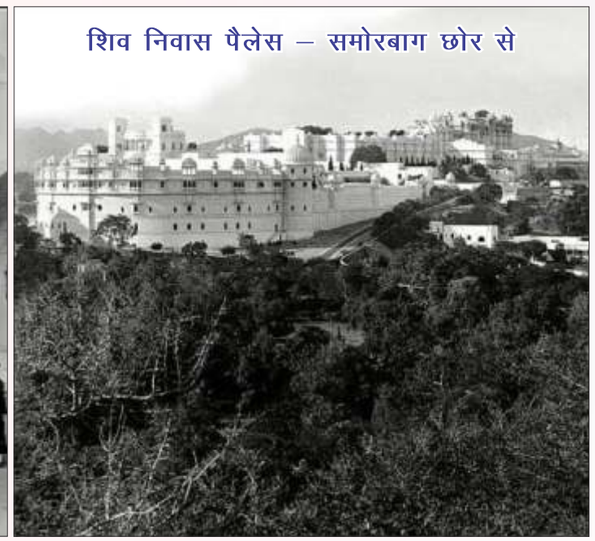
शिव निवास पैलेस – समोरबाग छोर से

इतिहास के पृष्ठों से...

महाराणा प्रताप 1572 ई.सं. में महाराणा उदयसिंह के उत्तराधिकारी बने। बादशाह अकबर ने कुली खान को उदयपुर में महाराणा प्रताप को पकड़ने या मारने के लिए भेजा था लेकिन वह गुहा–दुर्ग को पार कर गोगुन्दा के वाना दुर्ग नहीं जा सका, जहाँ महाराणा प्रताप ने आश्रय ले रखा था। मुगल पैदल सेना घुड़सवार सेना और तोपखाने को छोड़ने के बाद भी अगम्य वाना दुर्ग को पार नहीं कर सकी। महाराणा प्रताप ने पहाड़ी इलाकों में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए इस इलाके से अपना स्वतंत्रता अभियान सफलतापूर्वक जारी रखा। मैदानी क्षेत्र जो मुगलों के नियंत्रण में था, उस गैर–उपजाऊ व उत्पादन क्षेत्र से स्थानीय जनता पलायन कर गई थी।

महाराणा प्रताप को पकड़ने या मारने में अपनी सेनानायकों की विफलता के कारण स्वयं अकबर ने 1576 ई.सं. में उदयपुर पर हमला किया लेकिन वह भी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। हालांकि उसने उदयपुर पर कब्जा कर उसे मोहम्मदाबाद नया नाम दिया लेकिन जनमानस ने नया नाम स्वीकार नहीं किया, जैसा कि 1568 ई.सं. में चित्तौड़गढ़ का नाम बदलकर अकबराबाद करने पर भी स्थानीय जनता ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस तथ्य की सराहना इस दृष्टि में करनी चाहिये कि भारत के सबसे पवित्र और सबसे पुराने शहरों में से एक प्रयाग (तीर्थराज प्रमुख पवित्र स्थान और कुंभ मेला शहर) इलाहाबाद बन गया। जब अकबर ने वर्ष 1583 में अधिकार में लेकर इसका नाम बदल दिया और लोगों ने इसे स्वीकार भी कर लिया।

महाराणा प्रताप ने अधिक सुरक्षित गुहा–वाना दुर्ग क्षेत्र चावण्ड 1585 ई.सं. में एक नई राजधानी की स्थापना की, जहां इसके अतिरिक्त लौह अयस्क का भण्डार (नथारा की पाल) जमा था। महाराणा प्रताप के उत्तराधिकारी महाराणा अमर सिंह प्रथम उदयपुर में लौट आये, जहाँ राजमहल एवं शहरकोट का निर्माण प्रारम्भ कर शहर को सुदृढ़ करना शुरू किया। इसी क्रम में उनके उत्तराधिकारी महाराणाओं ने अपने शासनकाल में अपनी बौद्धिक कुशलता से पूर्ण नियोजन के साथ शहर की सुरक्षा, झीलों व महलों का समुचित विकास किया।

मेवाड़ के महत्त्वपूर्ण शासक : मेवाड़ के महाराणा अपनी प्रजा एवं अपने देश के प्रति अगाध प्रेम के लिए प्रसिद्ध रहे हैं जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं से पहले अपने नैतिक दायित्वों को बखूबी निभाया। मेवाड़ की रक्षा करने के लिए मेवाड़ के सिसोदिया वंश के राजाओं ने हजार से अधिक वर्षों तक अनेक युद्ध लड़े एवं अपनी उल्लेखनीय वीरता एवं दायित्व का प्रदर्शन किया। साथ ही उन्होंने आमजन के हित में जल संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए अनेक झीलों का उत्तरोत्तर निर्माण कर एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इससे आमजन को पर्याप्त पेयजल उपलब्धता के साथ उनकी आय के मुख्य स्रोत कृषि हेतु सिंचाई सुविधा का समुचित विकास संभव हुआ।

मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास में राजा गुहिलादित्य (566 ईस्वी), बप्पा रावल (734–53 ईस्वी), रावल अल्लाट (951 ईस्वी), रावल जैत्र सिंह (1213–53 ईस्वी), रावल रतन सिंह, महाराणा हमीर सिंह (1327–65 ईस्वी), महाराणा लाखा (1382–1421 ईस्वी), महाराणा कुम्भा (1433–68 ईस्वी), महाराणा सांगा (1509–27 ईस्वी), महाराणा उदय सिंह (1537–72 ईस्वी), महाराणा प्रताप (1572–97 ईस्वी), महाराणा अमर सिंह (1597–1620 ईस्वी), महाराणा करण सिंह (1620–1628 ईस्वी), महाराणा जगत सिंह (1628–52 ईस्वी) , महाराणा राज सिंह (1653–80 ईस्वी), महाराणा जय सिंह (1680–98 ईस्वी), महाराणा संग्राम सिंह (1710–34 ईस्वी), महाराणा भीम सिंह (1778–1828 ईस्वी), महाराणा स्वरूप सिंह (1842–61 ईस्वी), महाराणा शंभू सिंह (1861–74 ईस्वी), महाराणा सज्जन सिंह (1874–84 ईस्वी), महाराणा फतेह सिंह (1884–1930 ईस्वी), महाराणा भूपाल सिंह (1930–1955 ईस्वी), महाराणा भगवत सिंह (1955–1984 ईस्वी) एवं महाराणा श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ का विशिष्ट योगदान रहा है।

बड़ी पोल-त्रिपोलिया गेट-माणक चौक : राजमहलों का प्रवेश द्वार बड़ी पोल कहलाता है, जिसका निर्माण 1600 ई.सं. में हुआ। बड़ी पोल में प्रवेश होते ही आगे एक चौक है एवं इस चौक के खुर्रे पर शानदार नक्काशीदार तिगुना धनुषाकार गेट हैं, जो त्रिपोलिया कहलाता है। इनका निर्माण 1725 ई.सं. में महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय द्वारा कराया गया था। यह पारम्परिक रूप से संप्रभुता का प्रतीक है। बड़ी पोल एवं त्रिपोलिया गेट के मध्य पूर्व दिशा में सात आर्च हैं। ये आर्च उन स्मरण–उत्सवों के प्रतीक हैं, जब महाराणाओं को उनके वजन के बराबर सोने या चांदी से तोलकर उसके बराबर मूल्य की राशि गरीबों को वितरित की जाती थी। त्रिपोलिया से प्रवेश होते ही बड़ा (माणक) चौक आता है। लगभग 244 मीटर लम्बाई और 30.4 मीटर की चौड़ाई के साथ राजमहल का मुख्य चौक काफी आकर्षक है। माणक चौक के नीचे तहखाने बने हुए थे, वर्तमान में इसे संशोधित कर अत्याधुनिक पुस्तकालय की स्थापना की गई है।

हस्तीशाला : माणक चौक के पश्चिमी छोर पर एक हस्तीशाला है जिसमें महल परिसर से हस्तीपोल में प्रवेश किया जाता है। इसके सामने की दीवार 'अगद' कहलाती है। यहाँ पर हाथियों की लड़ाई का खेल आयोजित किया जाता था।

गणेश ड्योढ़ी : गणेश ड्योढ़ी त्रिपोलिया से आगे स्थित है जिसमें भगवान गणेश की एक सुन्दर संगमरमर की मूर्ति है, जो दो राजपूत महिलाओं को प्रदर्शित करती हुई दर्पण एवं जड़ाई कार्य से सुसज्जित हैं। इसका निर्माण महाराणा करणसिंह (1620–28) द्वारा कराया गया। महल के ऊपर स्थित रॉयल कोर्टयार्ड में जाने के लिए इस ड्योढ़ी से गुजरना पड़ता है।

राय आंगन : गणेश ड्योढ़ी से आगे स्थित राय आंगन (शाही प्रांगण) राजमहल परिसर का सबसे पुराना हिस्सा है, जिसे महाराणा उदयसिंह द्वारा 1571 ई.सं. में निर्मित किया गया था। यह एक बड़ा आंगन (कोर्टयार्ड) है, जो चारों तरफ से अपार्टमेन्ट से घिरा हुआ है। इसमें कई पूर्व शासकों के चित्र शामिल हैं जो मेवाड़ के शासनकाल का ऐतिहासिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यह प्रांगण अब सिटी पैलेस संग्रहालय के प्रवेश स्थल के रूप में सुशोभित है।

धुनी माता का तीर्थ : राय आंगन के पश्चिमी तरफ मेवाड़ के शासकों की रक्षा देवी के रूप में धुनी माता का एक सुन्दर मन्दिर स्थित है। यह महाराणा उदयसिंह द्वारा निर्मित महल का सबसे पुराना हिस्सा है जो उन्होंने एक सिद्ध सन्त, जिन्होंने उदयपुर को मेवाड़ की राजधानी बनाने की सलाह दी थी, की याद में बनवाया था।

अमर महल (बड़ी महल) : अमर महल को बड़ी महल भी कहा जाता है, जिसे महाराणा अमरसिंह द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। यह सिटी पैलेस (राजमहल) परिसर का सबसे ऊँचा हिस्सा है। यह महल एक ऊँचे बगीचे जो फव्वारों, मीनारों, छतों एवं एक चौकोर टब रूपी संगमरमर के साथ हरे–भरे पेड़ों और सुन्दर फूलों से सुसज्जित हैं। अमर महल का उपयोग शाही परिवार के मनोरंजन केन्द्र के रूप में किया जाता था। यह महल संपूर्ण उदयपुर शहर का एक सुरम्य दृश्य प्रदान करता है।

दिलखुश महल : दिलखुश महल को 'पैलेस ऑफ जॉय' के रूप में भी जाना जाता है। यह महाराणा करणसिंह द्वारा बनवाया गया था। इस महल की संपूर्ण दीवारों को विभिन्न चित्रों एवं दर्पण कार्य से उत्कीर्ण कर सुसज्जित किया गया है।

कृष्णा महल (कृष्णा विलास) : कृष्णा विलास, महाराणा भीमसिंह की सोलह वर्षीय पुत्री कृष्णा कुमारी को समर्पित है, जिसने एक प्रतिद्वन्द्वी राजकुमार से विवाह करने के बजाय आत्महत्या करना उचित माना। इसमें मेवाड़ के कुछ बेहतरीन लघु चित्रों का विस्तृत संग्रह हैं। ऐसा माना जाता है कि महाराणा भीम सिंह के शासनकाल के दौरान राज्य शक्तिहीन था और चारों ओर से आक्रमणों का सामना करना पड़ा था। जयपुर एवं जोधपुर दोनों राज्यों के राजकुमार महाराणा की एकमात्र पुत्री कृष्णा कुमारी से शादी करना चाहते थे। यदि महाराणा ने एक को उपकृत किया, तो राज्य को दूसरे के हमले का सामना करना पड़ेगा, इसने महाराणा को विकट परिस्थिति में डाल दिया। जब राजकुमारी कृष्णा कुमारी को अपने पिता की दुविधा के बारे में पता चला, तो उसने राजपूती शौर्य के साथ फैसला लेते हुए बिना किसी झिझक के जहर पी लिया और उनकी कमरे में ही तत्काल मृत्यु हो गयी। इस घटना से महाराणा अपने जीवन के प्रति निरूत्साहित हो गये और उस कमरे को उसके स्मारक के रूप में समर्पित कर दिया।

मोती महल : मोती महल महाराणा करणसिंह द्वारा बनवाया गया था। महाराणा जवान सिंह (1828–38 ई.सं.) के शासनकाल में इसे हजारों दर्पणों से अलंकृत किया गया था।

बड़ी चित्रशाली : राजमहल में स्थित यह भव्य चित्रशाली महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय के द्वारा निर्मित है। यह चित्रशाली उस समय के पुष्प चित्रों के लिए पहचानी जाती है। यह राजमहल के मुख्य आकर्षणों में से एक है।

काँच की बुर्ज : इस खूबसूरत कमरे का निर्माण महाराणा करण सिंह तथा काँच का कार्य महाराणा शंभू सिंह द्वारा करवाया गया था। इसकी छत की सभी दीवारों और गुम्बदों को सुनहरे और लाल दर्पण के कार्य से सजाया गया है।

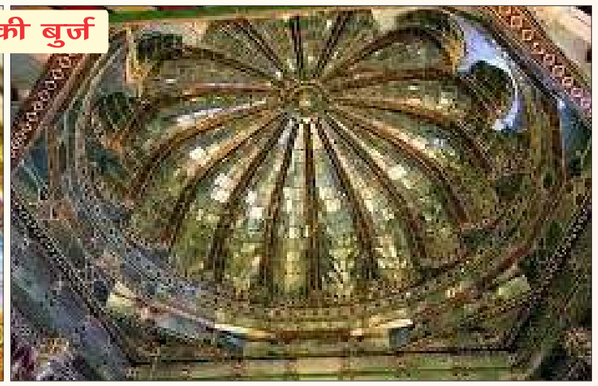

शिव निवास : महाराणा फतह सिंह द्वारा निर्मित शिव निवास पूर्व में शाही गेस्ट हाउस था, जो अब परिवर्तित होकर उदयपुर के सबसे शानदार होटलों में से एक है। सन् 1978 से 1982 के बीच महाराणा भगवत सिंह ने आठ हिस्सों को मिलाकर इस भवन की दूसरी मंजिल का निर्माण करवाया, जिसमें प्रत्येक भाग की अलग से छत भी है। इस होटल ने विश्व की कई गणमान्य हस्तियों की यादगार मेजबानी की, जिसमें क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय, नेपाल नरेश, ईरान के शाह और जैकलीन कैनेडी शामिल हैं। आज यह श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ द्वारा संचालित है। वर्तमान में यहाँ पर सभी पाँच सितारा सुविधाएँ उपलब्ध है। इसे उदयपुर के सबसे भव्य एवं रोमांचकारी महलों में से एक माना जाता है।

जनाना महल (रानियों का महल) : सिटी पैलेस संग्रहालय के दक्षिण में जनाना महल स्थित है। इसका निर्माण महाराणा करणसिंह ने 17वीं शताब्दी में शाही महिलाओं के लिए करवाया था। इस महल की ऊपरी खिड़कियाँ जालीदार पर्दों से ढ़की हुई हैं, जो शाही महिलाओं के लिए पारदर्शी पर्दे का काम करती थीं। यहाँ से वे गलियों में होने वाली गतिविधियाँ देख सकती थीं।

पूर्व में महल के अन्दर प्रदर्शित वस्तुओं में हाथी हौद, घोड़ा चलित गाड़ियाँ, तोप, मशीनगन, मिट्टी के तेल से चलने वाला एक पँखा, पानी की घड़ी एवं शिकार के दृश्य के चित्र थे। इस महल का उपयोग कई धार्मिक कार्यों के लिए भी किया जाता था। राज्य का सोना–चाँदी एवं खजाना भी यहीं पर रखा जाता था। सिटी पैलेस में बहुत सी रॉयल शादियाँ सम्पन्न हुई, जिनका आयोजन जनाना महल में ही हुआ। इसमें 500 मेहमानों के बैठने की व्यवस्था है। रात्रिकाल में यह महल मोमबत्तियों की रोशनी में चमक उठता है।

भीम विलास : महाराणा भीम सिंह द्वारा 18वीं शताब्दी में निर्मित भीम विलास की दीवारें नीले रंग पर सफेद अलंकरण से चित्रित हैं। यहाँ पर राधा–कृष्ण की लीलाओं को चित्रित करते हुए चित्रों का विशाल संग्रह हैं। भीम विलास में एक प्रसिद्ध सूर्य खिड़की है, जिसे सूरज गोखड़ा के नाम से जाना जाता है।

भीम विलास – भीतरी स्वरूप

प्रीतम निवास : इस महल का निर्माण महाराणा जगत सिंह द्वितीय (1734–51 ईस्वी) द्वारा करवाया गया। इसके साथ ही उन्होंने विश्व प्रसिद्ध जग निवास (वर्तमान लेक पैलेस होटल) का निर्माण करके उदयपुर को दुनिया के मानचित्र पर प्रतिष्ठित किया। महाराणा भूपाल सिंह जी ने जीवन–पर्यन्त इस महल का उपयोग अपने निजी महल के रूप में किया तथा आज भी उनकी आदमकद कटआउट पेन्टिंग इसमें मौजूद है।

प्रीतम निवास

सूर्य चौपड़ (सूरज गोखड़ा) : महाराणा करण सिंह द्वारा निर्मित सूर्य चौपड़ में प्रवेश द्वार की ओर सूर्य की एक छवि थी। बाद में श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ ने सूर्य की एक नई छवि स्थापित की, जिसमें क्रिस्टल की किरणें हैं। इसे विद्युत की मदद से जलते हुए सूरज की तरह देखा जाता है। इस कक्ष में पूर्व की ओर एक बालकनी है, जिसे सूरज गोखड़े के रूप में जाना जाता है तथा इसे बड़े परिसर से देखा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि वर्षा ऋतु के दौरान जब बादल अक्सर सूरज को छिपा देते थे, तब सूर्य के भक्त इसे देखे बिना भोजन–पानी ग्रहण नहीं करते थे, इसलिए उनके अनुरोध पर महाराणा, जो सूर्य के वंशज माने जाते थे, इस बालकनी में बैठकर स्वयं उन भक्तों को दर्शन देते थे ताकि वे अपना भोजन कर सके।

सूर्य चौपड़

तोरण द्वार

सूरज गोखड़ा

छोटी चित्रशाला : महाराणा करण सिंह (1620–28 ईस्वी) द्वारा निर्मित छोटी चित्रशाला अपनी शानदार नीली पच्चीकारी के लिए प्रसिद्ध है। बाद में महाराणा सज्जन सिंह के शासनकाल के दौरान इस भवन में विभिन्न परिवर्द्धन किये गये थे। इसे धर्म–निरपेक्ष एवं धार्मिक चित्रों से सजाया गया है। इसमें कला मूल रूप से हिन्दू संस्कृति पर आधारित होने के साथ मुगल शैली को आत्मसात् किया गया है।

छोटी चित्रशाला

मोर चौक : इसे मोर आँगन भी कहा जाता है। इसकी दीवारों पर मुख्य रूप से मोर की अच्छी पच्चीकारी एवं उभरी हुई नक्काशी है। महाराणा करण सिंह द्वारा निर्मित मोर चौक में मोरों की तीन चमकदार उच्च उभरी हुई नक्काशी हैं, जो तीन भारतीय मौसमों – गर्मी, सर्दी और वर्षा को प्रदर्शित करती हैं। महाराणा सज्जन सिंह ने 19वीं शताब्दी में इस प्रांगण में विभिन्न परिवर्द्धन किये। मोरों को काँच के 5000 टुकड़ों के साथ डिजाइन किया गया है, जो हरे, सुनहरे एवं नीले रंगों से चमकते हैं। ऊपरी स्तर पर एक प्रोजेक्टिंग बालकनी है, जो रंगीन काँच के आवेचन द्वारा घिरी हुई है। इस कक्ष के समीप काँच का बुर्ज है जिसमें दीवारों को सजाते हुए दर्पण मोजाइक का संग्रह है।

मोर चौक – अति अद्भुत झलकियाँ

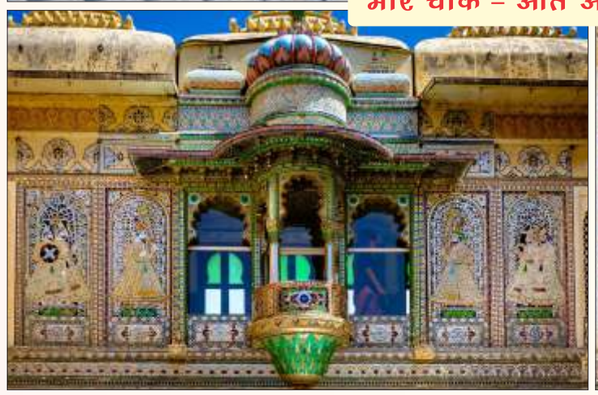

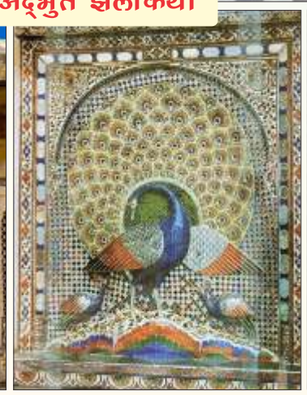

माणक महल : इसे रूबी पैलेस के रूप में भी जाना जाता है। माणक महल महाराणा करण सिंह द्वारा बनाया गया था और बाद में काँच एवं दर्पण का सुन्दर कार्य महाराणा सज्जन सिंह (1817–84 ईस्वी) द्वारा करवाया गया था। यह चीनी मिट्टी के बर्तन और बोहेमियन (सुन्दर) दर्पण के बड़े संग्रह को प्रदर्शित करने वाला एक दर्शनीय कम्पार्टमेन्ट है।

माणक महल

फतह प्रकाश : फतह प्रकाश जनाना महल के बगल में स्थित सिटी पैलेस के लिए नवीनतम् निर्माण है। आज फतह प्रकाश देश के सबसे विशिष्ट महल होटलों में से एक है। इसमें एक विशाल दरबार हॉल है, जिसमें चमकदार दीप वृक्ष और मेवाड़ राजवंश के चित्रों के साथ ऊँची दीवारें हैं। दरबार हॉल को सन् 1909 में फतह प्रकाश पैलेस में अधिकारिक कार्यों के लिए बनाया गया था। इस हॉल को झूमर के साथ सजाया गया है। यह हॉल बड़े सम्मेलनों एवं औपचारिक रात्रिभोज के लिए एक आदर्श स्थान है। इसके पश्चिमी भाग के साथ चलने वाली गैलेरी को गैलेरी रेस्तरां में

फतह प्रकाश महल

बदल दिया गया है, जो पिछोला एवं लेक पैलेस का अद्भुत दृश्य परिलक्षित करता है। महल में प्रसिद्ध क्रिस्टल गैलेरी है, जिसे सन् 1944 में जनता के लिए खोला गया था। इसका मूल उद्देश्य सन् 1877 में महाराणा सज्जन सिंह द्वारा संकलित क्रिस्टल के एक अद्भुत भण्डार को प्रदर्शित करना है जिसमें क्रिस्टल की कुर्सियाँ, ड्रेसिंग टेबल, सोफा, टेबल, क्रॉकरी, फव्वारें एवं गहने जड़ित कालीन जैसी दुर्लभ वस्तुएँ प्रदर्शित हैं। संयोग से इनका उपयोग कभी नहीं किया गया। फतेह प्रकाश के पीछे की ओर झील के किनारे 'सनसेट व्यू' देखने का आरामदायक सबसे अच्छा स्थान है। यह पर्यटकों का सबसे पसन्दीदा स्थल बनता जा रहा है।

चीनी चित्रशाला : यह सिटी पैलेस का एक विशिष्ट आकर्षण है जिसमें सुन्दर चीनी और डच टाइलों का संग्रह किया गया हैं।

फतहप्रकाश महल के बाहर सनसेट व्यू पॉइन्ट

दरबार हॉल

दरबार हॉल

क्रिस्टल गैलेरी

क्रिस्टल गैलेरी

सिटी पैलेस संग्रहालय : लगभग 400 वर्ष पुराने सिटी पैलेस में स्थित 'सिटी पैलेस संग्रहालय' की स्थापना महाराणा भगवत सिंह ने वर्ष 1969 में की थी। यह संग्रहालय सिटी पैलेस की प्रमुख इमारत जनाना महल तोरण पोल के अन्दर राज आंगन (शाही आंगन) में बना हुआ है। इसके प्रवेश द्वार को गणेश ड्योढ़ी के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है ''भगवान गणेश का द्वार''। सिटी पैलेस संग्रहालय में पर्यटकों के लिए मेवाड़ और सिसोदिया राजपूत वंश के महाराणाओं से जुड़ी हुई अनेक वस्तुएँ प्रदर्शनी के लिए रखी गई हैं। यह संग्रहालय कई मण्डपों और हॉल में विभाजित है। हर मण्डप में एक अलग विषय (थीम) पर आधारित वस्तुएँ प्रदर्शित हैं।

संग्रहालय में सिक्के, प्राचीन मूर्तियाँ, वस्तुएँ, पुरातन युग के शिलालेख, मेवाड़ शैली के छायाचित्र एवं दीवार पेन्टिंग के एक असामान्य वर्गीकरण के साथ कलात्मक ढंग से सजाए गये हैं। इनमें शस्त्रागार संग्रहालय में सुरक्षात्मक पहनावे एवं घातक दो तरफा तलवार सहित हथियारों का एक विशाल संग्रह प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय के एक भाग को प्रताप संग्रहालय के नाम से भी जाना जाता है। इसमें चेतक घोड़े के अतिरिक्त शूरवीर महाराणा प्रताप का कवच एवं उनसे सम्बन्धित अनेक वस्तुएँ रखी गई हैं। राणा सांगा के ढोल और बिगुल भी प्रदर्शित हैं।

इन सभी के अतिरिक्त राजसी प्रतीक चिह्न, वस्त्र, वाद्य यंत्र, जुलूस की सामग्री, पालकियाँ, म्यानें एवं कई अन्य वस्तुओं के साथ सिसोदिया महाराणाओं की शाही विरासत को बहुत ही सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है। विश्व की सर्वोच्च संग्रहालय संस्थाओं द्वारा ''सिटी पैलेस संग्रहालय, उदयपुर'' को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

यहाँ पर महाराणाओं एवं उनके आराध्य देवों के उपयोग में ली जाने वाली चांदी की वस्तुओं को भी प्रदर्शित किया गया हैं। इनमें चांदी की बग्गी, हाथी का हौदा, पालकी एवं हाथी–घोड़ों के आभूषण विशेष दर्शनीय हैं। प्रतिवर्ष लाखों देशी–विदेशी पर्यटक उदयपुर आते हैं जिनमें से अधिकांश इस संग्रहालय का अवलोकन अवश्य करते हैं।

सिटी पैलेस संग्रहालय के विभिन्न मण्डप

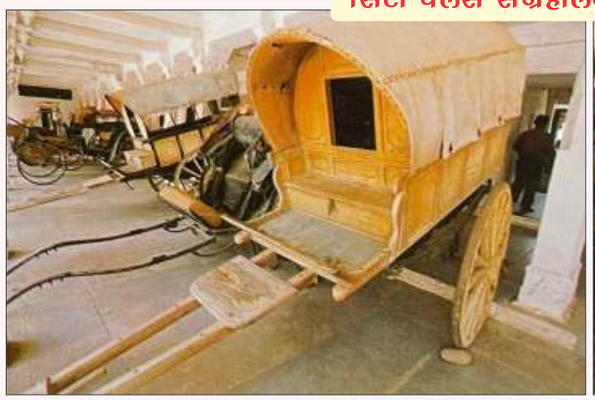

महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन

स्व. महाराणा भगवत सिंह जी ने मेवाड़ राजवंश की परम्परा के अनुसार ईश्वर की अनुपम कृति मानव एवं समाज की सेवा के पुनीत उद्देश्य से वर्ष 1969 में महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन की स्थापना की ताकि राजवंश की भावी पीढ़ियाँ अपने आत्म–सम्मान एवं आत्म–निर्भरता को संरक्षित एवं सुरक्षित रखते हुए सेवा कार्य करें।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस फाउण्डेशन के अन्तर्गत अनेक जन–हितैषी गतिविधियों का संचालन करते हुए वर्ष 1980 में महाराणा भगवत सिंह जी मेवाड़ ने महाराणा मेवाड़ वार्षिक पुरस्कार प्रारम्भ कर विशिष्ट ख्याति अर्जित की। प्रारम्भ में महाविद्यालय एवं विद्यालय स्तर के छात्रों के लिए पुरस्कारों की सराहनीय शुरूआत की। इन पुरस्कारों के दायरे का विस्तार वर्ष–दर–वर्ष बढ़ाने से इनकी संख्या एवं परिमाण में भी वृद्धि हो रही हैं। वर्तमान में इस योजना में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अपने क्षेत्र विशेष में समाज को स्थायी महत्व की सेवाएँ प्रदान करने हेतु विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित किया जा रहा है। इसी के साथ महाविद्यालय, विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों एवं बाल कलाकारों को अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों एवं समाज सेवा में विशेष दक्षता प्रदर्शित करने पर सम्मानित किया जा रहा है। वर्तमान में फाउण्डेशन द्वारा इन पुरस्कारों का दायरा और बढ़ाये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन वार्षिक पुरस्कारों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :–

(क) अन्तरराष्ट्रीय स्तरीय सम्मान
(1) कर्नल जेम्स टॉड सम्मान (1996 से)

(ख) राष्ट्र स्तरीय सम्मान
(1) हल्दीघाटी सम्मान (1982 से)
(2) हकीम खान सूरी सम्मान (1986 से)
(3) महाराणा उदय सिंह द्वितीय सम्मान (1996 से)
(4) पन्नाधाय सम्मान (1997 से)

(ग) राज्य स्तरीय सम्मान
(1) हरीत ऋषि सम्मान (1980 से)
(2) महाराणा मेवाड़ सम्मान (1981 से)
(3) महाराणा कुम्भा सम्मान (1980 से)
(4) महाराणा सज्जन सिंह सम्मान (1983 से)
(5) डागर घराना सम्मान (1991 से)
(6) राणा पूँजा सम्मान (1986 से)
(7) अरावली सम्मान (1983 से)

(घ) विश्वविद्यालय स्नातक – राजस्थान राज्य
(1) भामाशाह सम्मान (1984 से)

(च) विश्वविद्यालय छात्र – उदयपुर शहर
(1) महाराणा राज सिंह सम्मान (1980)

(छ) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड – उदयपुर शहर छात्र
(1) महाराणा फतह सिंह पुरस्कार (1980 से)

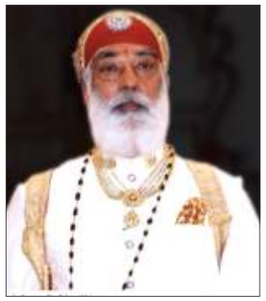

श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ : बहुमुखी प्रतिभा, सामर्थ्यवान एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़, मेवाड़ राजघराने के प्रतिष्ठित सिटी पैलेस की एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत को बहुत ही कुशलता से संरक्षित कर रहे हैं। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1971 में संवैधानिक संशोधन अधिनियम पारित होने से महाराणा सहित सभी पूर्व शाही खिताब छिन गए। मेवाड़ के 76वें महाराणा श्री अरविन्द सिंह जी मेवाड़ को उदयपुर के लोग आदरपूर्वक ''श्रीजी'' कहते हैं। कार्य के प्रति समर्पण ही उनके जीवन का लक्ष्य है। वर्तमान में वह महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबन्धन्यासी के रूप में सिटी पैलेस, उदयपुर से संचालित परोपकारी और धर्मार्थ गतिविधियों की व्यापक शृंखला का प्रबन्धन कर रहे हैं। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, विद्यादान ट्रस्ट, महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट एवं राजमाता गुलाब कुँवर चेरिटेबल ट्रस्ट विश्वसनीय सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट के रूप में उभरे हैं। इनके माध्यम से उदयपुर एवं इसके आसपास 50 से अधिक विकास परियोजनाएँ संचालित हैं, जिनमें सिटी पैलेस संग्रहालय, महाराणा मेवाड़ विशेष पुस्तकालय, महाराणा मेवाड़ अनुसंधान संस्थान, प्रकाशन विभाग, शैक्षणिक संस्थान आदि प्रमुख हैं, जिनका प्रबन्धन और विकास ट्रस्ट्स द्वारा किया जा रहा है।

एच.आर.एच. ग्रुप ऑफ होटल्स, उदयपुर हाउस ऑफ मेवाड़ का प्रमुख वाणिज्यिक उद्यम है। श्रीजी इसके अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक है। यह भारत की सबसे बड़ी हेरिटेज पैलेस होटल्स एवं रिसोर्ट्स की निजी स्वामित्व की एकमात्र शृंखला है। यहाँ द्वीप महलों, संग्रहालयों, दीर्घाओं, कार संग्रह आदि में शाही झलक मिलती हैं। उदयपुर में एच.आर.एच. समूह से संबंधित होटल्स हैं – शिवनिवास, फतहप्रकाश, शिकारबाड़ी, लेक पैलेस (जो ताज समूह के साथ परिचालन अनुबन्ध के तहत है), आदि संचालित हैं। श्रीजी ने उदयपुर को एक मुख्य आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की एवं इसे देश एवं दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर पहुँचाया। श्रीजी को होटल इन्वेस्टमेन्ट फोरम इण्डिया द्वारा जनवरी, 2012 में उत्कृष्ट व्यवसाय हेतु श्रेष्ठ प्रयासों, नेतृत्व क्षमता और आतिथ्य प्रतिष्ठानों में उपलब्धियों के लिए ''हाई–फाई हॉल ऑफ फेम अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। ट्रेवल एजेन्ट्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा वर्ष 2001 में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए प्रतिष्ठित ''अगस्त्य अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। श्रीजी प्रतिष्ठित वर्ल्ड ट्रेवल एण्ड टूरिज्म काउन्सिल के सक्रिय सदस्य रहे हैं, जो यात्रा और पर्यटन व्यवसाय का वैश्विक मंच है। श्रीजी राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित ''राजीव गाँधी पर्यटन विकास मिशन'' के सलाहकार भी रहे हैं।

श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ उदयपुर के उत्तर में 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित उनके आराध्यदेव ''श्री एकलिंगनाथजी'' के प्रति गहरी आस्था रखते है एवं श्री एकलिंगजी मन्दिर में होने वाली आरती में वे अक्सर भाग लेते हैं। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अन्तर्गत वार्षिक पुरस्कारों में तीन और पुरस्कार प्रारम्भ किए गए हैं, जिनमें मानव जाति की सेवा एवं इतिहास के अनुसंधान के लिए एक अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार **जेम्स टॉड सम्मान**, राष्ट्रीय बलिदान के लिए **पन्नाधाय सम्मान** और पर्यावरण के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य हेतु **महाराणा उदयसिंह द्वितीय सम्मान** शामिल हैं।

श्रीजी शैक्षिक विकास में काफी रुचि रखते हैं और उन्होंने सिटी पैलेस में महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के अतिरिक्त एक विशाल पुस्तकालय भी स्थापित किया है। पुस्तकालय में मेवाड़ के इतिहास और अन्य विषयों पर पुस्तकों का एक बड़ा संग्रह हैं। सिटी पैलेस के विभिन्न नवीनीकरण कार्य कुशलतापूर्वक संपादित कर इसे एक भव्य संग्रहालय के रूप में विकसित किया है। उदयपुर आने वाला प्रत्येक पर्यटक इसे देखें बिना उदयपुर नहीं छोड़ता है। इसके अतिरिक्त कुलीन राजघराने की महान् परम्पराओं को संरक्षित रखते हुए मान्यताओं के अनुसार उसे दर्शनीय रूप में प्रदर्शित भी किया है।

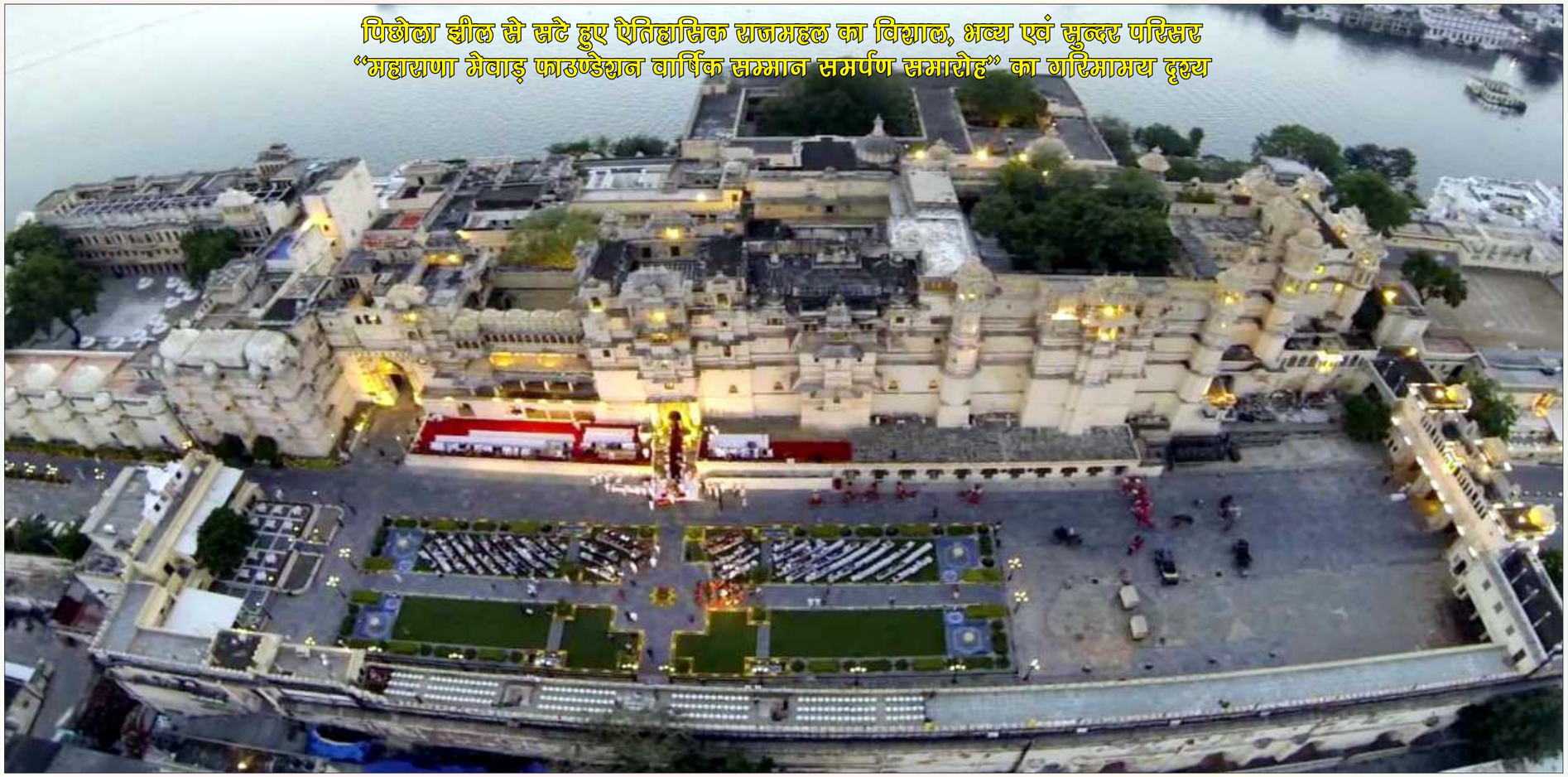

पिछोला झील से सटे हुए ऐतिहासिक राजमहल का विशाल, भव्य एवं सुन्दर परिसर
''महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन वार्षिक सम्मान समर्पण समारोह'' का गरिमामय दृश्य

श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ द्वारा संस्कार एवं संस्कृति के प्रोत्साहन स्वरूप होली का त्यौहार सिटी पैलेस प्रांगण में देशी-विदेशी पर्यटकों एवं विशिश्ट मेहमानों के मध्य प्रतिवर्ष बहुत भव्यता के साथ मनाया जाता है।

होली : बसंत ऋतु की शुरूआत पर फाल्गुन (मार्च) महीने में होली का रंगीन त्यौहार उमंग एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस त्यौहार की शुरूआत हाथियों, ऊँटों, घोड़ों और लोक–नृत्यों के जुलूस से होती हैं। लोग उदारतापूर्वक एक–दूसरे पर विविध रंग, पानी और गुलाल डालते हैं और आनन्दित होते हैं। होली किसी भी संकोच से छुटकारा पाने एवं आपसी सामंजस्य तथा मेल–मिलाप स्थापित करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर है।

उदयपुर शहरकोट एवं प्रवेश द्वार : उदयपुर शहर 24°35′ उत्तरी अक्षांश एवं 73°42′ पूर्वी देशान्तर एवं अरावली पर्वत श्रृंखला की एक गोलाकार या अंडाकार घाटी गिर्वा के मध्य स्थित है। उदयपुर विशिष्ट गुहा दुर्ग (जीवित रहने की घाटी जो ऊँची अगम्य पहाड़ियों से घिरी हुई हो) एवं पश्चिम में वाना दुर्ग (15 कि.मी. की दूरी तक घने अगम्य वन से चारों ओर से घिरी हो) पर स्थित है। इन दोनों प्राकृतिक दुर्गों के मध्य की उपजाऊ घाटी पर, जिसे पर्याप्त पानी की आपूर्ति, कृषि क्षेत्र, वन और खनिज संसाधन (ताँबा, लोहा, जस्ता, सीसा, चाँदी धातु और निर्माण सामग्री आदि) आदि के कारण हजारों वर्षों तक एक आदर्श मानव निवास स्थल के रूप में उपयुक्त माना गया, वहाँ पर उदयपुर शहर बसा हुआ है।

प्रथम पंक्ति सुरक्षा व्यवस्था : पहाड़ी किले चित्तौड़गढ़ की भेद्यता और गुहा–वाना दुर्ग की महत्ता को समझने के बाद महाराणा उदयसिंह ने 15 अप्रेल, 1553 को पिछोला झील के पूर्वी तट पर बाढ़ग्रस्त आयड़ शहर से दूर एक नई राजधानी उदयपुर की नींव रखी, जो सामरिक महत्व की ऊँची पहाड़ी माछला मगरा से सुरक्षित थी। यहां पर तोप चलाने के लिए उपयुक्त किले एकलिंगगढ़ की स्थापना की गयी। उन्होंने इसके साथ एक रक्षा बाँध (1559–1565 ईस्वी) का निर्माण किया जिससे उदयसागर झील अस्तित्व में आई एवं इसने प्राकृतिक सुरक्षात्मक गोलाई में अरावली पहाड़ियों में स्थित अन्तर को अवरुद्ध कर दिया। इसी क्रम में नव स्थापित मेवाड़ की राजधानी उदयपुर का दक्षिणी एवं पश्चिम खुला क्षेत्र बहुत ही प्रभावशाली ढंग से झीलों का निर्माण कर बंद कर दिया गया। इसके अतिरिक्त व्यापारिक मार्गों के साथ श्रृंखलाबद्ध गोलनुमा पहाड़ियों के सामरिक महत्व के स्थल पर सुरक्षा दीवार सहित निम्न तीन प्रवेश द्वार स्थित हैं :–

चीरवा द्वार : यह द्वार उत्तरी दिशा में राजपूताना एवं दिल्ली से आने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग गिर्वा घाटी के ऊपरी छोर की अरावली पर्वत श्रृंखला के मध्य स्थित है तथा यह विशिष्ट सर्पाकार ऊँचे–नीचे मार्ग के रूप में दृष्टिगत होता है। वर्तमान में इस क्षेत्र के परिदृश्य को परिवर्तित कर सड़क मार्ग पर दो दर्शनीय टनल बना दी गई हैं एवं पुराने पहाड़ी मार्ग पर वन विभाग द्वारा फूलों की घाटी एवं मेवाड़ जैव विविधता पार्क में जिपलाईन, ईको ट्रेल, चिल्ड्रन पार्क एवं व्यू पॉइन्ट के अतिरिक्त पेड़ों पर मचान पर्यटकों को रोमांचित करते हैं। इस ऐतिहासिक अभेद्य चीरवा द्वार पर करीब 50 वर्ष पूर्व मुख्य द्वार को छोड़कर पश्चिम की ओर शहरकोट एवं पहाड़ी को काटकर एक चौड़ा रास्ता बनाया गया जिससे बड़े वाहन आसानी से इस घाट के आर–पार आ–जा सके। भव्य द्वार एवं इस पर निर्मित सुरक्षा–कक्ष आज भी दृष्टिगत होते हैं। इस स्थान को पर्याप्त सुधार एवं उत्तम रखरखाव के बाद विशिष्ट फोटोग्राफी स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। इसके दोनों ओर ऊँची पहाड़ियाँ हरीतिमा से आच्छादित भव्य स्वरूप में नजर आती हैं। मुख्य टनल से इस स्थल पर जाने हेतु सीढ़ियाँ भी निर्मित हैं।

देबारी द्वार : यह द्वार पूर्व में देबारी (देव बारी) से चित्तौड़गढ़ (100 कि.मी. दूर विंध्याचल पठार तक फैला हुआ क्षेत्र) तथा मालवा से आने वाले प्रमुख मार्ग पर पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्र के संधि स्थल पर स्थित है। इसका निर्माण महाराणा उदयसिंह द्वारा नए नगर उदयपुर से 15 कि.मी. दूर स्थित गिर्वा घाटी के देबारी में किया गया एवं वि.सं. 1610 के आषाढ़ बदी तीज (रविवार, 20 मई, 1554 ईस्वी) को पूर्ण हुआ। देबारी दरवाजे के बाहर पूर्व दिशा में स्थित स्थल कुछ वर्षों पूर्व हिन्दुस्तान जिंक लि. द्वारा बहुत ही सुन्दर रूप से विकसित किया गया था तथा इसका रखरखाव भी उच्च स्तर का था। परन्तु वर्तमान में यह स्थल काफी जर्जरावस्था में है। इस ऐतिहासिक विरासत का रखरखाव उच्च स्तर का ही होना चाहिये। यहां पर स्थित पुलिस थाना किसी अन्य स्थान पर स्थानान्तरित कर इस स्थल के साथ यहाँ स्थित दरवाजा, बावड़ी, मन्दिर, छतरियों आदि को पुनः अपने मूल स्वरूप में लाकर पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। काश! राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ यहाँ पर स्थित ऐतिहासिक बावड़ी के प्रारम्भिक स्थल को बचा लिया जाता, तो अधिक उत्तम होता। बावड़ी की वर्तमान स्थिति को देखकर मन व्यथित अवश्य होता है। इस स्थल के ऊपर मीटर गेज रेल लाइन की गुफा भी है, जिसे देबारी दरवाजे परिसर के साथ काफी दर्शनीय बनाया जा सकता है। ऐतिहासिक दरवाजे एवं बावड़ी के साथ इस परिसर में राजराजेश्वर महादेव मन्दिर एवं तीन अन्य छतरियां भी स्थित हैं।

मंदिर श्री राजराजेश्वर महादेव, बावड़ी, छतरियाँ एवं देबारी दरवाजा : प्रशस्ति वि.सं. 1819–20 (ई.सं. 1762) वैशाख सुदी अष्टमी के अनुसार यह मन्दिर, बावड़ी तथा मन्दिर के निकट वाली धर्मशाला (अभी ध्वस्त) महाराणा राजसिंह द्वितीय की माता श्रीमती बख्त कुँवर ने अपने पुत्र महाराणा राजसिंह के देहान्त हो जाने पर सुकृत के लिए बनवाई। 17वीं एवं 18वीं शताब्दी की शैव प्रतिमाओं में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण श्याम पाषाण से निर्मित चतुर्मुखी आकर्षक शिव बाण इस मन्दिर में स्थापित है। इस प्रतिमा के चार मुख क्रमशः शान्त रस (पूर्व), रौद्र रस (दक्षिण), प्रेम रस (पश्चिम), अद्‌भुत रस (उत्तर) अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ स्थित एकमुखी बावड़ी में 2 स्तम्भ युक्त मण्डल, 3 परिध व 48 सीढ़ियाँ तथा 29 ताकें हैं। मन्दिर से देबारी दरवाजे की ओर जाते हुए बायीं तरफ 3 ऐतिहासिक छतरियाँ हैं। इनमें से मध्य छतरी गौरा सिंह राठौड़ (बल्लू दासौत) की है, जो औरंगजेब की सेना से युद्ध (ई.सं. 1679, 14 दिसम्बर) में शहीद हुए। देबारी दरवाजे के किवाड़ वि.सं. 1731 (ई.सं. 1674) में बनाए जाने का वर्णन है। इस मन्दिर, बावड़ी एवं छतरियों का जीर्णोद्धार कार्य श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ द्वारा वर्ष 2000–01 में सम्पन्न कराया गया।

चीरवा द्वार क्षेत्र : मेवाड़ जैव विविधता पार्क एवं फूलों की घाटी

चीरवा द्वार क्षेत्र : मेवाड़ जैव विविधता पार्क, फूलों की घाटी, राष्ट्रीय राजमार्ग, चीरवा मुख्य द्वार : विहंगम् स्वरूप

फूलों की घाटी में जिपलाइन

केवड़ा की नाल द्वार : वागड़ क्षेत्र एवं गुजरात से आने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग को परकोटा व द्वार बनाकर सुरक्षित कर दिया गया था। यह नाल सीधी खड़ी ढलान वाली संकरी गिर्वा घाटी के दक्षिणी छोर पर स्थित है, जो घुसपैठियों के प्रवेश के लिए अत्यन्त कठिन थी। वर्ष 2011–12 में यहाँ पर इको ट्यूरिज्म कॉम्प्लेक्स बनाया गया है।

गिर्वा घाटी पर प्रथम सुरक्षा कवच अरावली पर्वत शृंखला, उसमें तीन प्रवेश द्वार एवं रक्षककोट, उदयसागर झील से सुरक्षित उदयपुर घाटी एवं उसमें स्थित उदयपुर शहर को और अधिक सुरक्षित करने के लिए शहर के तीन तरफ 9 कि.मी. लम्बी शहरकोट का निर्माण अनेक महाराणाओं के कुशल नेतृत्व में किया गया।

दूसरी पंक्ति सुरक्षा व्यवस्था – शहरकोट एवं द्वार : उत्तर, दक्षिण तथा पूर्व में स्थित व्यापारिक मार्गों पर गिर्वा घाटी तथा उसके आसपास के विशिष्ट भूभाग उदयपुर शहर की प्रथम अभेद्य प्राकृतिक सुरक्षा व्यवस्था है। इसी प्रकार इस शहर की दोहरी सुरक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत बाहर की ओर अनेक द्वारों के साथ राजमहलों के चारों ओर मानव निर्मित सुदृढ़ शहरकोट का निर्माण किया गया है। उदयपुर शहर की तीन दिशाओं उत्तर, दक्षिण एवं पूर्व की ओर से घेरती हुई शहरकोट एवं पश्चिम की ओर से पिछोला झील तंत्र के द्वारा आक्रान्ताओं से सुरक्षित था।

एक शताब्दी से भी अधिक समय की कालावधि में धीरे–धीरे बनकर पूर्ण होने वाली 9 कि.मी. लम्बाई में फैली, 8 से 10 मीटर तक ऊँची एवं 4 मीटर चौड़ी, बारह द्वारों व कर्णों पर बुर्जों से युक्त, ऊपर कपि शीर्षों (कंगूरों) तथा काण्डवारिणियों (छाल दीवारियों) के अलंकरण वाली एक सुदृढ़ समुन्नत नगर प्राचीर निर्मित की गई थी। नगर में प्रवेश शहरकोट में बने हुए सामरिक स्थिति वाले 12 नगरद्वारों से होकर ही संभव था।

हनुमानपोल : यह पिछोला झील के दक्षिण–पूर्वी किनारे पर स्थित है। यह झामर पोल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

रामपोल : यह माछला मगरा के पश्चिमी ढलान के आधार पर स्थित है। इसे रमणिया पोल भी कहते है।

किशनपोल : यह माछला–मगरा (गन हिल) के पूर्व की तरफ दक्षिणी छोर की मुख्य सड़क पर स्थित है। इसे कृष्ण पोल भी कहते है।

उदियापोल : यह मूल रूप से कमलिया पोल के नाम से जाना जाता था, जिसे बाद में महाराणा सज्जनसिंहजी (1874–1884) ने महाराणा उदयसिंह के नाम पर कर दिया।

सूरजपोल : यह पूर्व की ओर से आने वाले मुख्य मार्ग का प्रवेश द्वार था।

देहली गेट : इसे पूर्व में दिल्ली दरवाजा कहा जाता था। यह उत्तर की ओर से आने वाले मुख्य मार्ग का प्रवेश द्वार था।

दण्डपोल : यह हाथीपोल से पूर्व की ओर स्थित एक छोटा द्वार था, जो वर्तमान में शहरकोट को ढहा देने से नष्ट हो गया है। इसे प्राचीन समय में निर्वासन अथवा देश–निकाला द्वार भी कहा जाता था।

हाथीपोल : यह उत्तर से आने वाले मार्गों (उत्तरी भारत को जोड़ने वाला प्रमुख व्यापारिक मार्ग–वर्तमान में नेशनल हाईवे–8) तथा पश्चिम से आने वाले मार्गों के लिए मुख्य प्रवेश द्वार था। यह सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला द्वार था, क्योंकि कैलाशपुरी स्थित एकलिंगजी के लिए इसी द्वार से जाना होता था, इसीलिए यह राज्य के प्रथम श्रेणी के जागीरदार (पारसोली) की सुरक्षा में प्रयुक्त था। गद्दी पर बैठने के समय महाराणा इसी द्वार का रस्मी तौर पर पूजन करते थे।

चाँदपोल : यह पिछोला झील के किनारे एवं नगर के पश्चिम की ओर स्थित द्वार है।

सीतापोल : यह चाँदपोल के समीप स्थित है तथा इसे सत्तापोल भी कहते है।

अम्बापोल : यह चाँदपोल के पश्चिम एवं अम्बामाता मंदिर के पूर्व में स्थित है।

ब्रह्मपोल : यह पिछोला के उत्तरी–पश्चिमी किनारे पर स्थित नगर का पश्चिमी द्वार है।

शहरकोट का निर्माण : उदयपुर की शहरकोट एवं खाई का निर्माण महाराणा उदयसिंह के सुपौत्र महाराणा अमर सिंह प्रथम (1597–1620 ई.सं.) द्वारा 1615 ई.सं. (1671 वि.सं.) में प्रारम्भ किया गया। यद्यपि कुछ ही समय बाद इसे अपरिहार्य कारणों से बन्द कर दिया गया। महाराणा करणसिंह (1620–1628 ई.सं.) ने उदयपुर की रक्षा प्रणाली की पुनः शुरूआत कर माछला मगरा पर एकलिंगगढ़ किले का पुनर्निर्माण सुदृढ़ करते हुए शहर के तीनों ओर आवश्यक विशाल शहरकोट का निर्माण प्रारम्भ किया। हालांकि उनके शासनकाल के दौरान भी इसे पूर्ण नहीं किया जा सका। कई वर्षों बाद जब मराठों ने शहर पर हमला किया, जिनका मुख्य उद्देश्य जीतने के बजाय बलात्कार और लूटपाट करना था, तब इस नए खतरे के कारण महाराणा अमर सिंह द्वितीय (1698–1710 ई.सं.) द्वारा शहरकोट का कार्य फिर से प्रारम्भ किया गया और उनके पुत्र महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (1710–1734 ई.सं) द्वारा 1733 ई.सं. में उदयपुर की स्थापना के लगभग 180 वर्ष बाद इसे पूर्ण किया जा सका।

झामरपोल से रामपोल – एकलिंगगढ़ किला – किशनपोल – रेलवे स्टेशन – उदियापोल – सूरजपोल की कुछ दूरी तक तथा स्वरूपसागर से चाँदपोल, सत्तापोल, अम्बापोल एवं ब्रह्मपोल तक शहरकोट अभी भी अपने पुरातन स्वरूप में मौजूद है।

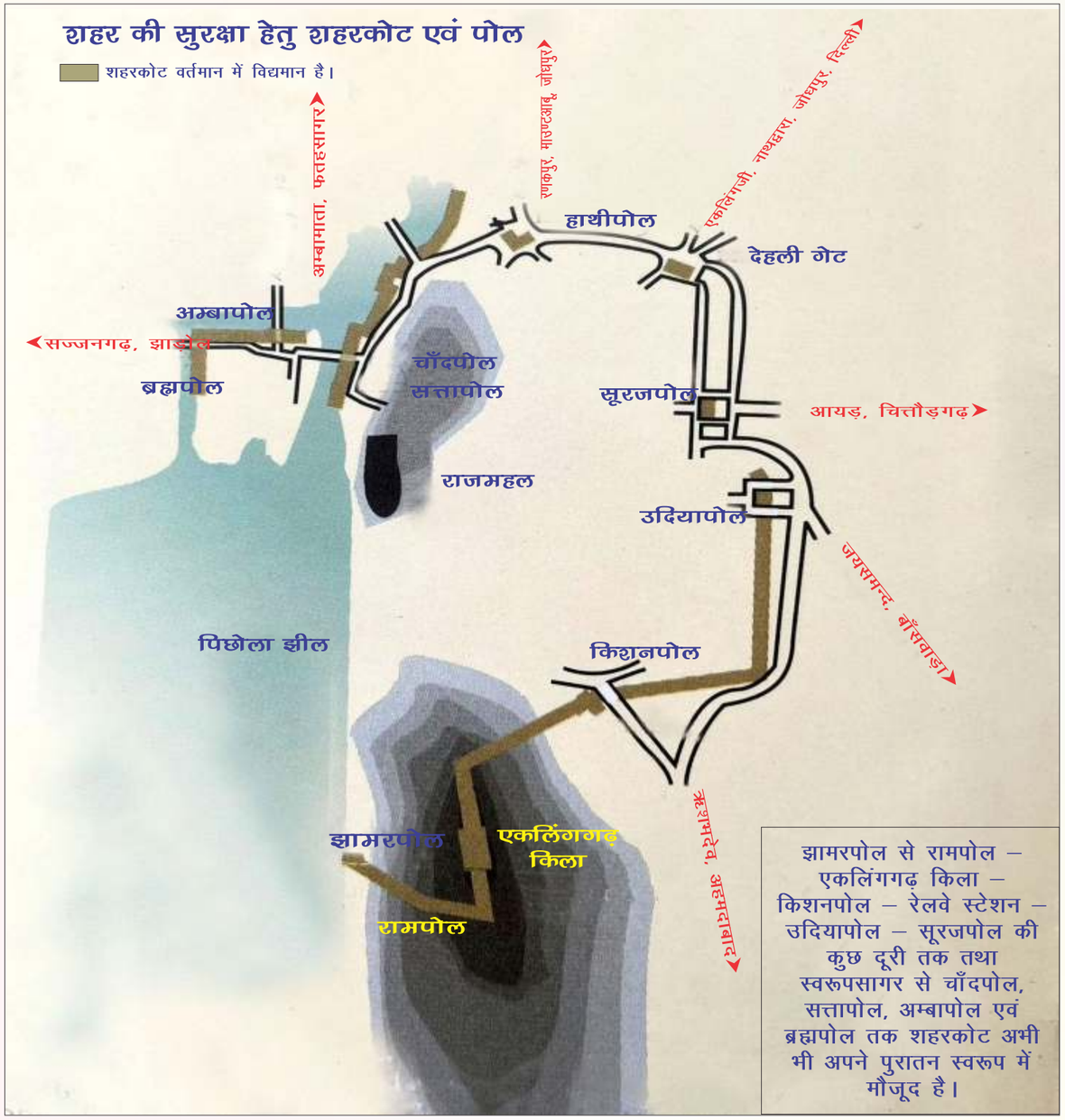

शहरकोट एवं द्वारों की बनावट : शहर के दक्षिण में झामरपोल के नाम से एक द्वार पिछोला झील और माछला मगरा की सीधी चढ़ाई के बीच की संकरी खाई पर बनाया गया था। इस प्रवेश द्वार से शहरकोट प्राचीर पहाड़ की तरफ चढ़कर एकलिंगगढ़ किले तक जाती है। इसके मध्य रामपोल पूर्ण सुरक्षा चौकी के रूप में अवस्थित है। फिर इससे नीचे की ओर किशनपोल स्थित है। विशाल शहरकोट किशनपोल से अगले प्रवेश द्वार उदियापोल तक बनाई गई थी। उदियापोल का नामकरण महाराणा उदयसिंह जी के नाम पर किया गया था, जिन्होंने उदयपुर शहर की स्थापना की थी।

उदियापोल से पुराने शहर की पूर्वी सीमा, उत्तर दिशा के देहलीगेट तक जाती थी जिसके मध्य सूरजपोल स्थित है। उदयपुर के महाराणाओं ने दिल्ली सिंहासन की शक्ति को कभी स्वीकार नहीं किया, अतः वे देहली गेट का उपयोग करने से परहेज करते थे और केवल मृत्यु में ही उनके शरीर को इसके माध्यम से गुजारा जाता था। देहली गेट के बाद शहरकोट पश्चिम की ओर हाथीपोल की ओर मुड़ गई। इन दोनों मुख्य द्वारों के मध्य एक छोटा सा द्वार था जिसे दण्डपोल के नाम से जाना जाता था। उदयपुर शहर से निष्कासन की सजा पाने वालों को इसके माध्यम से जाने के लिए मजबूर किया जाता था। हाथीपोल से स्वरूपसागर झील तक शहरकोट बनाई गई। स्वरूपसागर झील एक अतिरिक्त सुरक्षा पंक्ति के रूप में कार्य करती थी। शहरकोट पिछोला झील तंत्र की रंगसागर के अंतिम छोर चांदपोल एवं अमरकुण्ड के बाद सत्तापोल तक विस्तारित की गई।

चाँदपोल से चाँदपोल पुलिया एक छोटे से भू–भाग की ओर जाती है जो पुराने शहर का विस्तार था। यहाँ यह झील जीभ के आकार की होकर तीन तरफ से सीमाबद्ध हो जाती है। शहरकोट इसके उत्तरी किनारे पर निर्मित की गई एवं अम्बापोल तक जाकर बाधित हुई। यहां से एक पुलिया अम्बामाता मन्दिर की ओर जाती है। इस क्षेत्र के पश्चिमी किनारे पर कोई प्रभावी जल अवरोध नहीं होने के कारण उस संकड़े हिस्से के साथ प्राचीर का निर्माण किया गया। यहीं पर ब्रह्मपोल का निर्माण किया गया।

इन 12 द्वारों में से किशनपोल, सूरजपोल, दिल्ली–दरवाजा तथा हाथीपोल सिंह द्वार अर्थात् अधिक सुदृढ़, दो द्वार वाले प्रवेश द्वार थे। यदि शत्रु द्वारा मुख्य द्वार तोड़कर खोल दिया जाता था, तो द्वार के समकोण पर दूसरा द्वार होता था ताकि हाथियों अथवा लट्ठों के द्वारा तोड़ने की योजना सफल न हो सकें। इन चारों द्वारों की प्रतोलियाँ (पोरियाँ) पूर्व दिशोन्मुखी थी। सूरजपोल तथा दिल्ली दरवाजा के द्वितीय द्वार नष्ट हो चुके हैं। हाथीपोल की दीवार के भी कुछ हिस्से समाप्त हो चुके हैं और केवल किशनपोल अपनी वास्तविक स्थिति में शेष है। पश्चिम की ओर ब्रह्मपोल में दोहरे दरवाजे की आवश्यकता ही नहीं थी, क्योंकि वह अरावली की पहाडियों द्वारा पहले से सुरक्षित था और उस ओर से शत्रु के आने की कोई सम्भावना भी नहीं थी। उदयपुर की शहरकोट के बारह द्वारों की यह व्यवस्था कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं मण्डन के राजवल्लभ में दिए गए द्वार–व्यवस्था सम्बन्धी निर्देशों की अक्षरशः अनुपालना में की गई थी।

नगर की शहरकोट में स्थान–स्थान पर कई अट्टालिकाएँ (बुर्जे) बनाई गयी थीं, जिनमें जलबुर्ज, खाँजीपीर बुर्ज, पुरोहित बुर्ज इत्यादि प्रमुख बुर्जों पर बड़ी–बड़ी तोपें रहती थीं। इसी प्राचीर की परिधि में आने वाली नगर की दक्षिण दिशा में स्थित 'माछला मगरा' नाम से पहचानी जाने वाली एक पहाड़ी की चोटी पर एकलिंगगढ़ नामक एक सैनिक लघु दुर्ग या किला महाराणा उदयसिंह द्वारा निर्मित एवं महाराणा करणसिंह द्वारा सुदृढ़ किया गया था जो मुख्यतः तोपें, बारूद इत्यादि, बड़े सैनिक साज–सामान के आगार के रूप में उपयोग में आता था। इन विशिष्ट तोपों में दूर तक मार करने वाली एवं मराठों के आक्रमणों के समय प्रयुक्त की जाने वाली वज्रबाण, शत्रुभंजन आदि प्रमुख थी। इस किले में तोपची–सैनिकों के आवास की व्यवस्था तथा पहाड़ी की चोटी पर पानी की सुविधा जुटाई गयी थी। इस लघु किले के खण्डहर अब भी माछला मगरा पर दृष्टव्य हैं।

पिछोला से सटी हुई झामरपोल

झामरपोल–रामपोल से एकलिंगगढ़ किले तक शहरकोट

रामपोल

माछला मगरा शहरकोट, एकलिंगगढ़ किला एवं वॉच टावर

एकलिंगगढ़ किला

वॉच टावर

शहरकोट के साथ खाई : किशनपोल से लेकर हाथीपोल तक एक गहरी खाई निर्मित थी, जो झीलों के रिसाव से भरी जाती थी। निस्संदेह यह नगर प्राचीर की ओर बढ़ने वाले आक्रांताओं के लिए प्रभावशाली अवरोधक का कार्य करती थी। उदयपुर नगर की नगर–प्राचीर के चारों ओर खाई का बनाया जाना नगर को स्थापत्य–कला के मध्यकालीन मानदण्डों के अनुरूप निर्मित किये जाने का द्योतक है। स्थापत्य–कला के ग्रन्थों के निर्देशानुसार उदयपुर की नगर–प्राचीर के आगे सम्पूर्ण नगर को घेरती हुई यह खाई जो लगभग 15 से 20 मीटर तक चौड़ी एवं 5 मीटर गहरी थी, पहले पानी से भरी रहती थी तथा नगर का गंदा पानी भी इसी खाई में आकर गिरता था। इस खाई से एक बड़ी चौड़ी गटर निकालकर उदयपुर के स्थापना काल में बनवाये गये उदयसागर तालाब से मिलाई गयी थी। उस गटर के माध्यम से खाई में एकत्रित होने वाला अतिरिक्त जल आगे बढ़कर उदयसागर में चला जाता था। विकास और प्रगति के साथ उस खाई को भी नगर–प्राचीर के तोड़े जाने के साथ–साथ पाट दिया गया, जिनके परिणामस्वरूप उदयपुर की पूर्व सुनियोजित रीति से प्रबन्धित जल–निकास व्यवस्था समाप्त हो चुकी है।

शहरकोट का पतन : सूरजपोल, देहलीगेट से दंडपोल होते हुए हाथीपोल तक की शहरकोट के साथ यह खाई भी 1950 ई.सं. के पश्चात् सूरजपोल, बापू बाजार और अश्विनी बाजार को विकसित करने के लिए तोड़ दी गयी थी। मेवाड़ की मध्यकालीन स्थापत्य–कला की इस अनुपम धरोहर को तुड़वाने का कार्य स्थापत्य–कला के महत्त्व को नहीं जानने के कारण समझा जा सकता है, किन्तु जिस किसी भी कारण से हुआ, यह कार्य स्थापत्य–स्मारकों के संरक्षण के विपरीत किया गया एक जघन्य अपराध है। यह शायद हमारे राजनेताओं, शहर नियोजकों, प्रशासनिक अधिकारियों व इतिहासविज्ञों के साथ–साथ उदयपुर के जनमानस की एक ऐतिहासिक भूल थी। हमने प्राचीन विरासत बहुत आसानी एवं अल्प लाभ के लिए हमेशा के लिए खो दी।

जहाँ तक शहरकोट के वर्तमान स्वरूप का सवाल है, झामरपोल से रामपोल–एकलिंगगढ़ किला–किशनपोल–रेलवे स्टेशन–उदियापोल एवं सूरजपोल की कुछ दूरी तक तथा स्वरूपसागर होते हुए रंगसागर–चाँदपोल एवं कुम्हारिया तालाब से ब्रह्मपोल तालाब तक अपने पुरातन स्वरूप में अभी भी विद्यमान है। यदि वर्तमान में यह संपूर्ण शहरकोट विद्यमान होती, तो उसे संरक्षित करने के साथ सौन्दर्यीकरण कर पर्यटकों के आकर्षण का एक महत्त्वपूर्ण वॉक–वे केन्द्र बनाया जा सकता था।

उदयपुर रेलवे स्टेशन के सामने स्थित शहरकोट – इसे संरक्षित रखना हमारा प्रथम दायित्व है।

स्वरूपसागर के दक्षिणी छोर पर स्थित शहरकोट

रंगसागर के पूर्वी छोर पर स्थित शहरकोट

कुम्हारिया तालाब के दक्षिणी छोर पर स्थित शहरकोट

शहरकोट व द्वार : पूर्व एवं वर्तमान स्थिति एवं रखरखाव : उदयपुर में कभी शहर की सुरक्षा हेतु शहरकोट एवं उसमें द्वार हुआ करते थे। इन द्वारों को बन्द करने के बाद शहर में परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था। इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के कारण ही शहर हमेशा सुरक्षित रहा। शहर की रक्षक रही इन इमारतों को आज खुद सुरक्षा की दरकरार है।

शहर की बची हुई शहरकोट एवं उसमें स्थित 11 द्वारों में से से कुछ जीर्ण–शीर्ण अवस्था में थे। नगर निगम, उदयपुर अनेक द्वारों का जीर्णोद्धार समय–समय पर कराता रहा है। वर्तमान में कुछ द्वारों पर पुलिस चौकियाँ संचालित हैं, तो कुछ से हटा दी गई है। हाथीपोल, देहलीगेट, सूरजपोल, उदियापोल व किशनपोल पर वर्तमान में भी पुलिस चौकियाँ स्थित हैं। इनका रखरखाव उच्च स्तरीय एवं दर्शनीय नहीं है एवं जहाँ पुलिस चौकियाँ हैं, वे द्वार पुलिस के जवानों, वाहनों से घिरे रहते हैं। जहाँ पुलिस चौकियाँ नहीं हैं, उनका समाजकंटक एवं असामाजिक तत्वों द्वारा व्यक्तिगत उपयोग किया जाता हैं। ब्रह्मपोल, चाँदपोल, अम्बापोल एवं सत्तापोल इसके उपयुक्त उदाहरण हैं। लोगों का मानना है कि इस पर पुलिस चौकियाँ स्थित होने से विरासतें भी महफूज रहती थीं और क्षेत्रवासी भी स्वयं को अधिक सुरक्षित महसूस करते थे। अब कई पोल असुरक्षित हो गई हैं, तो कई स्थानों पर शहरकोट पर भी अतिक्रमण हो रहा है एवं उसमें से निकलने वाले पेड़ एवं गन्दगीयुक्त पानी विरासत को नुकसान पहुँचाते नजर आ रहे हैं। इसी के तहत नगर निगम द्वारा स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत शेष रही शहरकोट एवं सभी द्वारों का विरासत में मिले स्वरूप के अनुसार पूर्ण नियोजन एवं उच्च गुणवत्ता के साथ जीर्णोद्धार किया गया। इन्हें मूल स्वरूप में लाकर रात्रिकाल में रोशनी से सुसज्जित भी किये गये हैं। इनके रखरखाव पर नियमित ध्यान रहे।

झामरपोल, रामपोल एवं किशनपोल : उदयपुर शहर के सुरक्षा कवच एवं उस पर स्थित एकलिंगगढ़ किले को सुरक्षित रखने, समय पर सुरक्षाकर्मियों को राशन सामग्री, गोला–बारूद, हथियार व सूचना पहुंचाने तथा सुरक्षाकर्मियों की समय पर शिफ्टिंग के लिए रामपोल एवं किशेनपोल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

झामरपोल : यह पोल पिछोला झील के किनारे से लगी शहरकोट पर निर्मित है। यहां पर 24 घंटे सुरक्षाकर्मी उपस्थित रहते थे। यहाँ से संन्यासियों की कुटियाँ, कालकामाता व सीतामाता मन्दिर, खासओदी, शिकारगाह (ओदियाँ) एवं उनके साथ घने जंगल तक जाने का यह मुख्य प्रवेश द्वार था। इसी मार्ग से गोवर्द्धन विलास में आवासित राजकीय दुधारू पशु चरने हेतु दूध तलाई तक आते थे।

रामपोल : यह पोल मेवाड़ रियासत काल की संपूर्ण सुरक्षा चौकी थी। यहां पर पर्याप्त संख्या में सुरक्षाकर्मियों के आवास स्थल के साथ एकलिंगगढ़ किले तक पहुंचने का सुगम सीढ़ीदार मार्ग शहरकोट के साथ बना हुआ था। वर्तमान में इस पोल के दोनों ओर वन विभाग के अन्तर्गत सघन वन क्षेत्र सुंरक्षित है। इसे पर्यटकों एवं शहरवासियों के लिए जंगल सफारी के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस पोल पर सुरक्षा की दृष्टि से वॉच टावर बने हुए हैं। यह स्थल पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही सुन्दर एवं मनोहारी है।

किशनपोल : यह पोल शहर के दक्षिण एवं माछला मगरा के उत्तरी किनारे पर विशाल दो मुखी सिंह द्वार के साथ निर्मित है। यह पोल भी मेवाड़ रियासतकाल की अति महत्वपूर्ण सुरक्षा चौकी थी। यहाँ रसद, गोला–बारूद, तोप का भण्डारण पर्याप्त सुरक्षाकर्मियों के साथ एकलिंगगढ़ किले का संपूर्ण प्रबन्धन भी यहीं से किया जाता था। वर्तमान में यहीं एकमात्र पोल है जो अभी तक अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है।

झामरपोल, रामपोल, एकलिंगगढ़, किशनपोल का एक दिवसीय जंगल सफारी इको ट्रिप : घने वन क्षेत्र की इन तीन पोल झामरपोल, रामपोल, किशनपोल एवं ऐतिहासिक एकलिंगगढ़ विरासत को सम्मिलित करते हुए वन विभाग, पर्यटन विभाग के सहयोग से उदयपुर आने वाले पर्यटक एवं शहरवासियों के लिए "एडवेन्चर ट्यूरिज्म" के अन्तर्गत "एक दिवसीय जंगल सफारी इको ट्रिप" सशुल्क आयोजित की जा सकती है। इससे स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत भारी लागत के साथ इनके जीर्णोद्धार का कार्य सार्थक सिद्ध हो सकेगा। यह इको ट्रिप झामरपोल से प्रारम्भ होकर शहरकोट के सहारे सीधी चढ़ाई चढ़कर रामपोल के दोनों ओर के वन क्षेत्र का भ्रमण करते हुए विभिन्न प्रजातियों के पौधें एवं जीवों को देखते हुए रामपोल से शहरकोट के साथ बनी सीढ़ियों से एकलिंगगढ़ पहुंच सकते हैं। इन सीढ़ियों पर चढ़ते समय पर्यटकगण पिछोला झील के अद्वितीय सौन्दर्य का अवलोकन कर सकेंगे। एकलिंगगढ़ एवं शहरकोट के साथ बने वॉच टावर से उदयपुर शहर एवं संपूर्ण पिछोला, गोवर्द्धन सागर, अरावली पर्वत श्रृंखला, शिकारगाह के दूर से अवलोकन के साथ इनके ऐतिहासिक पहलुओं का अध्ययन किया जा सकेगा। एकलिंगगढ़ पर दिन का भोजन एवं कुछ देर विश्राम करने के बाद इस ट्रिप के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ सकेंगे। करणीमाता मन्दिर के दर्शन एवं अवलोकन करते हुए माछला मगरा शीर्ष पर निर्मित शहरकोट के साथ अवस्थित छतरियों में विश्राम करते हुए माछला मगरा की तलहटी में स्थित किशनपोल तक पहुँच सकेंगे। किशनपोल पर बने दोनों द्वारों के मध्य स्थित चौक में संध्या–रात्रिकालीन केम्प फायर एवं रात्रि भोजन के साथ यह इको ट्रिप सम्पन्न हो सकेगा। इस संपूर्ण तंत्र के नियमित रखरखाव के साथ किशनपोल चौक में दुर्लभ एवं सुन्दर पौधों युक्त गमलें वन विभाग द्वारा सुसज्जित किये जावे। इस पोल को उदयपुर के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों में सम्मिलित किया जावे। वर्तमान में पुलिस चौकी द्वारा इस चौक का उपयोग लावारिस एवं जप्त की गई मोटर साइकिलों के भण्डारण हेतु किया जा रहा है जो कि कतई उपयुक्त नहीं हैं, इस हेतु अन्य स्थान निर्धारित किया जाना चाहिये।

किशनपोल पूर्ण विकसित स्वरूप एवं एकलिंगगढ़ से उतरती हुई शहरकोट

किशनपोल : द्वि-मुखी सिंह द्वार के मध्य नवनिर्मित भव्य चौक

उदियापोल : उदयपुर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह जी की स्मृति में शहरकोट पर दक्षिण से उत्तर की ओर निर्मित झामरपोल, रामपोल एवं किशनपोल के बाद यह चौथा मुख्य द्वार है। यहां से राजमहल में पहुंचने का सबसे छोटा रास्ता था। वर्तमान में यह शहर के केन्द्रीय बस स्टेण्ड के सामने स्थित है। इस द्वार के पूर्वी परिसर पर स्थित सुन्दर पार्क में महाराणा उदयसिंह जी की आदमकद मूर्ति पेडस्टल पर सुशोभित होने के साथ इसमें पुलिस चौकी भी संचालित है। इस द्वार की महत्ता के अनुसार इसका समुचित विकास एवं रखरखाव आवश्यक है।

पूर्वी पुरातन स्वरूप
उदियापोल

पश्चिमी पुरातन स्वरूप

नव विकसित पूर्ण स्वरूप

पूर्ण प्रकाशमय सुन्दर स्वरूप

उदियापोल पर महाराणा उदयसिंह की प्रतिमा के साथ विकसित उद्यान

सूरजपोल : यह पूर्व दिशा की ओर से आने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित दो मुखी सिंह द्वार था। वर्तमान में मुख्य द्वार ही सुरक्षित है। यह बापू बाजार एवं सूरजपोल बाजार के दक्षिणी पूर्वी किनारे पर स्थित है। इस द्वार के परिसर में भी पुलिस चौकी एवं एक सार्वजनिक प्याऊ विद्यमान है। परिसर के पूर्वी छोर पर पुलिस वाहन एवं प्याऊ इसकी सुन्दरता में वृद्धि नहीं करते हैं। इस द्वार के सामने हाल ही में जनसंघ (वर्तमान भारतीय जनता पार्टी) के संस्थापक श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी की स्मृति में बने पार्क का पुनर्निर्माण कर इसे अति सुन्दर स्वरूप दिया गया है। द्वार के साथ लगे परिसर का जीर्णोद्धार भी अति आवश्यक है।

सूरजपोल (1909 ई.) – पूर्वी स्वरूप

पूर्व पूर्वी स्वरूप

पूर्व पश्चिमी स्वरूप

पूर्ण विरासतकालीन विकसित स्वरूप

पूर्ण प्रकाशमय सुन्दर स्वरूप

देहली गेट : यह शहर के उत्तर दिशा की ओर विरासत काल में सिंह द्वार के रूप में एक प्रवेश द्वार था। वर्तमान में यह जिला कलक्ट्रेट कार्यालय, न्यायालय एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय से शहर में प्रवेश के मुख्य मार्ग पर स्थित है। इस द्वार के सामने दो सुन्दर मन्दिर, शांति–आनन्दी शहीद स्मारक एवं पीछे की ओर पुलिस चौकी विद्यमान हैं। इसके दक्षिणी भाग पर पुलिस विभाग के वाहन, एम्बुलेन्स, अग्निशमन वाहन आदि प्रायः खड़े रहते हैं। इसके पश्चिमी छोर पर बहु–मंजिला वाहन पार्किंग स्थल हाल ही में निर्मित किया गया है। द्वार के सामने की ओर लम्बाई में अशोभनीय फव्वारा स्थल बना हुआ है। यह शहर का व्यस्ततम् विशाल चौराहा है। यहाँ पर छः मार्ग कलक्ट्रेट, शास्त्री सर्कल, बापू बाजार, धानमण्डी, शक्ति नगर व नेहरू बाजार परस्पर मिलते हैं, अतः इस चौराहे एवं देहलीगेट परिसर को बहुत सुन्दर स्वरूप देने की आवश्यकता है।

देहली गेट – पूर्व स्वरूप

वर्तमान में शांति–आनन्दी शहीद स्मारक स्थल देहली गेट परिसर में स्थित मन्दिरों की अतिरिक्त संरचना से दब सा गया है। मूल मन्दिरों की सुन्दरता में वृद्धि के साथ उदयपुर का ऐतिहासिक शहीद स्मारक भी सुगमता से दृष्टिगत हो, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिये। सूरजपोल चौराहे की तर्ज पर देहलीगेट चौराहा एवं इसके फव्वारा स्थल को अति विशिष्ट स्वरूप देते हुए इसके चारों ओर स्थित प्रतिष्ठान मालिकों द्वारा किये जा रहे अतिक्रमण से मुक्ति के साथ फल–सब्जी के थैलों से भी यह चौराया मुक्त होना चाहिए।

देहली गेट : नव विकसित पूर्ण स्वरूप

शहर के व्यस्ततम् देहलीगेट चौराहे का वर्तमान स्वरूप

देहलीगेट चौराहे का वर्तमान स्वरूप : पार्किंग स्थल के साथ यह छः मुख्य मार्गों का संगम स्थल भी है।

रात्रिकालीन प्रकाशमय सुन्दर स्वरूप

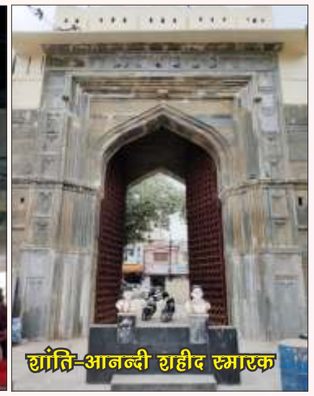
शांति-आनन्दी शहीद स्मारक

शांति-आनन्दी शहीद स्मारक : देश की आजादी के महज आठ माह बाद उदयपुर में हुए एक आन्दोलन में दो छात्र शांति व आनन्दी पुलिस गोलीकांड के शिकार हुए। इस आन्दोलन में उनकी मृत्यु को एक शहीद जैसी छवि मानकर शहर के बीचों–बीच स्थित देहलीगेट पर उदयपुर के इतिहास में शहीदों की मिसाल के रूप में उनकी प्रतिमाएँ स्थापित की गई। प्रतिवर्ष 5 अप्रेल को शांति–आनन्दी की याद में शहीद दिवस मनाया जाता है। प्रजामंडल के आह्वान पर 5 अप्रेल, 1948 को उदयपुर शहर में हड़ताल हो गई। हड़ताल तुड़वाने के प्रयास में क्षत्रिय परिषद् और प्रजामंडल बड़ा बाजार में आमने–सामने हो गए। घंटाघर पुलिस कोतवाली पर लोगों ने चप्पल–पत्थर फेंके, जो कोतवाली में खड़े सिटी मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी को लगे। इस पर पुलिस को फायरिंग का आदेश दे दिया गया। फायरिंग में मामा–बुआ के भाई शांतिलाल (जन्म 12 अगस्त, 1930) एवं आनन्दीलाल (जन्म 1 अक्टूबर, 1926) मारे गये। इस गोलीकांड में परशराम त्रिवेदी, नन्दकुमार त्रिवेदी, कालूलाल नलवाया, सोहनलाल कोठारी, रोशनलाल चोरड़िया, गणेशलाल मुरावत, लक्ष्मीलाल चित्तौड़ा, गुलाब सिंह शक्तावत और प्रेमशंकर को पैरों में गोलियाँ लगी तथा गुलाब सिंह शक्तावत को पैर भी कटवाना पड़ा।

हाथीपोल : शहर के उत्तर में स्थित हाथीपोल शहर का अत्यधिक सुदृढ़ द्वि–द्वार (सिंह द्वार) वाला मुख्य प्रवेश द्वार था। पूर्व दिशा की ओर स्थित प्रथम द्वार के समकोण पर दूसरा द्वार होता था एवं इनके सामने चौक के साथ मजबूत शहरकोट भी निर्मित थी। वर्तमान दोनों द्वार विरासत में मिली स्थिति में हैं लेकिन उनके सामने वाला चौक एवं शहरकोट हटा कर लोहे की रैलिंग लगा दी गई हैं। दोनों दरवाजे एवं लोहे की रैलिंग के मध्य फव्वारें का निर्माण कर सुन्दर स्वरूप देने का प्रयास किया गया है। प्रथम द्वार के साथ चौक में दानवीर भामाशाह की आदमकद मूर्ति पेडस्टल पर स्थापित है। इसके अतिरिक्त इस चौक में एक मन्दिर, अजमेर विद्युत वितरण निगम लि. का ट्रांसफार्मर, एक हेण्डीक्राफ्ट शोरूम, पुलिस चौकी एवं पत्थर के चौक के साथ छोटा सा उद्यान भी विकसित है लेकिन इसमें पत्थर की जड़ाई करने से इसका मूल उद्यानी स्वरूप नहीं रहा। वर्तमान में यह संपूर्ण स्थान दर्शनीय तो नहीं है। हाथीपोल के प्रथम तल पर एक छोटा महल भी बना हुआ है जो शहर की सुरक्षा के जिम्मेदार जागीरदार (पारसोली) का निवास स्थान था जो वर्तमान में भी आबाद है। हाथीपोल से स्वरूपसागर पाल तक निर्मित शहरकोट के पतन के बाद यहाँ विकसित बाजार (हेण्डीक्राफ्ट मार्केट) के नियोजन के समय पोल परिसर में स्थित पुलिस चौकी, हैण्डीक्राफ्ट शोरूम एवं प्रथम तल पर स्थित महल के लिए अन्य स्थान आरक्षित कर इन्हें स्थानान्तरित कर देने से हाथीपोल परिसर एवं भामाशाह मूर्ति स्थल को अति दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता था।

हाथीपोल : पूर्व स्वरूप

हाथीपोल : पूर्व दक्षिणी स्वरूप

वर्तमान विकसित द्वि-द्वार युक्त हाथीपोल

भामाशाह की प्रतिमा के साथ विकसित परिसर

हाथीपोल के साथ चौराहे का वृहद् स्वरूप

चाँदपोल : चाँदपोल पुलिया के पूर्वी छोर पर चाँदपोल स्थित है। यह क्षेत्र पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा है। इस पोल का जीर्णोद्धार कराया गया, लेकिन शहरकोट के हिस्से पर ध्यान नहीं दिया गया है। शहरकोट के हिस्से पर कई जगह पेड़ उग गये हैं, जो सौन्दर्य को नष्ट करने के साथ ही शहरकोट को भी नुकसान पहुँचा रहे हैं। कई जगह दीवारों पर दरारें आ चुकी हैं। पोल को सफेद रंग से चमकाया भी गया था, किन्तु यहाँ की दीवारों पर लगे पोस्टर इसकी खूबसूरती खराब कर रहे हैं। शहर की ऐतिहासिक विरासत पर पोस्टर लगाना कानूनी रूप से अवैध होना चाहिये एवं उसे तोड़ने वालों पर निश्चित ही दण्डनीय प्रावधान होने चाहिये। झील हितैषी नागरिक सदैव शहरकोट वाले हिस्से के प्रति चिंता जताते रहे हैं। इस पोल में दो कमरे हैं जिन पर ताले लगे रहते हैं। पाल की ऊपरी छत को व्यवस्थित रूप देकर पर्यटकों के लिए फोटोग्राफी हेतु विकसित करना चाहिये। इन कमरों पर छोटी पर्यटक सुरक्षा पुलिस चौकी की स्थापना कर इस क्षेत्र के सुरक्षित होने के साथ चाँदपोल की विरासत को भी बचाया जा सकेगा।

चाँदपोल - पूर्व स्वरूप

वर्तमान पश्चिमी स्वरूप

वर्तमान स्वरूप : पश्चिमी भाग

भव्य पोल का पूर्वी छोर

प्रकाशमय पूर्वी छोर

प्रकाशमय पश्चिमी छोर

सत्तापोल : यह पोल चांदपोल पुलिया के पास एवं अमरकुण्ड के दक्षिणी छोर पर स्थित है। इसे सीतापोल के नाम से भी जाना जाता है। इस पोल से दायजीराज की पुलिया बनाकर रोवणियाघाट के नागानगरी क्षेत्र को जोड़ा गया है। यह पूर्व में स्थानीय लोगों हेतु शुद्ध पेयजल प्राप्ति स्थल था।

विरासत स्वरूप

वर्तमान स्वरूप : पूर्वी छोर

वर्तमान स्वरूप : पश्चिमी छोर

दायजीराज पुलिया

अम्बापोल : अम्बापोल पुलिया के दक्षिणी छोर पर अम्बापोल स्थित है। पोल के ऊपर वर्तमान में दो–तीन कमरे हैं। इस पोल की मरम्मत कर रंग–रोगन द्वारा नया रूप दिया गया है। इस पर भी पर्यटक सुरक्षा पुलिस चौकी स्थापित कर ऊपरी छत को पर्यटकों द्वारा फोटोग्राफी हेतु विकसित किया जाना चाहिये। इसकी छत से रंग सागर एवं कुम्हारिया तालाब के भव्य नजारे देखे जा सकते हैं। यहाँ पर पर्यटकों के लिए सुविधाकक्ष, विश्राम स्थल को भी उच्च स्तरीय बनाया जाना चाहिये।

अम्बापोल – पूर्व स्वरूप

विकसित स्वरूप : उत्तरी छोर

विकसित स्वरूप : दक्षिणी छोर

ब्रह्मपोल : ब्रह्मपोल पुलिया वर्तमान में अत्यन्त जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। इस पुलिया के दक्षिणी छोर पर ब्रह्मपोल स्थित है, यह विरासत भी पूर्णतः जर्जर हालत में थी, जिसकी कुछ समय पूर्व ही निगम की ओर से मरम्मत करवाई गई थी एवं स्मार्टसिटी परियोजना के अन्तर्गत इसे पूर्ण विरासत स्वरूप देकर जीर्णोद्धार किया गया। पोल के ऊपर जाने के लिए दोनों तरफ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। प्रथम तल पर करीब तीन कमरे हैं, जिन पर ताले लगे रहते हैं। पहले पुलिस चौकी संचालित होती थी। इस पोल को अतिक्रमण मुक्त कर एवं छत को सुन्दर रूप देकर पर्यटकों हेतु उपयुक्त बनाया जाये। यहाँ पर्यटक आकर पिछोला एवं कुम्हारिया तालाब की सुन्दरता एवं इस विरासत को अपने कैमरे में कैद कर सके। यहाँ पर्यटक सुरक्षा पुलिस चौकी स्थापित करने से विरासत भी सुरक्षित रहेगी और पर्यटक के साथ क्षेत्र भी सुरक्षित रहेगा। पर्यटकों के लिए पेयजल उपलब्धता के साथ प्रथम दर्जे

प्रकाशमय दक्षिणी छोर

प्रकाशमय उत्तरी छोर

ब्रह्मपोल : पूर्व स्वरूप

ब्रह्मपोल : वर्तमान स्वरूप

ब्रह्मपोल : वर्तमान भीतरी स्वरूप

प्रकाशमय बाहरी स्वरूप

प्रकाशमय भीतरी स्वरूप

की सुविधायुक्त सुविधा–कक्ष एवं विश्राम स्थल का निर्माण भी किया जाना चाहिये। पिछोला का ब्रह्मपोल क्षेत्र जलकुम्भी, जलीय खरपतवार एवं गन्दगी से अटा रहता है। देशी एवं विशेषकर विदेशी पर्यटक तो इस खूबसूरत झील के वीभत्स रूप को भी अपने कैमरे में बन्द करना नहीं भूलते। यहाँ पर चारों ओर से गन्दगी एवं जलकुंभी का जमाव इस तरह से होता है कि शायद यहाँ से जलकुम्भी को कभी निकाला ही नहीं गया हो। पुलिया के आसपास भराव और अपशिष्ट डालना तो एक नियमित प्रक्रिया है।

इस प्रकार ब्रह्मपोल, चाँदपोल, अम्बापोल एवं शहरकोट जैसी विरासतों के रख–रखाव पर नगर निगम को पूरा ध्यान देना चाहिये। इनकी नियमित सफाई, आवश्यक मरम्मत, इन पर लगे पेड़ एवं झाड़ियों को हटवाना, रंग–रोगन करना, रात्रि में जगमगाने हेतु पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था करना आदि आवश्यक कदम नियमित रूप से उठाये जाने चाहिये।

ब्रह्मपोल एवं अम्बापोल की पुलियाओं की विरासत एवं मेवाड़ की वास्तुकला को सुरक्षित रखने के लिए चाँदपोल पुलिया की तरह विकसित करना चाहिये। इससे मेवाड़ की वास्तुकला के संरक्षण के साथ इनके नीचे से आधुनिक छोटी एवं बड़ी विशेषकर मेवाड़ राजघराने में प्रचलित गणगौर नाव निकल सकें। इस निर्माण से पर्यटक एवं स्थानीय नागरिक पिछोला, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर, स्वरूप सागर झीलों की भव्यता, मेवाड़ की वास्तुकला, पुराने मकान, नई एवं पुरानी होटल्स को देख सकेंगे। इस प्रकार के विकास से ही उदयपुर को ''पूर्व का वेनिस'' कहना चरितार्थ हो सकेगा।

पिछोला झील एवं प्रदूषण : पिछोला झील के प्रदूषण के प्रमुख कारण निम्नानुसार हैं :–

- अपर्याप्त जल–मल निकास व्यवस्था के कारण गन्दे नाले एवं नालियों का दूषित पानी एवं ठोस अपशिष्ट आज भी पिछोला झील में प्रवाहित हो रहे हैं।
- प्रदूषित जल के समावेश के कारण इन झीलों का पानी पेयजल के रूप में एवं जलीय जीवों के लिए भी अनुकूल नहीं है। कतिपय क्षेत्र दूषित पानी की दुर्गन्ध से प्रभावित हैं एवं काई से ग्रसित हैं।
- झील में फैलती जलकुम्भी एवं अन्य जलीय घास की वृद्धि से जल के वाष्पीकरण दर में बढ़ोतरी के साथ जल स्तर में तीव्रता से कमी होती है।
- इस झील में प्रतिबन्ध के बावजूद आम नागरिकों द्वारा कपड़े धोये जाने में आजकल तेलयुक्त साबुन के स्थान पर केमिकल्स युक्त डिटरजेन्ट का उपयोग बहुत अधिक होता है, जो जलीय जीवों के लिए अत्यन्त हानिकारक है।
- जलीय जीवों की संख्या वर्ष दर वर्ष घटने से जल का प्राकृतिक शोधन नहीं हो पा रहा है।
- झील के किनारे पर स्थित अनेक होटल्स, रेस्टोरेन्ट्स आदि में जल शुद्धीकरण यंत्र नही लगे होने से इनका गन्दा पानी सीधे झील में प्रविष्ट हो रहा है।
- यह झील विशेषकर पिछोला तंत्र के कुम्हारिया तालाब, रंगसागर एवं स्वरूप सागर शहरी एवं होटल्स क्षेत्र से पूर्णतया घिरे होने के कारण अत्यन्त प्रदूषित हैं। गर्मी की ऋतु में इन झीलों में प्रदूषित जल समाहित होने से इनका जल स्तर मुख्य पिछोला झील से बढ़ जाता है जिससे जल का प्रवाह रंगसागर से मुख्य झील की ओर होने लगता है तथा संपूर्ण पिछोला झील एवं विशेषकर अमरकुण्ड एवं उसके आस–पास का जल अत्यन्त प्रदूषित हो जाता हैं।

पिछोला झील – प्रदूषण के विभिन्न भाग :

पिछोला झील को प्रदूषण स्तर के अनुसार निम्नांकित भागों में विभक्त किया जा सकता हैः–

(1) ब्रह्मपोल छोर – होटल लीला पैलेस के मध्य (2) रिंग रोड़ – होटल ट्राइडेन्ट के पिछवाड़े।
(3) सीसारमा नदी छोर (4) खास ओदी – दक्षिण पूर्वी भाग
(5) बड़ी पाल–दूधतलाई–लेक पैलेस–जगमन्दिर–जलदाय विभाग पम्पिंग स्टेशन
(6) चांदपोल–अमरकुण्ड, दायजीराज पुलिया।

पिछोला झील की गन्दगी स्तर के पैमाने – जलकुंभी, काई, जलीय घास, खरपतवार तथा गन्दगीयुक्त जल के स्तर से मूल्यांकन किया जावे तो सीसारमा नदी क्षेत्र, खास ओदी दक्षिणी पूर्वी भाग एवं बड़ी पाल–दूधतलाई–लेक पैलेस–जगमन्दिर–जलदाय विभाग पम्पिंग स्टेशन क्षेत्र कम प्रदूषित है, अगर हम तुलना करें, ब्रह्मपोल छोर – होटल लीला पैलेस के मध्य, रिंग रोड़ – होटल ट्राइडेन्ट के पिछवाड़े एवं चांदपोल–अमरकुण्ड, दायजीराज पुलिया से।

(1) ब्रह्मपोल छोर – होटल लीला पैलेस :

- भूमिगत सीवरेज लाइन डालने के बाद भी यह क्षेत्र अत्यन्त प्रदूषित है तथा पूर्णतया जलकुंभी से आच्छादित है।
- गाद भराव से इस क्षेत्र की गहराई लगातार कम होती जा रही है।
- निर्माणोपरान्त वेस्ट भराव नियमित रूप से डाला जा रहा है।
- शहरकोट छोर के घरों से गन्दा पानी नियमित रूप से गिरता रहता है।
- ब्रह्मपोल पुलिया पूर्व में जीर्ण–शीर्ण हो चुकी थी, इस पुलिया का स्तर एवं रखरखाव किसी गांव की पुलिया से भी बदतर था। हाल ही कुछ सुधार किया गया है, परन्तु भविष्य की आवश्यकता के अनुरूप नहीं।
- ब्रह्मपोल पुलिया के दोनों ओर पत्थर–सीमेण्ट लोहे से बनी हुई सीमा डोली पूर्णतया अशोभनीय थी।
- पूर्व में जलदाय विभाग की पाईप लाइन रोड़ पर ही बिछा दी गई, जो कि अव्यवस्थित एवं असुविधाजनक है।
- पुलिया पर सभी प्रकार के लावारिस पशु गाय, साँड़, गधे, कुत्ते आदि मुक्त विचरण करते हुए मिल जायेंगे।
- दरवाजे के बाहर कचरा पात्र रखे गये हैं किन्तु उनसे शायद नियमित कचरा निस्तारण नहीं होता।
- ब्रह्मपोल दरवाजे की छत पर अनाधिकृत रूप से गोबर के कंडे थेपे व सूखाये जाते हैं।

ब्रह्मपोल के दक्षिणी छोर पर पिछोला जलकुम्भी, जलीय घास, गाद, भराव से अतिक्रमित

शहरकोट से रिसता प्रदूषित जल

उक्त सभी तथ्यों पर गोर किया जाये तो यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से कतई उपयुक्त नहीं है एवं पर्यटक इसे देखकर विरासत में मिली इस सुन्दर पिछोला झील की अपने साथ क्या तस्वीर ले जायेंगे!

ब्रह्मपोल दरवाजा – टूटी रैलिंग, आवारा पशु एवं दरवाजे की छत पर गोबर के कण्डे

पिछोला झील : ब्रह्मपोल के पास विभिन्न क्षेत्र प्रदूषणग्रस्त

ब्रह्मपोल की जीर्ण-शीर्ण पुलिया

(2) रिंग रोड़–होटल ट्राइडेन्ट का पिछवाड़ा क्षेत्र :

- होटल ट्राइडेन्ट के पिछवाड़े पर एक बड़ा नाला पिछोला में गिरता है जिसमें हरिदासजी की मगरी, एकलव्य कॉलोनी, आशाधाम आश्रम, राताखेत आदि क्षेत्रों का गन्दगी युक्त सीवरेज आता है, जो सीधे पिछोला झील में समाहित हो रहा था। सीवरेज पाइपलाइन डालने का प्रयास किया गया है लेकिन मेनहॉल से सीवरेज पानी निकलता हुआ देखा जा सकता है।

पिछोला रिंग रोड से : सीवरेज जल प्लावित एवं अन्य खरपतवार युक्त

- इस सीवरेज जल से पिछोला का उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र पूर्णतया प्रदूषित हो रहा था।
- इस प्रदूषित पानी में अवांछित खरपतवार, जलकुम्भी, जलीय घास, कमल आदि से अटा पड़ा है। इस क्षेत्र पर ध्यान नहीं दिया गया तो यह द्वितीय कुम्हारिया तालाब बन जायेगा।
- होटल ट्राइडेन्ट से लगी हुई एक मगरी है, जो अस्थायी आवास एवं अन्य कार्यों के लिए अतिक्रमित है।
- रिंग रोड़ उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र गन्दगी युक्त होने के साथ ही रोड़ किनारे की अधिकतर बंसियाँ टूटी हुई हैं एवं इनका निर्माण भी निम्न स्तर का है।
- रिंग रोड के प्रारम्भ में (पश्चिमी छोर पर) एक और पहाड़ी स्थित है जिस पर भी अतिक्रमण होने की पूरी संभावना है।

वर्तमान में निर्माणाधीन रिंग रोड़ के उपरोक्त नकारात्मक तथ्यों को देखते हुए मुख्य उद्देश्य चरितार्थ नहीं हो रहा है।

होटल ओबेराय के पीछे एवं रिंग रोड के मध्य स्थित सीवरेज एवं गन्दगीयुक्त जल में खरपतवार एवं कमल

(3) सीसारमा नदी का छोर :

- वर्तमान में सीसारमा नदी छोर क्षेत्र काफी प्रदूषणग्रस्त है।
- पिछोला झील से मिट्टी की खुदाई व्यवस्थित रूप से नहीं करने पर झील की सुन्दरता प्रभावित हो रही है।
- सीसारमा नदी रिंग रोड़ पर बनी पुलिया की ऊँचाई रोड की सतह के बराबर होने के कारण नदी के बहाव में रुकावट से सीसारमा क्षेत्र बाढ़ प्रभावित हो जाता है।
- नदी सदैव कचरे व काई से अटी रहती है।

पुलिया पर अवांछित पाईपलाइन

अनियोजित डिसेल्टिंग कार्य

सीसारमा नदी की दयनीय स्थिति

सीसारमा नदी की पुलिया एवं पश्चिमी भाग पूर्णतया प्रदूषित एवं काई युक्त जल

(4) खास ओदी दक्षिणी-पूर्वी भाग – रिंग रोड :

- रिंग रोड़ पर दोनों ओर निर्माणोपरान्त वेस्ट भराव डाला जा रहा है।
- इस क्षेत्र की झील सतह पर पिछोला के अन्य क्षेत्रों से हवा के साथ काफी गन्दगी जमा होकर तैरती रहती है।
- इस क्षेत्र में नियमित साफ–सफाई का अभाव है।

(5) बड़ी पाल-दूधतलाई-ताज लेक पैलेस-जगमन्दिर-जलदाय विभाग पम्पिंग स्टेशन-मुख्य होटल्स की जेटियाँ :

- यह क्षेत्र प्रायः साफ नजर आता है। इस क्षेत्र की जलकुंभी, जलीय घास एवं खरपतवार नियमित रूप से निकाली जाती हैं।
- इस क्षेत्र में पेट्रोल एवं डीजल चलित नावों का संचालन बहुत होता है जिससे जल प्रदूषित होता है।
- पिछोला की दूधतलाई छोर पर बनी दीवार पर जंगली पौधे विकसित होते हुए देखे जा सकते हैं।
- दूधतलाई पर पर्यटन नाव संचालन क्षेत्र पर नियमित सफाई के अभाव में प्लास्टिक एवं डिस्पोजल सामग्री, खाद्य पदार्थ पैकिंग वेस्ट, थैलियां आदि तैरते हुए आमतौर पर दिखायी देते हैं।

(6) चाँदपोल पुलिया– अमर कुण्ड एवं दायजीराज पुलिया क्षेत्र :

- इस क्षेत्र में भूमिगत सीवरेज लाइन डालने के उपरान्त भी जल अत्यधिक गन्दगीयुक्त एवं प्रदूषित है।
- संपूर्ण क्षेत्र प्रायः काई से अटा पड़ा रहता है तथा फूलमाला, हवन सामग्री, प्लास्टिक/डिस्पोजल सामग्री, खाद्य सामग्री की खाली थैलियां आदि प्रायः देखी जा सकती हैं।
- पिछोला से पेयजल उठाव के कारण जल स्तर कम होने पर रंगसागर से गन्दा पानी पिछोला में प्रवेश कर जाता है। इससे पिछोला झील का जल प्रदूषित होता है।
- इस क्षेत्र के घाटों पर नहाते एवं कपड़े धोते हुए लोग प्रायः देखे जा सकते हैं।
- इस क्षेत्र में अनेक होटल एवं रेस्टोरेन्ट्स स्थित हैं जिनसे गन्दगी होना स्वाभाविक है।

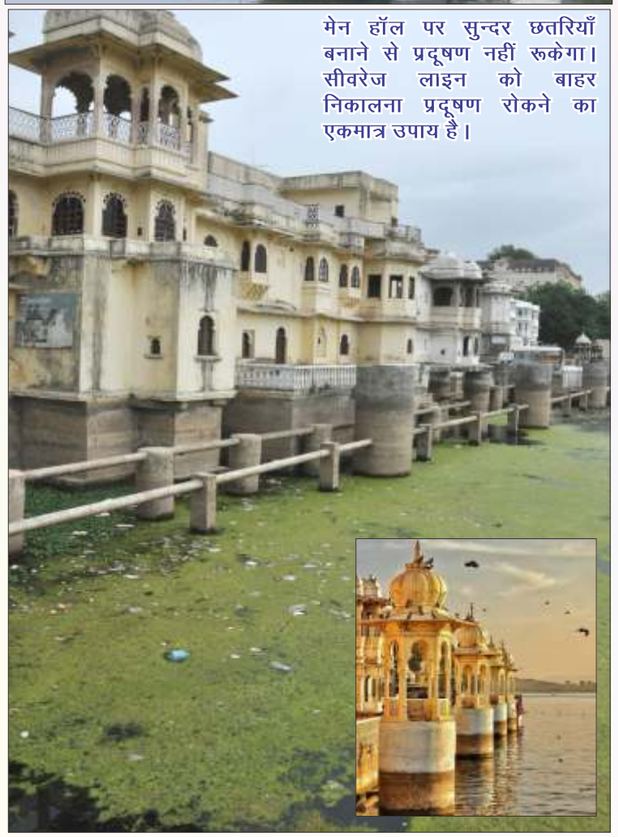

मेन हॉल पर सुन्दर छतरियाँ बनाने से प्रदूषण नहीं रूकेगा। सीवरेज लाइन को बाहर निकालना प्रदूषण रोकने का एकमात्र उपाय है।

रंगसागर एवं मुख्य पिछोला का समान जल स्तर

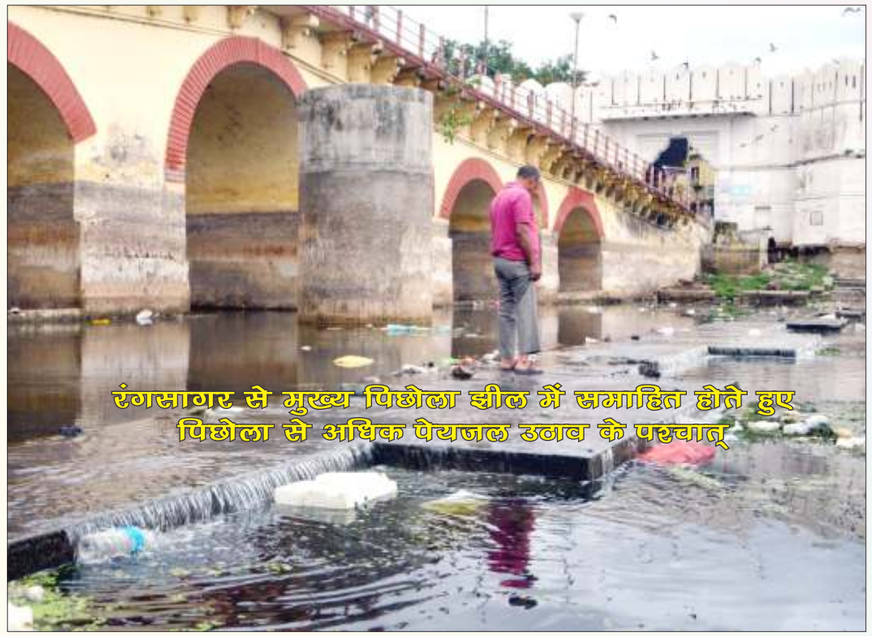

रंगसागर से मुख्य पिछोला झील में समाहित होते हुए पिछोला से अधिक पेयजल उठाव के पश्चात्

पिछोला : होटल्स, घाट, चाँदपोल पुलिया, दायजी सेतु के आस-पास अथाह काई एवं गन्दगी युक्त जल

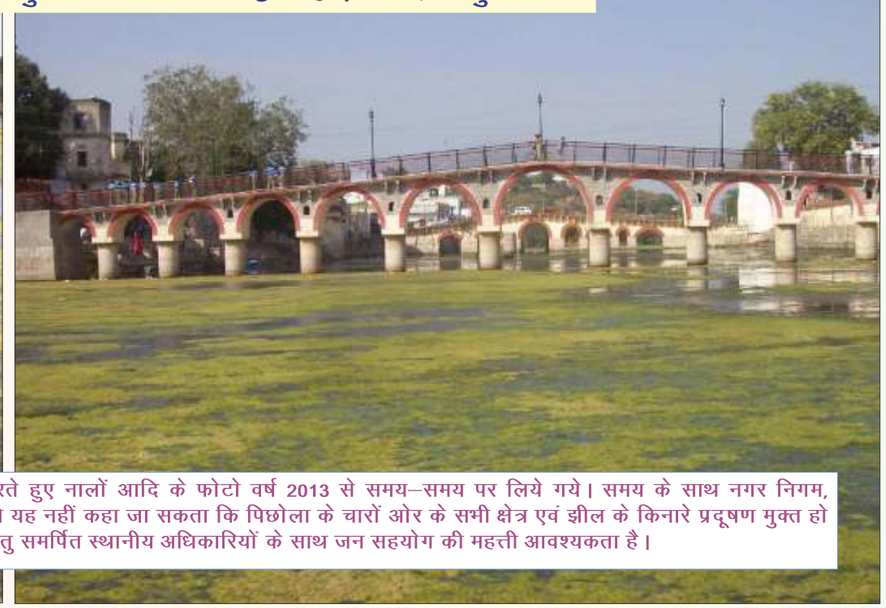

पिछोला झील की गन्दगी, काई, जलकुम्भी, जलीय खरपतवार, तैरता हुआ प्लास्टिक, झील में गिरते हुए नालों आदि के फोटो वर्ष 2013 से समय–समय पर लिये गये। समय के साथ नगर निगम, एनएलसीपी एवं अन्य परियोजनाओं के अन्तर्गत इन परिस्थितियों में बदलाव आये हैं। लेकिन अभी भी यह नहीं कहा जा सकता कि पिछोला के चारों ओर के सभी क्षेत्र एवं झील के किनारे प्रदूषण मुक्त हो गये हैं तथा गन्दे सीवरेज युक्त नाले झील में नहीं गिर रहे हैं। झील को पूर्णतया प्रदूषण मुक्त करने हेतु समर्पित स्थानीय अधिकारियों के साथ जन सहयोग की महत्ती आवश्यकता है।

पिछोला झील : गणगौर घाट, विदेशी पर्यटक एवं लावारिस पशु का करिश्मा